श्रीः

ज्योतिष्मती

त्रैमासिक

वर्ष ३
सं० २०१७

संख्या ४
श्रावण



वार्षिक मूल्य ५॥)

इस अङ्कका मूल्य १॥)

सञ्चालक और सम्पादक
श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी
ज्योतिषाचार्य

Raj

Raj ... 17

विषय-सूची

आवश्यक निवेदन

गतांकमें मैने सूचित किया था कि—"वैशाखमासमें मैं बाहर रहूंगा, अतः कोई सज्जन वैशाखमें मेरे पास जन्मपत्र वर्षफलादिका कार्य न भेजें।" किन्तु सारा ज्येष्ठमास भी मेरा यात्रामें ही व्यतीत हुआ और कार्यालयमें कामका ढेर लग गया। दूसरा सुयोग्य गणितज्ञ कार्यकर्ता भी इस समय उपस्थित नहीं है अतः अब आगे तीन मास तक कोई भी सज्जन मेरे पास जन्मपत्रादिका कार्य न भेजें। इन्हीं दिनों मुझे आगामी वर्षके पंचांगकार्यमें भी व्यस्त रहना पड़ेगा और पिछले कार्यको भी यथाक्रमपूर्ण करना है। एतदर्थ आशा है सहृदय स्नेहीजन कुछकाल पर्यन्त इस असुविधाके लिए क्षमा करेंगे। पंचांग और 'ज्योतिष्मती' सम्बन्धी सब कार्य यथावत समयपर बराबर सम्पन्न होते रहेंगे।

निवेदकः—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

तृतीय वर्षकी पूर्ति पर

'ज्योतिष्मती' को गत तीन वर्षोंमें ही जो आशातीत सफलता मिली वह हिन्दी पत्र-पत्रिकाओंके इतिहासमें गौरव की वस्तु है। इस सफलताका श्रेय विद्वान् लेखकों, संरक्षक सहायकों और ग्राहकोंको ही है। सहृदय स्नेही सज्जनों और सम्मान्य विद्वानोंने लेख एवं प्रशंसा-पत्र भेजकर तथा सहायक ग्राहक बनाकर हमें जो सहयोग दिया उसके लिए हम उन सबके आभारी हैं। आशा है भविष्यमें भी इसी प्रकार उनका उदार सहयोग हमें प्राप्त होता रहेगा।

वार्षिक मूल्य ५॥) रु० शीघ्र भिजवाइये

'ज्योतिष्मती' के वर्तमान तृतीयवर्षका यह चौथा (अंतिम ग्रीष्माङ्क) आपके हाथोंमें है। आपका वार्षिक मूल्य इस अङ्कके साथ ही समाप्त हो जाता है। अतः आप आगामी चौथे वर्षका मूल्य ५॥) पांच रुपये पचास नये पैसे शीघ्रसे शीघ्र कार्यालयमें मनीआर्डर द्वारा भेजकर वर्षभरके लिए सब प्रतियां सुरक्षित करा लीजिए। छपा हुआ मनीआर्डर फार्म इस अङ्कके साथ भेजा जा रहा है। कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या (जो पते पर आपके शुभनामके साथ लिखी है वह) और पूरा पता स्पष्ट अक्षरोंमें लिखें। आगामी चतुर्थ वर्षके 'नववर्षाङ्क' (जो शरद् पूर्णिमा ता० ४ अक्टूबर १९६० को प्रकाशित होगा) का मूल्य २) और प्रत्येक साधारण अङ्कका मूल्य १॥) होगा, परन्तु २० सितम्बर १९६० से पहले मूल्य जमा करा देनेवालोंको यह विशेषांक और वर्षभरके शेष सब अंक ५॥) में ही प्राप्त हो सकेंगे। कागजका मूल्य पहले से बहुत बढ़ गया और सुरसाके मुखकी भांति अभी बढ़ता ही जा रहा है, अतः सम्भव है आगामी चौथे वर्षसे 'ज्योतिष्मती' का मूल्य ६) वार्षिक करना पड़ जावे। परन्तु १ अक्टूबरसे पहले मूल्य भेज देनेवालोंको बढ़ा हुआ मूल्य अधिक नहीं देना पड़ेगा। वी० पी० किसी को नहीं भेजी जावेगी। मूल्य मनीआर्डर से ही भेजना चाहिए। प्रतियां सीमित संख्या में ही छपेंगी। अतः सम्भव है ग्राहक अधिक हो जाने पर बादमें देरीसे मूल्य भेजने वालोंको इस वर्षके गताङ्कोंकी भांति 'ज्योतिष्मती' का 'नव-वर्षाङ्क' भी न मिल सके, अतः जो पहले चेत जावेंगे वे ही लाभमें रहेंगे।

ग्राहकोंको विशेष लाभ

साढ़े पांच रुपयेमें 'ज्योतिष्मती' का ग्राहक बनकर आप साढ़े पांच रुपयेका तत्काल लाभ उठा सकते हैं। 'भक्तसुदर्शन नाटक' 'केलि-कुतूहल' और 'व्यापार-विज्ञान' आधे मूल्यमें ग्राहकोंको देकर ५॥) का लाभ पहुँचाया जावेगा। इसका पूरा विवरण आगे देखिये। प्रो० बी० सी० मेहताने अपने अनुभव सिद्ध चांसोंकी १०) मूल्यकी पुस्तक आधे मूल्य में और जयपुरके श्रीगणेश दैवज्ञने अपने सभी ग्रन्थ 'ज्योतिष्मती' के ग्राहकोंको आधे मूल्यमें देनेकी घोषणा की है। इस प्रकार 'ज्योतिष्मती' के ग्राहकोंको ज्योतिष और व्यापार सम्बन्धी लेखोंसे तो लाभ होगा ही, इसके अतिरिक्त अन्य बहुमूल्य ग्रन्थ भी उन्हें अर्ध मूल्यमें मिल सकेंगे।

एक प्रश्नका उत्तर निःशुल्क (फ्री)

'ज्योतिष्मती' के आगामी चौथे वर्षका वार्षिक मूल्य ५॥) सर्व प्रथम भेजनेवाले उन २०० ग्राहकोंके किसी भी एक प्रश्नका जन्मकुण्डलीसे अथवा प्रश्न लग्नसे शास्त्रीय शुद्ध उत्तर श्री रामबिहारीलालजीकी ओरसे निःशुल्क (फ्री) दिया जावेगा। व्यवस्थापक 'ज्योतिष्मती' के हस्ताक्षरकी मनीआर्डर रसीद (Acknowledgment) के साथ अपनी जन्म-कुण्डलीकी प्रतिलिपि, हाथका प्रिण्ट (चित्र) अथवा पत्र लिखनेका प्रश्न समय और उत्तरके लिए अपने पतेका लिफाफा या १५ नये पैसेका टिकट पत्रके साथ "श्रीरामबिहारीलाल ज्योतिषी बी० ए०, १२ ई, एम० एम० रोड़, आराम बाग, नई दिल्ली" इस पते पर भेजें। १५ अगस्तके बाद अथवा पहले भी २०० ग्राहकोंके प्रश्न आनेके बाद किसीको फ्री उत्तर नहीं दिया जावेगा।

'ज्योतिष्मती' के नये आकर्षण

'ज्योतिष्मती' को गत तीसरे वर्षसे विशेष उपयोगी और आकर्षक बनाई जा रही है। संसारमें घटित होनेवाली आगामी वर्षोंकी राजनैतिक सामाजिक और व्यापारिक घटनाओंको महत्त्वपूर्ण भविष्यवाणियां और भारतके गण्यमान्य विद्वानों के गवेषणात्मक लेख प्रकाशित हो रहे हैं। बारह सौर मासोंमें उत्पन्न हुए प्राणियोंका फल विस्तृत रूपमें वैज्ञानिक ढंगसे प्रकाशित हो रहा है। जैसे पहले 'श्रीस्वाध्याय' में १२ लग्नोंका फल छपा था वैसे ही अब क्रमशः प्रत्येक अंकमें एक सौर मासका फल छप रहा है। साथ ही ज्योतिष और आयुर्वेदके अनुभूत गुप्त योग भी प्रकाशित होने लगे हैं। द्वादशराशि-फल भी प्रत्येक अंकमें विशेषरूपसे दिया जाता है। ज्योतिषके फलित गणित और सामुद्रिकके गूढ़ रहस्योंको प्रकट करनेवाले लेख और वर्तमान तेजी मन्दीके सभी लेखकोंके लेख तो रहते ही हैं साथ ही १९६० से १९६५ तकके भयानक समय तथा 'भावी विश्व युद्ध और उसके परिणाम' पर अनुभवी मर्मज्ञ विद्वानोंके विवेचनात्मक लेख प्रकाशित किये जा रहे हैं, जो विशेष रूपसे पठनीय और संग्रहणीय हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षाप्रद कलापूर्ण रोचक कहानी, कविता और साहित्य-समालोचना भी रहती है। 'योगार्णव' नामक अप्राप्य ग्रन्थका कुछ भाग ५ वर्ष पूर्व हमने 'श्रीस्वाध्याय' में प्रकाशित किया था, वह पूरा ग्रन्थ हमें प्राप्त हो गया है, आगामी अङ्कसे 'ज्योतिष्मती' में वह भाषा टीका सहित प्रकाशित करेंगे। और तीन मासके दैनिक सूक्ष्मग्रह और दृष्टियोग भी देनेका प्रयत्न करेंगे जिससे ग्रहगणितानुरागियोंको दैनिक सूक्ष्म दृष्टियाँ देखनेके लिए यूरोपियन या भारतीय एफेमरीजकी आवश्यकता न रहे।

'ज्योतिष्मती' के ग्राहकोंको आधे मूल्यमें

'भक्तसुदर्शन-नाटक' हिन्दी भाषानुवाद सहित मूल्य २)

देवीभागवतकी कथासे आधारित भगवान् श्रीरामके पूर्वज भक्तसुदर्शनके आदर्शचरित्र पर धर्ममार्तण्ड राजर्षि श्री १०५ दुर्गासिंहजी (सोलननरेश) की सत्प्रेरणासे भारतके सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान् महामहोपाध्याय श्री पं० मथुराप्रसादजी दीक्षित (राजगुरु-सोलन) ने 'भक्त सुदर्शन नाटक' की रचना की है। यह नाटक हिन्दी-भाषाटीका सहित ८ सुन्दर तिरंगे आकर्षक चित्रोंके साथ प्रकाशित हुआ है। नाटककी लेखन शैली भाषा और कथानक इतना रोचक शिक्षाप्रद है कि एक बार हाथमें लेकर छोड़नेको चित्त नहीं चाहता। मूल्य २) है। पर 'ज्योतिष्मती' के ग्राहकोंको आधे मूल्य १) में मिलेगा। डाक रजिस्ट्री खर्च ७५ नए पैसे अलग।

'केलिकुतूहल'

हिन्दी भाषानुवाद सहित मूल्य ४) रु०

यह आयुर्वेद विज्ञानका अद्भुत ग्रन्थ म० म० श्री पं० मथुराप्रसादजी दीक्षितका लिखा हुआ भाषा-टीका सहित प्रकाशित हुआ है। प्रत्येक गार्हस्थ्यसुखाभिलाषीके लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। गृहस्थ जीवनको सुखमय बनानेके अनुभूत उपाय और शक्तिवर्द्धक सन्तानप्रद सिद्ध औषधि प्रयोग भी दिये गये हैं। 'ज्योतिष्मती' के ग्राहक आधा मूल्य २) और डाक रजिस्ट्री खर्च ॥।) कुल २॥।) दो रुपये ७५ नए पैसे नीचेके पते पर मनीआर्डरसे भेजकर प्राप्त करें। पांच रुपये मूल्य का ग्रन्थ "व्यापार विज्ञान" प्रथम भाग ज्योतिष्मतीके ग्राहकोंको आधे मूल्य २॥) में, डाकखर्च ॥।) अलग।

पता स्पष्ट (साफ) लिखें

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम और पूरा पता हिन्दीमें या अंग्रेजीके बड़े अक्षरोंमें स्पष्ट लिखना चाहिए। अस्पष्ट घसीट अक्षरोंमें लिखा पता ठीक पढ़ा न जानेके कारण रजिस्टरमें गलत दर्ज होनेसे डाकमें आपकी 'ज्योतिष्मती' गुम हो सकती है, अतः पता बहुत सावधानीसे स्पष्ट लिखें।

प्राप्ति स्थान—

व्यवस्थापक, ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (शिमला)

॥ श्रीः ॥

ज्योतिष्मती

संरक्षक—

हिजहाईनेस महाराजाधिराज श्री १०५ गजसिंहजी बहादुर, जोधपुर-नरेश।

सहायक—

श्रीमान् नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' मैनेजिङ्ग डायरेक्टर डायर मीकिन ब्रूयरीज लि० सोलनब्रूयरी

श्रीमान् हीरालाल मोतीलालजी पुजारा, ध्रांगध्रा (सौराष्ट्र)।

श्रीमान् पं० खुशीरामजी शर्मा चेयरमेन म्यू० कमेटी, कुराली (पंजाब)।

श्री १०५ मती युवरानी श्री मोहनकुमारीजी, सीतामऊ (म० प्र०)।

श्री १०५ मान् राजासाहब प्रतापसिंहजी, कुचामन (मारवाड़)।

श्रीमान् चौधरीसाहब गगनसिंहजी, जण्डवाल (होश्यारपुर)।

श्रीमान् पद्मचन्द एण्ड सन्स जौहरी, बड़ा दरीबा, दिल्ली।

सम्पादक—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक—

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

१—भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२—भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३—ज्योतिर्विज्ञानकी सर्वतोमुखी उन्नति और ज्योतिषशास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) पांचसौ एक रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'ज्योतिष्मती' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) एकसौ एक रुपये प्रति वर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे।

(३) जो सज्जन ११) से १००) तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सदस्य माने जायेंगे।

(४) ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़शुक्ला १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य ५॥) पांच रुपये पचास नये पैसे और एक प्रतिका १॥।) एक रुपया ७५ नये पैसे हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतनकी ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे, अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिएँ।

(७) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद् पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरद्पूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहें तो बीचमें किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ५॥) रु. न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ़ी १५) तकके शेष अङ्कों का मूल्य ही लिया जायेगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ४॥) रु०, दो अङ्कोंका मूल्य ३॥), और एक अङ्कका मूल्य १.७५ मनीआर्डर द्वारा पेशगी आने चाहिएँ। वी० पी० नहीं भेजी जावेगी।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए। यदि ग्राहकसंख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नए ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य वा एक अङ्कके मूल्यका नोट और टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें। इस ग्रीष्माङ्क (श्रावण २०१७ वि० जुलाई १९६० के अङ्क) का मूल्य १॥) और आगामी चौथे वर्षका मूल्य ५॥) कुल ७) भेजकर इस अंकसे भी स्थायी ग्राहक बन सकते हैं।

'ज्योतिष्मती' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला पूर्णिमा) को प्रत्येक ग्राहक के नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होने की तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (शिमला)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[ग्रीष्माङ्क]

गुम्फन्तीव पुरातनैरथनवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समम्
भाग्याभाग्य विनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती ।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले ॥

वर्ष ३ | सोलन, आषाढ़ शु० १५ शुक्रवार सं० २०१७ वि० | संख्या ४
राष्ट्रीय मिति (सौर) १७ आषाढ़, शाके १८८२

सद्धर्म-माहात्म्य

श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानवः । इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम् ॥१॥
वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः । एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥२॥
एकोऽपि वेदविद्धर्मं यं व्यवस्येद् द्विजोत्तमः । स विज्ञेयः परोधर्मो नाज्ञानामुदितोऽयुतैः ॥३॥
धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः । तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोवधीत् ॥४॥

अर्थ—श्रुति (वेद) और स्मृतिमें बतलाये धर्मका पालन करता हुआ मनुष्य इस संसारमें यश तथा मरकर उत्तम सुख प्राप्त करता है ॥१॥

वेद, स्मृति, सदाचार और अपनेको प्रिय लगनेवाला चार प्रकारका धर्मका लक्षण है ॥२॥

वेदका मर्म जाननेवाला कोई एक द्विजश्रेष्ठ भी जिसका निर्णय कर दे, उसे ही धर्म मानना चाहिए, किन्तु दश हजार मूर्ख भी जिसको निश्चित करें वह धर्म नहीं है, धर्मका प्रामाण्य वेदज्ञ विद्वान् ही कर सकते हैं उसके लिए जनमतका कोई विचार नहीं है ॥३॥

नष्ट किया हुआ धर्म ही मारता है और रक्षा किया हुआ धर्म ही रक्षा करता है—इसलिए मनुष्यको कभी अधर्माचरण नहीं करना चाहिये ॥४॥

सम्पादकीय विचार—

स्वतन्त्रताके तेरह वर्ष

१५ अगस्त १९६० में भारतको स्वतन्त्र हुए १३ वर्ष पूरे हो रहे हैं, निस्संदेह कहा जा सकता है कि इन तेरह वर्षोंमें अन्तर्राष्ट्रीय जगत्में भारतने विशिष्ट स्थान बना लिया है, औद्योगिक क्षेत्रमें भी पर्याप्त प्रगति की है। परन्तु सदाचार चरित्र और आत्मबलका जितना पतन इन १३ वर्षोंमें हुआ है उतना पहले कभी नहीं। आज तो अधर्माचरण अनाचारको ही धर्म मान लिया गया है। चारों ओर भ्रष्टाचार, बेईमानी, घूस, रिश्वत, अनैतिकताका बोलबाला है, रक्षक ही भक्षक बन रहे हैं। इस अनाचारमें पहले तो उन्हें खूब भौतिक उन्नति दिखाई देती है, पर अन्तमें उनका समूल नाश हो जाता है। हमारा ही नहीं, भारतके तत्वदर्शी ऋषियोंका भी यही मत है। यथा—

अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यति॥

स्वतन्त्र होने पर भी आज भारतके सभी वर्गोंमें घोर निराशा और अशान्ति है। कोई भी पूर्णरूपेण सुखी समृद्ध दिखाई नहीं देता। इसका कारण यह है कि अध्यात्मवादी भारतके नेताओंने आज भोगवादको ही प्रधान मान लिया है। अपने स्वार्थ और नेतागिरिको स्थिर रखनेके लिए वे घोर पातक वा राष्ट्रद्रोह पर भी उतारू हो जाते हैं। अध्यात्मवाद-त्यागवादसे बहिर्मुख होकर राष्ट्रको पतनके गर्त्तमें ले जा रहे हैं। महामंत्री चाणक्य जैसा त्याग और उच्चादर्श आज भारतके एक भी मंत्री या नेतामें नहीं है। कांग्रेसी नेता गांधीजीका नाम लेते नहीं अघाते, परन्तु स्व० गांधीजीके सिद्धान्तोंका वे स्वयं ही हनन कर रहे हैं। गांधीजीके समय कांग्रेसी लोग ही कहा करते थे "किसी भी बड़ेसे बड़े अधिकारीको ५००) मासिकसे अधिक वेतन नहीं दिया जायेगा।" परन्तु आज मंत्रियों और सचिवोंको १५००) से चारहजार तक वेतन और भत्ता आदिकी सुविधा अलग दी जा रही है। पूछा जाता है तो कहते हैं कि—"आजकल ५००) मासिक में उनका गुजारा नहीं होता।" यदि यह ठीक है तो फिर तृतीय श्रेणिके कर्मचारियोंका (जिनका भी पूरा परिवार है) आजकल केवल १००) सवासौमें ही कैसे गुजारा होगा? जिन उच्चाधिकारियोंको आज आप ५००) का चौगुणा आठ गुणा तक देते हैं वहां यदि वे निम्न कर्मचारी अपने पेट पालनके लिए कुछ अधिक माँग करते हैं तो इसमें कौनसा अपराध है? जिनको भरपूर वेतन मिलता है वे बड़े-बड़े अधिकारी ही जब अनैतिक कार्य करनेसे नहीं चूकते तो फिर निम्नकर्मचारी अपने परिवारके पेट पर पट्टी बांधकर धर्मराज युधिष्ठिर वा सत्यवादी हरिश्चन्द्र कैसे बन सकेंगे? "बुभुक्षितः किं न करोति पापं क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति।" राष्ट्रमें इस समय कुछ त्यागी सदाचारी उदार अधिकारी एवं महापुरुष भी हैं पर उनकी बात कोई सुनता नहीं। इस समय राष्ट्रको परमत्यागी नीति कुशल चाणक्य जैसे महापुरुषकी आवश्यकता है—

मौर्य चन्द्रगुप्तका साम्राज्य कितना सुविशाल और कितना सुसमृद्ध था इसको इतिहासवेत्ता जानते हैं। इस सम्बन्धमें 'मेगास्थनीज' के कुछ संस्मरण देखने योग्य हैं। उस सुविशाल साम्राज्यके सम्राट् पद पर चन्द्रगुप्तको अभिषिक्त करनेवाला महामनीषी प्रधान महामन्त्री आर्य चाणक्य विष्णु शर्मा किसी प्रासादमें रहनेकी अभिलाषा नहीं रखता था। इस विषयमें आजसे पन्द्रह सौ वर्ष पहले महाकवि विशाखदत्तने अपने 'मुद्राराक्षस' नाटकमें आर्य चाणक्यके निवासस्थानका वर्णन करते हुए जो लिखा है वह आजके विधाननिर्माताओंको तथा शासनका दम्भ भरनेवालोंको आँखें खोलकर देखना चाहिए। महाकवि कहता है—

उपल शकलमेतद्भेदकं गोमयानां
बटुभिरुपहृतानां बर्हिषां स्तोममेतत्।
शरणमपि समिद्भिः शुष्यमाणाभिराभि-
र्विनमितपटलान्तं दृश्यते जीर्णकुड्यम्॥

[यह देखिये भारतके प्रधान महामंत्री चाणक्य विष्णुशर्मा का निवास स्थान—छतके छज्जों पर लकड़ियाँ सूखने डाली हैं और उनके बोझसे कुटियाकी छत तथा छज्जे झुक गये हैं। भीतें पुरानी हो गई हैं। यह देखिये सूखी गोबरकी पाथियोंको तोड़नेका यह छोटा बट्टा रक्खा है। यह देखिये इधर कुशोंका स्तोम (पूलोंका ढेर) भी रक्खा है। विद्यार्थी इन्हें ले आते हैं। यही इनका घर है।]

चाणक्यके बनाये कौटिलीय अर्थशास्त्रका अध्ययन करनेवाले भलीभाँति जानते हैं कि धर्मनिर्णयके लिए उन्होंने श्रुति स्मृतिको ही प्रमाण माना है। जैमिनिमहर्षिका धर्म-विचारशास्त्र (पूर्वमीमांसा) जिन्होंने गुरुसुश्रूषा करते हुए पढ़ा है, संसारभरकी धर्मव्यवस्थाका निर्णय करनेमें वे निःसंशय योग्य माने जा सकते हैं। किन्तु इस अपहारयुगमें अनार्य-तन्त्रमें उन्हें अयोग्य माना जाता है, इसमें कोई आश्चर्य नहीं। गणतन्त्र (पार्टीबन्दी) हो अथवा व्यक्तितन्त्र (डिक्टेटरशाही) दोनों ही अनार्यतन्त्र हैं। वे कभी भी शान्तिस्थापना नहीं कर सकते। भारतके वर्तमान नेता यदि भारतमें सुख शान्ति स्थापना करना चाहते हैं तो उन्हें अनार्यतन्त्रको आदर्श मानना छोड़ना होगा। जिस तन्त्रके आधार पर संसारके जगद्गुरु पद पर लाखों वर्ष भारत प्रतिष्ठित रहा वह धर्मतन्त्र ही था और उसी धर्मतन्त्रका आश्रय लेना होगा। अमेरिका रूस आदि भौतिक दृष्टिवालोंका आदर्श भारतका कल्याण नहीं, विनाश कर डालेगा। समय रहते भारतीय शासन सूत्र संचालकोंको चेतना चाहिए।

राष्ट्रमें नेता किस प्रकारके होने चाहिएँ? इस प्रश्नका उत्तर अथर्ववेदमें यों दिया है—

स्वास्तिदा विशां पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी।
वृषेन्द्र पुर एतु नः सोमपा अभयंकरः॥
वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः।
अधमं गमया तमो यो अस्माँ अभिदासति॥
सपत्नक्षयणो वृषाभि राष्ट्रो विषासहिः।
यथाहमेषां वीराणां विराजानि जनस्य च॥

अर्थात—नेता मंगलदाता, प्रजा-पालक, हिंसाको वशमें करनेवाला, बलवान्, सोमपायी, अभयदाता, शत्रुनाशक वीर एवं अग्रगन्ता हो। नेता शत्रुओं और जन-शाशकोंका विनाशक हो, उनको कभी सिर न उठाने दे। नेतामें ये तीन गुण अवश्य होने चाहिए। (१) शत्रुओंका पराभव करने वाला, रिपुओंका क्षयकारक, (२) बलवान् हो और (३) विजयी हो। इन गुणोंसे युक्त नेता राष्ट्रकी सेवा करते हुए वीरों और जनताके मध्य शोभायमान हो।

ऐसे ही नेता श्रीमद्भागवतमें वर्णित महर्षि व्यासके—

उदरम्भ्रियते यावत्तावत्स्वत्वं हि देहिनाम्।
ततोऽधिकं यो मन्येत स स्तेनो दण्डमर्हति॥

इस आदर्श आर्य साम्यवाद द्वारा ही विश्वका कल्याण कर सकेंगे।

भारत और राष्ट्रमण्डल

भारतमें गणराज्यकी स्थापनाके बाद भी राष्ट्रमण्डल (कामनवेल्थ) के साथ भारतका नत्थी रहना इसकी निर्बलता का द्योतक है। कांग्रेसने निश्चय किया है कि राष्ट्रमण्डलमें भारतका रहना उचित है। इससे भारतको क्या कोई लाभ है? इस प्रश्नका निर्णयात्मक उत्तर न गृहमंत्री श्री पन्त दे सके, और न प्रतिरक्षामंत्री श्री मेनन ही। प्रधानमंत्री श्री नेहरूने बहुत सोच-विचार कर एक लाभ ढूंढ़ निकाला है कि राष्ट्रमण्डलमें भारतके रहनेसे अफ्रीका महादेशके देशोंकी स्वतन्त्रता शीघ्र स्वीकार की जाने लगी है, और यदि भारत 'राष्ट्रमण्डल' में न रहा तो इनकी स्वतंत्र होनेकी प्रगति धीमी हो जायगी। किन्तु प्रधानमंत्रीका यह कथन हेत्वाभाससे अधिक नहीं था। राष्ट्रकुलमें भारत है, क्या दक्षिण अफ्रीका में 'पृथक्करणकी नीति' का अन्त हो गया? दक्षिण अफ्रीका की 'यूनियन सरकार' की नीतिमें जरा भी अन्तर नहीं आया। इसके विपरीत भारतीयों और अफ्रीकनोंके प्रति यूनियन सरकारकी नीति अधिकाधिक उग्र होती जा रही है। इस अवस्थामें रानी एलिजाबेथको भारतमें आनेका निमंत्रण देना भारतीय गौरवको बढ़ानेमें सहायक न होगा। ब्रिटेनने भारतके राष्ट्रपतिको कभी आमंत्रित नहीं किया है। फिर भारत इंग्लैंडकी रानीको क्यों बुलावे? काश्मीरके प्रश्न पर ब्रिटेनने सदा पाकिस्तानका साथ दिया। इस अवस्थामें ब्रिटिश रानीको इसलिए आमंत्रित करना, क्योंकि पाकिस्तान ने आमंत्रित किया है, क्या उचित है?

चीनके प्रति भारतीय रुख

मातृभूमिका जर्रा-जर्रा पवित्र है, शिरसा वन्द्य है। किन्तु चीनी सेनाको भारत भू परसे हटानेके लिए अभी तक कोई सफल प्रयत्न नहीं किया गया। चीन अधिकृत भूभाग की किलेबन्दी कर रहा है। उसके विमान लेहके ऊपर मण्डराते हुए अनेक बार देखे गए। किन्तु उनको परावृत करनेका प्रयत्न नहीं हुआ। नेहरू-मेनन नीति चीनी-परितोष की हैं। यदि ऐसी बात न होती, तो जिस प्रकार काश्मीरसे पाकिस्तानको हटानेके लिए सेना भेजी गई थी, उसी प्रकार चीनी सेनाको भी अधिकृत भूमि परसे हटानेके लिए सेना भेजी जाती। परन्तु चीनने दखल किया हुआ भाग भी नहीं छोड़ा और फिर भी उसके साथ पेकिंगमें निष्फल वार्ता की जा रही है, कि चर्चा और विवादके क्या-क्या विषय रखे जाएं। एक स्वाभिमानी देशके लिए यह गौरवकी बात नहीं कही जा सकती कि वह अपने देशकी जमीन पर विदेशी सेनाको अधिकार जमाए रहने दे। चीन शान्ति-प्रिय नहीं है और जाग्रत चीन आत्मविस्तारके लिए उत्सुक है, यह सत्य अभी नेपालकी मुस्तांग सीमाके अन्दर चीनी सेनाके प्रवेशसे स्पष्ट हो गया है। यह जानते हुए भी चीनको भारत-भूमि पर किलेबन्दी करने देना, भूटानके आठ गांवों पर चीनके अधिकारको चुनौती भी न देना उचित नहीं कहा जा सकता। चीनको इसके लिए अवसर देना विश्वशान्तिके प्रयासोंको बढ़ावा नहीं, अपितु उसमें बाधा देना है। किन्तु प्रतिरक्षा-मंत्री और प्रधानमंत्री केवल घोषणाएं ही करते हैं कि देश की इंच-इंच जमीनकी रक्षा की जायगी, पर जो भूमि छिन गई है, चली गई है उसको वापस लेनेके लिए क्या किया जा रहा है?

तिब्बतकी स्वाधीनताका प्रश्न

तिब्बत पर चीनका आधिपत्य स्थापित हो गया है। यही नहीं चीनने लद्दाखका अधिकांश भाग और लोंगजू उसने खाली नहीं किया है। उसने नए विमानतल बना लिए हैं और २००० मील सड़क भी हिमालयके साथ-साथ बना ली है, जिस पर साढ़े पांच टन भारी ट्रक दौड़ सकते हैं। वह लद्दाख और नागा-देशमें पैर बढ़ानेका प्रयत्न बराबर कर रहा है। किन्तु भारतके नगर और गांव आज तक भी नहीं गूंजे। तिब्बतमें चीनी सेनाकी तीन डिवीजने हैं। तिब्बतमें भी सिंगकियांग (चीनी तुर्किस्तान) के समान चीनी बड़ी संख्यामें बसा दिए गए हैं, और तिब्बती जातिका अस्तित्व भी मिटाया जा रहा है। इस पर भी तिब्बती अपनी स्वाधीनताके लिए संघर्ष कर रहे हैं, चीनी साम्राज्यवादका प्रतिरोध कर रहे हैं, और यह वे एकाकी ही कर रहे हैं। उनकी स्वाधीनताकी लड़ाईके पक्षमें एक शब्द भी इस देशमें नहीं कहा जाता। अफ्रीकी देशोंकी स्वाधीनताके लिए इस देशमें कान्फ्रेंसें होती हैं, जलूस निकलते हैं, फ्रेंच अत्याचारोंका प्रतिरोध किया जाता है, किन्तु चीन इतना शक्तिशाली समझा जाता है कि चीनी साम्राज्यवादसे टक्कर लेनेवाले तिब्बतियोंके लिए हमारे कोषमें सहानुभूतिका भी एक शब्द नहीं। तिब्बती शरणार्थी पुनः आ रहे हैं। चीनका प्रभुत्व स्वीकार करके भारतने न केवल एक स्वाधीन देशका बलिदान कर दिया, अपितु अपनी सुरक्षाको भी खतरेमें डाल दिया। और नहीं तो हमें अपनी सुरक्षाके ही विचारसे तिब्बतकी स्वाधीनताका समर्थन करना चाहिए और अपनी भूल सुधारनी चाहिए। नेपोलियन कहा करता था कि—'अफीमची चीनी दानवको मत जगाओ, अन्यथा वह सबको खा जायगा।' वह सत्य आज सामने प्रत्यक्ष हो रहा है। चीनकी आत्मविस्तार नीतिको समय रहते रोकनेका एक उपाय है कि तिब्बतकी स्वाधीनताके पक्षमें विश्वका लोकमत तैयार किया जाय। क्या हम यह करेंगे?

लेखकोंको सूचना

आगामी 'नववर्षाङ्क' के लिए सब लेख भाद्रपदकृष्ण ३० ता० २२ अगस्त १९६० ई० तक नीचे लिखे पते पर कार्यालयमें पहुंच जाने चाहिएँ। इस अवधिके बाद आने वाले और कागजके दोनों ओर अस्पष्ट अक्षरोंमें लिखे हुए लेख प्रकाशित न हो सकेंगे।

सम्पादक—'ज्योतिष्मती' सोलन, (शिमला)

१९६२ का अष्टग्रहयोग (७)

[ले०—श्री जसाभाई आर० वडालिया, एल.-एल. बी.]

[श्री वडालिया महाशय ने भारतीय गणना पद्धति को महत्व देकर निरयण क्रमसे अपने लेख का आरम्भ किया है। हम समझे थे कि शास्त्रीय ग्रह-गणना द्वारा वैज्ञानिक-विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा, परन्तु देश-विशेष पर उन्हें जैसा अनुभव हुआ वह प्रकट कर दिया है। उसके कारणों और आधारों की उपेक्षा हो गई है। एक प्रकार से व्यक्तिगत विचार ही रह गए हैं, जिनका आधार नहीं दिया गया है। इसलिए तर्कशुद्धता नहीं है। भारत का जो लग्न वे मानकर चले हैं, वह कैसे और क्यों है ? यह विदित नहीं हो पाता, जबकि भारतकी मकर-राशि सर्वस्वीकृत है, तब उसी पर आने वाली यह अष्टग्रहयुति क्या परिणाम कर सकती है, यह कहीं नहीं है। अंत में वे राशियों पर अभिमत देने लगे, जो एक प्रकार से एक रचना प्रसूत ही है। तर्क और आधार पर आश्रित विवेचन न होने के कारण केवल यह आत्म-विचार-विलास ही है। —सम्पादक]

अष्ट-ग्रह-योग ५ फरवरी १९६२ को पड़ता है। राहुको छोड़ सभी ग्रह निरयन सिद्धान्तके अनुसार मकर राशिमें और सायन सिद्धान्त के अनुसार कुम्भ राशिमें जमा होते हैं। हम भारतवासी ज्योतिषमें निरयन सिद्धान्तके अनुगामी हैं और यही सिद्धान्त अभी सायन सिद्धान्तसे अच्छा माना जाता है। हमारे ज्योतिषके प्राचीन ग्रन्थ निरयन सिद्धान्त पर ही आश्रित हैं; इसलिए मैं इसी सिद्धान्तके आधार पर अपना विचार आगे प्रस्तुत कर रहा हूँ।

इस अष्ट-ग्रह-योगका फल क्या होगा यह हम दो दृष्टियोंसे जाननेको उत्सुक हैं—एक तो भिन्न-भिन्न देशोंकी दृष्टिसे, तथा दूसरे भिन्न-भिन्न राशियोंमें उत्पन्न भिन्न भिन्न व्यक्तियोंकी दृष्टिसे।

विभिन्न देशों पर अष्टग्रह योगके प्रभावके बारेमें यह जानने योग्य है कि इसका प्रभाव उत्तराषाढ़ा, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्रों पर पड़ता है, इसलिए भारत, पाकिस्तान, ईरान, अफ़गानिस्तान, यूनान, बल्गेरिया, मिश्र, अल्जीरिया, हंगरी, जर्मनी, इंगलैंड, पुर्तगाल, फ्रांस, संयुक्तराज्य अमेरिका और रूस इन देशों पर इसका प्रभाव होगा।

यह ग्रह-योग मकर राशिमें पड़ता है, जो राजनेताओं, सैनिक अधिनायकों और सैनिकों तथा निचले तबकेकी जनताके अधिपति हैं। इस ग्रहयोगकी अवधिमें तथा आगे तीन ग्रहण भी हैं, जो ५-२-६२, ३१-७-६२ और २५-१-६३ को पड़ते हैं। ये सभी सुप्रतिष्ठित सरकारों, श्रमिक वर्गों और राजनीतिकोंके लिए बुरे समयके सूचक हैं। ये सूर्य ग्रहण सूचित करते हैं कि प्रभावित क्षेत्रोंमें महामारियाँ फैलेंगी, बाढ़ विध्वंसलीला करेगी, फसलें मारी जाएंगी, भूकम्प होगा, इत्यादि।

विश्वके अन्य भागोंमें क्या-क्या होगा यह जाननेकी अपेक्षा लोगों को अधिक कुतूहल यह जाननेके लिए रहता है कि 'अपने घरमें' क्या होनेवाला है। इसलिए मैं सबसे पहले अपने देश पर इस ग्रहयोग तथा ग्रहणोंके फलका निवेचन करता हूँ।

भारत

यह अष्ट-ग्रह-योग भारतके लग्नसे पाँचवें स्थानमें पड़ता है। यह इण्डियन नेशनल कांग्रेसकी जन्मपत्रीमें लग्नसे ११वें स्थानमें और चन्द्रमासे पाँचवें स्थानमें पड़ता है। यह देशके सामान्य शासनके क्षेत्रमें कोई शुभ लक्षण नहीं है।

बिहार, पंजाब और उत्तरप्रदेश पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ेगा। इस क्षेत्रकी जनता संभवतः बाढ़, भूकम्प, महामारी आदि जैसे कुछ प्राकृतिक प्रकोपोंसे पीड़ित होगी। फसल मारे जानेकी भी आशंका है।

मकर जलचर राशि है इसलिए समुद्र तटवर्ती क्षेत्रोंको भी कष्ट हो सकता है। सरकारी शासनमें भी, प्रभावित क्षेत्रों में, बड़ी-बड़ी खींचातानी हो सकती है और वर्तमान सरकार को संकटका सामना करना पड़ेगा।

देशकी साधारण आर्थिक स्थिति बहुत-कुछ बिगड़ सकती है, किन्तु अधिक दिनों तक आर्थिक संकट टिकनेकी आशंका नहीं है। फिर भी आर्थिक कठिनाई मौजूद रहेगी जो १९६३ के अन्त तक बनी रहेगी। सीमा-संघर्ष चरम-सीमा तक पहुँच जायगा और भारतीय सेना उसका जवाब उसी तरह देती जायगी।

पाकिस्तान

वर्तमान सैनिक शासनमें बड़े-बड़े परिवर्तन हो सकते हैं। यह कहना सचमुच बहुत कठिन है कि जनरल अयूब-खाँ इस संकटसे उद्धार पाएँगे या नहीं। पाकिस्तान सेनाके उच्च अधिकारियोंके बीच गंभीर असंतोष फैला रहेगा। जिसके परिणामस्वरूप बड़े-बड़े परिवर्तन होनेकी सम्भावना है। पंजाब और बंगालके जो भाग पाकिस्तानमें पड़ते हैं वहाँ बाढ़ और महामारीके प्रकोप हो सकते हैं। जनता बहुत कष्ट में रहेगी और वर्तमान शासनकी तख्ती उलटानेकी चेष्टा कर सकती है।

बर्मा

इस देशकी स्वतन्त्रता जन्मपत्रीमें यह ग्रहयोग और सूर्य ग्रहण लग्नसे तृतीय स्थान और चन्द्रमासे पंचम स्थान में पड़ते हैं। सप्तमेश शुक्र कष्ट स्थानमें हैं। इस देशके लिए यह सचमुचमें बड़े कष्टका समय है। और इसके शासनमें बारम्बर परिवर्तन हो सकते हैं।

संयुक्त अरब गणतन्त्र

संयुक्त अरब गणतन्त्रकी जन्मपत्रीमें लग्नसे नवम स्थान और चन्द्रमासे ११वाँ स्थान कष्टका है। यह कर्नल नासिर के लिए भी शुभ समय नहीं है, क्योंकि लग्नसे तृतीय स्थान और चन्द्रमा वाला स्थान कष्टके हैं। खूब सम्भव है कि मिश्र युद्ध स्थल बन जाय और कम्युनिस्ट देशोंसे इसका सम्बन्ध बिगड़ जायगा। इस देशको बहुत बड़ी हानि होगी और इसमें मुख्य हाथ इजराइलका रहेगा।

इण्डोनेशिया

इसकी गणतन्त्र-जन्मपत्री में लग्नसे पंचम स्थान और चन्द्रमासे ११वाँ स्थान कष्टके हैं। लग्नेश पंचम स्थानमें हैं और कष्टकर होंगे (?)।

डा० सुकर्णके लग्न और चन्द्रमा दोनों परम कष्टगत हैं। इसलिए देशके लिए यह बड़े कष्टका समय होगा। कुछ गृह-युद्ध अवश्यम्भावी है और डा० सुकर्णकी स्थिति पर खतरा आयेगा। देशको युद्ध काल जैसे संकटका सामना करना पड़ेगा।

ग्रेट ब्रिटेन

इसकी जन्मपत्रीमें ग्रहयोग और सूर्यग्रहणोंसे जन्म लग्नके अधीश शुक्र कष्टगत होते हैं। ब्रिटेनके लिए यह कठिन समय होगा। सम्भव है कि ब्रिटेन मध्य-पूर्वके झगड़ों में फँस जाय। सम्पूर्णतः जन्मकुण्डली देखनेसे प्रकट होता है कि ये फल क्षणिक होंगे और देश बड़ी बुद्धिमत्ताके साथ इन झगड़ोंसे अन्तमें अपनेको मुक्त कर लेगा, भले ही तब तक इसकी प्रतिष्ठा पर कुछ कड़ी चोटें पहुँच जाएँ।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और रूस

विश्वके इन दो विशाल देशोंके बीच युद्ध छिड़नेका कोई प्रत्यक्ष लक्षण नहीं दिखाई देता है। फिर भी ये दोनों देश अपनी आन्तरिक समस्याओंमें तथा परस्पर स्वार्थके संघर्षमें पड़े अन्य राष्ट्रोंके बीच शान्ति स्थापनामें व्यस्त रहेंगे। परिस्थिति इन दोनों देशोंके नेताओंकी आँख खोलकर उन्हें प्रयत्यक्ष युद्धमें न फँसनेकी बुद्धिमत्ता प्रदान करेगी और यह अधिकाधिक जोरके साथ कहा जा सकता है कि संसार का बहुत कुछ भविष्य इस पर निर्भर करता है कि विश्वके ये दोनों महान् राष्ट्र किस ओर कदम बढ़ाते हैं। यह ग्रह-योग किसी विश्वयुद्धका सूचक नहीं है, इसलिए परमाणु-युद्ध का भय नहीं करना चाहिए।

रूसके सर्वोच्च सोवियत (प्रेसिडिय़म) में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं जो इस देशके सुप्रसिद्ध 'लोहेके पर्दे' तथा कट्टर-पन्थीको दूर करनेमें मदद पहुंचाएगी।

संयुक्त राज्य अमेरिकाकी जनता और नेता लोग विरोधी गुटसे अधिकाधिक सौमनस्य करनेकी चेष्टा करते रहेंगे जिसके फलस्वरूप बहुत दूर आगे चलकर १९६७ या उसके भी

बाद दोनों गुटोंके आपसी मतभेद दूर होंगे।

विश्व पर ग्रहयोग और सूर्यग्रहणके फलवर्णनके समाप्त करते हुए मैं यह कह देना चाहता हूँ कि मैं ऐसे किसी विश्व युद्ध की सम्भावना नहीं देख रहा हूं जिससे विश्व पर कोई व्यापक प्रभाव पड़े और परमाणुयुद्धकी आशंका करने की कोई स्थिति नहीं है। केवल इतना ही फलादेश किया जा सकता है कि हित-संघर्ष के चलते कुछ पड़ोसी देशोंके बीच सैनिक मुठभेड़ होती रहेगी। कुछ स्वार्थ-सम्बद्ध देश इन संघर्षोंके बीच कूदकर परिस्थितिको बिगाड़ सकते हैं। यह संकट जुलाई या अगस्त १९६१ से आरम्भ होगा और १९६३ के आरम्भ तक रह सकता है।

मेरे विनम्र विचारके अनुसार, इस संघर्षसे राष्ट्र-नायकों का ज्ञान और विवेक बढ़ेगा और फलस्वरूप संघर्षके अन्तमें परिस्थिति कुछ सुधरेगी।

साथ-साथ यह भी जानना आवश्यक है कि विभिन्न राशियोंमें उत्पन्न व्यक्ति-विशेषों पर इस ग्रहयोग तथा सूर्य-ग्रहणोंका क्या प्रभाव पड़ेगा। चूँकि यह क्षणिक (संक्रमण-कालीन) प्रभाव है, इसलिए मैं इन प्रभावोंका वर्णन चन्द्र की स्थितिसे करूँगा, न कि लग्नकी स्थितिसे। फिर भी यदि चन्द्र और लग्न दोनोंके स्थानसे अध्ययन करके दोनों निर्णयों पर विचार किया जाय तो और अधिकाधिक बातें प्रकट होंगी।

मेष—ग्रहयोग दशम स्थानमें होता है। नौकरी पेशे वालोंको सतर्क रहना चाहिए। उन्हें कड़ाईके साथ अपने नित्य कर्तव्य पर दृढ़ रहना चाहिए। नौकरीमें किसी प्रकार का परिवर्तन इन लोगोंके लिए खतरनाक है। यदि जन्म-कुण्डलीमें सूर्य दुर्बल स्थानमें है तो पिता और पितामहके स्वास्थ्य पर खूब सावधानी रखनी चाहिए।

वृषभ—इस राशिमें उत्पन्न व्यक्तियोंका जन्म लग्न भी यदि वृषभ ही हो तो उन्हें अधिक भय नहीं करना चाहिए। उन्हें खास तौरसे कोई भी डर नहीं है।

मिथुन—अष्टम स्थान कष्टका है, इसलिए स्वास्थ्यकी हिफाजत सर्वाधिक सतर्कताके साथ करनी होगी, और खास करके तब जबकि कोई भी जन्म कुण्डलीमें अष्टम स्थानमें पापग्रह (?) हो। आर्थिक स्थिति पर भी बुरा असर पड़ेगा। उन्हें अपने स्वास्थ्यके ऊपर बहुत रुपया खर्च करना पड़ेगा।

कर्क—इस अवधिमें जीवनसंगीके स्वास्थ्य और मनकी हिफाजत सतर्कतासे करनी चाहिए। यदि जन्मकुण्डलीमें लग्न या सप्तम स्थानमें कोई पापग्रह हो तो पूर्ण सतर्क रहना चाहिए और इस स्थान सम्बन्धी खतरेसे बचना चाहिए। अच्छा हो कि आप अपने मनको भी नियंत्रित रखें, वर्ना आप हड़बड़में कोई काम करके झगड़ा मोल लीजिएगा; और उचित समयमें कुछ सावधानी बरती जाय तो आसानीसे रोका जा सकता है।

सिंह—इस राशिमें उत्पन्न व्यक्तिका लग्न भी यदि सिंह हो तो उस पर इस ग्रहयोगका वैसा बुरा असर नहीं पड़ेगा और उसे अधिक घबरानेकी जरूरत नहीं है।

कन्या—अपनी सन्तानोंके स्वास्थ्य पर ध्यान रखें, खास कर यदि आपकी जन्म कुण्डलीमें बृहस्पति कष्ट स्थान में हो। हृदय रोगसे पीड़ित व्यक्ति अपने स्वास्थ्यकी हिफाजत करें। छात्र लोग अन्य कार्योंको छोड़कर अपना ध्यान पढ़नेमें ही लगावें, वर्ना उन्हें परीक्षामें असफलताकी आशंका है।

तुला—अचल सम्पत्तिवाले व्यक्तियोंको अपनी भूमि-सम्पत्ति पर अधिक ध्यान रखना चाहिए। सिफारिश है कि वे अचल सम्पत्तिके बारेमें मुकदमेबाजीमें न फँसे। लगानकी वसूलीमें बाधा हो सकती है। असामियोंके साथ सद्भाव रखनेका प्रयास करें। दुर्बल स्वास्थ्यके माता-पिताओं पर खास करके माता पर, विशेष ध्यान रखें।

वृश्चिक—परिवार-वर्गमें कुछ विग्रह अवश्यम्भावी है। दूसरे आदमीकी भावनाके प्रति कुछ अधिक व्यावहारिक बनने की कोशिश करें। परिवारके लोगोंके साथ मतभेदसे बचें।

धनुः—धनके सम्बन्धमें आपके लिए यह समय अच्छा नहीं है। बजट बनाने और उस पर कड़ाई के साथ टिके रहनेकी आदत डालिए। सभी अनावश्यक खर्चोंसे बचिए। अष्टम स्थान कष्टगत है और आपके लग्नेश भी कष्ट स्थान में हैं और दुर्बल हैं। स्वास्थ्य पर आपका ध्यान जरूरी है।

मकर—जिनकी जन्म कुण्डलीमें चन्द्रमा दुर्बल हों उन्हें अपने स्वास्थ्य पर तथा जीवनसंगीके स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देनेकी आवश्यकता है। यदि जन्मपत्रीमें शनि भी दुर्बल हैं तो साढ़े सातीका प्रभाव सर्वाधिक अहितकर होगा।

❀ स्वतन्त्र पार्टी ❀

[ले० —श्री बेंगलौर वैंकट रमन, सम्पादक 'एस्ट्रॉलाजिकल मेगजीन']

तथाकथित पूंजीवादी देशों में भी १६०० के बादसे ऐसे कानून बनाए गए जो समाजवादी कहे जा सकते हैं। यद्यपि कार्लमार्क्स और उनके बीच कोई मेल नहीं है। बैंकों और उद्योगों पर नियंत्रण न होते हुए भी पूंजीवादी देशोंमें, इस बातका प्रयत्न किया गया है कि सामान्य जन के साथ सामाजिक न्याय हो। किन्तु इस देशमें बात भिन्न है। अवाड़ी कांग्रेसके बादसे समाजवादी नमूनेकी व्यवस्था स्थापित करनेकी बात कही जा रही है। किन्तु इस समाजवादी व्यवस्थाका अर्थ यह नहीं है कि सबको समान अधिकार प्राप्त हों और सबको उन्नति करनेका समान अवसर प्राप्त हो। इसके विपरीत इसका उद्देश्य राज्य कामयोजक हो, और प्रत्येक व्यक्ति इच्छा व अनिच्छासे उसका नौकर होकर रहे। कांग्रेसी छापके समाजवादके पीछे कोई दर्शन नहीं है। कांग्रेस राष्ट्रीय संस्था न रहकर धीरे-धीरे स्वार्थ साधकोंकी संस्था होती जाती है। यह पक्ष भारतीय संस्कृति का भारतीय परम्पराके आधार पर, विकास करनेकी स्वतंत्रता भी जनताको नहीं देता। इसने अनेक ऐसे कानून बनाए हैं जिनके कारण हिन्दू समाजका ढांचा बिखर गया है। ऐहिकता या लौकिकताके नाम पर धर्म और ईश्वर तकका बहिष्कार कर दिया गया है। अब कृषि आर्थिक व्यवस्थाको परीक्षण का विषय बनाया जा रहा है, देखा जा सकता है कि कांग्रेस की कुण्डलीमें सूर्य १० में है, और शनिकी इस पर दृष्टि है और यह 'अपकीर्ति योग' बन रहा है। कांग्रेस जनताको गुमराह कर रही है और यह जानती हुई भी कि वह पूरी नहीं कर सकती, जनताको झूठी-झूठी आशा दिलाकर अपना अनुसरण करनेके वास्ते उसको बहका रही है।

१६५७ से कांग्रेस 'मारक' दशामें से गुजर रही है। बुधकी दशा इसके लिए घातक है। कांग्रेसकी कुण्डलीमें बुध ४थे, ७वें का अधिपति होकर ६ में स्थित है। २ का (और ६वें का) स्वामी मंगल है और उसकी दृष्टि बुध पर लग्नसे है और ३ और ८ पर चन्द्रसे दृष्टि है। कांग्रेस अब तक जीवित रही क्योंकि इसका आधारभूत ढांचा मजबूत और दृढ़ है—लग्नका स्वामी १०, ५, २ और ६, ये सब लग्न पर दृष्टि किए हुए हैं। मनका भी बुध आंशिक स्वामी

सावधान रहिए और जीवनके किसी भी क्षेत्रमें मार्गच्युत मत होइए। मानसिक आनन्दका अनुभव अधिक होगा। कभी-कभी आपकी पीड़ा असह्य हो उठेगी। साहसी बनिए। प्रसन्न रहनेकी चेष्टा कीजिए। मानसिक पीड़ाके कारण आपकी पाचनशक्ति बिगड़कर आपका स्वास्थ्य बिगाड़ सकती है। सतर्क रहिए और उत्तेजना तथा हड़बड़ीमें कोई निर्णय करनेसे बचिए। विचारवान् बनिए और गुरुजनों तथा हितैषियोंकी सलाहके अनुसार चलिए।

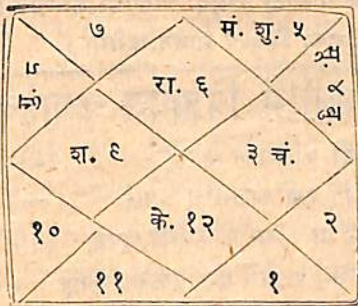
कुम्भ—ग्रहयोग और ग्रहण द्वादश स्थानमें पड़ते हैं जो व्ययका स्थान है। खर्च करनेमें विवेक रखिए और एक पैसा भी खर्च करनेसे पहले दो बार सोच लीजिए; वर्ना यह कहावत आप पर लागू हो जायगी—

जो खरीदेगा अभागा बे-जरूरी चीज भी।
बेचनी होगी उसे एक दिन जरूरी चीज भी। यदि बारहवाँ स्थान या उस स्थानके अधिपति आपकी कुण्डलीमें दुर्बल हैं तो, मामले-मुकदमेके बारेमें सावधान रहिए। आपको विवादसे बचनेकी सलाह दी जाती है। कचहरीसे दूर रहिए।

मीन—यह ग्रहयोग आपके लिए उतना अशुभ नहीं है और आप पर हो सकता है इसका कुछ भी असर न पड़े। आपके विषयमें इसका फल बाधक हो सकता है, किन्तु घातक नहीं। यद्यपि सरकारी नौकरीवाले लोगोंके लिए यह अनुकूल समय नहीं है, क्योंकि बृहस्पति कष्टगत है और दुर्बल है, तथापि कोई खास कठिनाईकी आशंका नहीं करनी चाहिए। फिर स्वयं किसी कठिनाईको उत्पन्न नहीं करना चाहिए। नित्यचर्याका कड़ाईके साथ पालन करनेसे आप कष्ट से बच जाएँगे। बाल-बच्चोंका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, किन्तु उनके प्राणों पर किसी तरहका खतरा नहीं है।

है। मंगल दशामें बुधका 'मारक' होनेसे कांग्रेस प्रश्नों व समस्याओं पर दूरदर्शिता और दूरदृष्टिसे विचार न करेगी। राहु अब कन्यासे जा रहा है—मंगल, चन्द्र और लग्नाधिपतिकी क्रांतिवृत्तीय स्थिति और—सूर्यमें शनिका संक्रमण, सूचित करता है कि कांग्रेसकी बुद्धि अभी और भ्रष्ट होगी। स्पष्ट है कि बुध दशाके रहते हुए जनमतकी अवहेलना करनेके कारण और अधिक विघटित होगी और राजनीतिक शक्तिके रूपमें इसका अन्त हो जायगा।

यह संयोगकी बात न माननी चाहिए कि कांग्रेस-सूर्य जब अस्त हो रहा है तो पूर्व दिशामें एक अन्य सूर्यका उदय हो रहा है—स्वतंत्र पार्टीका लग्न कन्या है, जो कि कांग्रेसकी कुण्डलीमें ८वें में है और उसकी मृत्युका सूचक है, और यही स्वतंत्र पार्टीके लिए उदयका चिन्ह है। इसका जन्म बम्बईमें १ अगस्त १९५९ को प्रातः १०-३० बजे हुआ। इसकी स्थापना कांग्रेसके वैयक्तिक समूहका अन्त करने, वैयक्तिक स्वतंत्रताकी समाप्ति करनेकी नीतिके विरोधमें हुई है।



कुंडलीको देखनेसे ज्ञात होगा कि इसमें आन्तरिक शक्ति है। कन्या लग्न है और स्वामी बुध अपने अश्लेषा नक्षत्रमें है और पर्याप्त बलवान् है। सूर्य और चन्द्रके साथ 'परिवर्तन' होनेसे प्रबल है और चन्द्र ११वें घरका स्वामी है। चन्द्र राहुसे केन्द्रमें है और शनिकी उस पर दृष्टि है। यह सर्वथा वांछनीय नहीं है। यह सूचित करता है कि पार्टीके भविष्यका निर्माण करनेवालोंमें दूरदृष्टि नहीं है। परन्तु यह उपेक्षनीय है क्योंकि चन्द्र कल्याणकारी है। पांच ग्रह, शीघ्र व तीव्र वेगगामी क्षितिजमें दृश्यमान हैं, यह एक महत्वपूर्ण उल्लेखयोग्य बात है। चूंकि लग्न बलवान् है वह स्वग्रही है और इस पर बृहस्पतिकी दृष्टि है। इसका अर्थ है कि इसमें आन्तरिक शक्ति है और यह पक्ष दीर्घायुः होगा। बुध १०वें या कर्मका स्वामी है, बृहस्पतिकी इस पर दृष्टि होना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस पार्टीकी सफलता और सिद्धि इसमें प्रकट होगी कि जनता अपने नैतिक अधिकारोंसे अवगत होगी और जनताका मन भौतिकवादकी ओरसे विमुख होगा। देखनेकी बात यह है कि नवमभाव और दशमेश पर बृहस्पतिकी दृष्टि है। ९वां सामान्य भविष्य व भाग्यका सूचक है और १०वां कर्मका द्योतक है। अतः यह पार्टी बड़ी-बड़ी बातें नहीं बनायगी। फलतः स्वतंत्र पार्टीका प्रोग्राम यथार्थवादी होगा और अधिकांश भारतीयोंको यह स्वीकार होगा। १०वां घर अनुभूति और प्राप्तिका भी है। १०वें के स्वामीकी स्थिति ११वें में है और यह 'परिवर्तन' का है और ११वें पर बृहस्पतिकी दृष्टि है। इसका अर्थ है कि नई पार्टी पुराणपंथी होगी और प्राचीन भारतके राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक मूल्योंको स्वीकार करेगी। यह कम्युनिस्ट ढांचेके अनुरूप उद्योगोंके अविवेकपूर्ण राष्ट्रीयकरणके विरोधमें जनताकी भावना जगायेगी। दूसरे घरका स्वामी शुक्र वस्तुतः १२वें में है और ३ और ८ के स्वामी मंगलके साथ है, अतः दुर्बल है। किन्तु शुक्र बलवान् है, क्योंकि वह अपने नवांशमें है। यह इस मान्यताके विपरीत स्थितिको बताती है कि पार्टी प्रतिगामी व निहित स्वार्थवर्गके हाथकी कठपुतली है। शुक्रकी अन्तर्निहित शक्ति बताती है कि इसको धनकी कमी नहीं रहेगी और यह धन इसके साथ सहानुभूति रखनेवालोंसे प्राप्त होगा, कांग्रेसके समान धनी उद्योगपतियोंसे नहीं, जो कांग्रेसको चन्दा देकर उससे कृपा प्राप्त करते हैं और अधिक धनी हो जाते हैं।

स्वतंत्र पार्टीके अपने क्रूर ग्रह हैं। 'द्विर्द्वादश' (२ और १२वां) है और यह इस बातकी सूचक है कि प्रारम्भमें इसको विफलता मिलेगी, निराशा लाभ होगी और संघर्ष करना पड़ेगा। लग्नेश १२वें के स्वामीके साथ है, और नवें का स्वामी ८वें से पीड़ित है और यह 'अरिष्ट योग' है। किन्तु लग्नेशके बलवान् होनेके कारण यह प्रभावशाली सिद्ध न होगा।

लग्नमें राहु है। वैयक्तिक कुण्डलीमें इन दोनोंका साथ होना शुभ नहीं माना जाता और समझा जाता है कि इस

ग्रहका व्यक्ति "क्रूर निर्दयी या नीतिविहीन होता है।" किन्तु नवांशके लक्षणोंसे मिलाने पर इनमें कुछ संशोधन करनेकी आवश्यकता है। यहां लग्न कन्या है और नवांश है वृष, अतः यह "मौलिक विचार मानसिक स्वतंत्रता और बौद्धिक योग्यताका सूचक है। राहु निस्सन्देह अशुभ ग्रह है और बुधका सहभागी हो सकता है। लग्नके साथ राहुका होना बताता है कि यह पक्ष 'स्वतंत्रता, समानता और उन्नति का समर्थक होगा। बुध बुद्धि, विचारोंकी स्पष्टता और अभिव्यक्तिका ग्रह है। अतः पार्टीका दृष्टिकोण यथार्थ-वादी होगा।

राहुकी महादशा और राहुकी अन्तर्दशा ४ सितम्बर १९६१ तक चलेगी। 'भावार्थ रत्नाकर' के अनुसार जब राहु लग्नमें होता है, तब यह न केवल 'राजयोग' प्रदान करता है, बल्कि अपनी 'दशा' में समृद्धि भी प्रदान करता है। लग्नेश बुध और १०वां और चन्द्र (११वें का स्वामी) की स्थिति इस बातको प्रगट करती है कि स्वतंत्र पार्टी अत्यधिक प्रभाव, और शक्ति प्राप्त करेगी और कांग्रेस की शक्तिशाली प्रतिपक्षी होगी।

दूसरे और १२वेंका स्वामी मंगल है और यह 'भाइयों की मृत्यु' को बताता है; परन्तु १२वें का मंगल 'भाइयों की समृद्धि' को बताता है। इसका अर्थ है कि इस समय विद्यमान अनेक पार्टियां इसमें विलय हो जायेंगी। इससे स्वतंत्र पार्टीका और अधिक बल बढ़ेगा।

बृहस्पतिकी अन्तर्दशा राहुकी दशाके समाप्त होनेके बाद शुरू होती है और यह ४ सितम्बरसे २८ जनवरी १९६४ तक रहेगी। यह समय पार्टीके लिए महत्वपूर्ण होगा। ४थे और ७वें का स्वामी बृहस्पति ३ में है और ९वें और ११वें पर इसकी दृष्टि है और इसके अतिरिक्त यह राहुसे तीसरे पर है। 'नवांश' में भी बृहस्पतिकी स्थिति शुभ है। फलतः अगले निर्वाचनके फलस्वरूप—यदि निर्वाचन हुआ—विधानसभाओंमें स्वतंत्र पार्टीके अपने ब्लाक होंगे, बल्कि अन्य विरोधी दल भी इसमें विलय हो जायेंगे। 'बृहस्पति' के कारण पार्टीका नेतृत्व और अधिक शक्तिशाली होगा। कांग्रेसके अनेक बड़े नेता कांग्रेसको छोड़कर इसके प्लेटफार्म से उसको चुनौती देंगे। शासक पार्टीको अनेक धक्के लगेंगे। लग्न पर शनिकी दृष्टि है, अतः अपनी की गई आलोच-नाओंसे यह लाभ उठायगी। लग्न एक व्यक्तिको सूचित करता है। राहु और शनि इस पर केन्द्रित हैं। किन्तु इन दोनोंकी एक दूसरे पर न तो दृष्टि है और न दोनों एक-साथ हैं। अतः राहुकी उग्र प्रकृति इसके कारण शान्त हो गई है। अतः पार्टीका प्रोग्राम 'वैयक्तिक प्रेरणा, साहस और शक्ति' को नष्ट न करेगा। प्राथमिकता जनताकी प्रारम्भिक आवश्यकताओं, अन्न, वस्त्र, घर आदिको दी जायगी। विवादग्रस्त विषयोंसे यह अपनेको दूर रखेगी।

'बालारिष्ट' के प्रारम्भमें कुछ आघात सहनेके बाद पार्टी प्रभावशाली एवं शक्तिशाली आन्दोलनका रूप धारण कर लेगी, और भारत जिन गुणों और बातोंके कारण गौरव-शाली है, उन तत्वोंको दृढ़ करनेमें समर्थ होगी और हानि-कारक पश्चिमी राजनीतिक एवं आर्थिक विचारोंका प्रतिरोध कर सकेगी। राहुकी वर्तमान दशामें पार्टी अपना प्रभाव और अपनी शक्ति बढ़ानेमें समर्थ होगी। बृहस्पतिका प्रभाव प्रारम्भ होने और १०वें पर शनिकी दृष्टि पड़नेके बाद स्वतंत्र पार्टी शासक पार्टीकी वस्तुतः प्रतिपक्षी हो जायगी और जनता उसको कांग्रेसका विकल्प मानने लगेगी।

* श्रावण मासमें जन्मे प्राणियोंका फल *

१५ जुलाईसे १४ अगस्त तक

[ले०—प्रो० ईश बी. एस. सी. आई. प्रभाकर पामिस्ट एस्ट्रालाजर और रमलज्ञ]

यदि कोई मनुष्य इस समयके बीचमें उत्पन्न हो अथवा सौर श्रावण मासमें उत्पन्न हो तो उस पर चन्द्र ग्रह और कर्क राशि का प्रभाव होता है। इसका चिन्ह जल है। यह भावनाशील होता है और किसीके दुःखसे एकदम दुखी हो जाता है। यह परिश्रमी और तन्मय होकर कार्य करने वाला होता है। यह प्रत्येक स्थान पर घरमें और बाहर भी शान्ति देखना चाहता है। यह कलह-कंकास तो बिलकुल भी पसन्द नहीं करता। यह जिसको प्रेम करता है, उससे भी उतना ही प्रेम चाहता है। यह यात्रा करने का बहुत शौकीन होता है अथवा इसे अपने जीवनमें बहुत सी यात्रायें करनी पड़ती हैं। इसे प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त रुचिकर लगते हैं। हो सकता है इसे बहुत लम्बी यात्रायें भी करनी पड़े, फिर भी इसे जलयात्रासे सावधान रहना चाहिये। यात्रा करनेसे पूर्व किसी अच्छे विज्ञसे मन्त्रणा करके ही यात्रा करनेका प्रयास करे तो अत्यन्त शुभ होगा।

यह पुत्र, पौत्र, स्त्री, मित्र इत्यादियोंसे सुखी, पिता की आज्ञा न मानने वाला, विख्यात, कफी, दाता, गुणी, सुजनतासे रहित, समय देखकर कार्य करने वाला, धनी होते हुए भी निर्धनोंकी तरह फिर भी दोनोंमें माननीय होता है।

यह वहमी और अस्थिर विचारों का होता है। यद्यपि यह घरमें रहना पसन्द करता है, फिर भी रमणीय दृश्यों को देखनेकी और देशाटनकी लालसा इसे दूर खींच ले जाती है। यह अपने कार्यमें किसीकी रुकावट पसन्द नहीं करता। यदि यह कार्य कर रहा हो और कोई आकर रोड़ा अटकाये अथवा टीका-टिप्पणियां करना शुरू करे तो इसे शीघ्र ही क्रोध आ जाता है, किन्तु यदि इसे प्रोत्साहन दिया जाय तो यह आश्चर्यजनक विधियों से उस कार्यको सम्पूर्ण करता है।

यह रोमाञ्चक कार्योंको करनेका बहुत इच्छुक होता है, और इसे रोमाञ्चक घटनायें देखनेका और पढ़नेका बहुत शौक होता है। डिटैक्टिव (गुप्तचर) का भी कार्य करनेमें प्रवीण हो सकता है। एक शिकारी अथवा पुलिसमें किसी अच्छे पद पर रह कर कार्य करनेमें समर्थ हो सकता है। प्रेतात्मविद्या, दिव्यज्ञान, हिप्नोटिस्म इत्यादिसे अपनी शक्तियोंका विकास कर सकता है और मध्यस्थका कार्य कर सकता है। अस्थिर, शीघ्र निर्णय पर न आने वाला होता है और इसमें आत्मविश्वासकी न्यूनता पाई जाती है। भक्ति करनेवाला, भद्र, कल्पनाशील, सहानुभूति रखने वाला, भावनाशील, योग्य, बुद्धिमान, रोमाञ्चक, साहसी, मानसिक विचारोंमें भ्रमण करने वाला और शारीरिक अवस्थामें निर्बल होता है।

स्वास्थ्य—इसे प्रायः मानसिक विचारोंमें तल्लीन रहनेसे नस सम्बन्धी रोगके होनेका भय रहता है, और मन पर भी इसका काफी प्रभाव पड़ता है। इसके पेटमें, गलेमें, हृदय और फेफड़ोंमें खराबी होनेका भय रहता है। सर्दी, खांसी, जुखाम, दमा, न्यूमोनिया इत्यादि होने का भी भय रहेगा, अतः इसे बहुत सावधान रहना चाहिये। इसे वहमी विचार और चिन्ता अपने मनसे निकाल फेंकने चाहिये। इसे तरबूज, शलगम, पत्तागोभी, सलाद इत्यादि अपनी खुराकमें प्रचुर मात्रामें खाना चाहिये।

यदि यह पुनर्वसु नक्षत्रके चौथेचरणके सूर्यमें उत्पन्न हो तो इसे रोगोंमें कल्केटिया फोस्फोटिका नामक नमकका उपयोग करना चाहिये। यदि पुष्य नक्षत्रके सूर्यमें हो तो नेट्रम सल्फारिकम नामक नमकका उपयोग करना चाहिये। यदि अश्लेषा नक्षत्रके सूर्यमें हो तो कल्केटिया सल्फरिकम नामक नमकका उपयोग करना चाहिये। २ रा, ११ वां, २७ वां, १४ वां, १८ वां, २२ वां, २४ वां, ४३ वां, २५ वां, ३८ वां, ५६ वां, ६५ वां वर्ष स्वास्थ्यके लिये सावधानी वाले हैं। २५ दिसम्बर से २४ फरवरी तक लगभग, २५ जून से

२४ जुलाई तक लगभग का समय खराब रहेगा।

जीवन साधन—यह जेल, स्कूल (विद्यालय), औषधालय, पानी के जहाज पर नाविक, कैमिस्ट, ड्रगिस्ट, कम्पाउण्डर, डाक्टर, नर्स, वैटरनरीमें प्रोफेसर अथवा अध्यापकका कार्य कर सकता है। यह पुलिसमें गुप्तचरका भी कार्य कर सकेगा। जनताको सहायता करने वाली किसी भी संस्थामें कार्य कर सकता है। यह प्रेतात्मविद्या, हिप्नोटिज्म और मध्यस्थ आदिके कार्योंमें भी लग सकता है। चाहे यह किसी भी काममें क्यों न पड़ा हो, इसे प्रोत्साहित करनेसे अपना कार्य पूर्ण करवा सकते हो और यह उस कार्यको बहुत बुद्धिमानीसे नई २ विधियोंसे उसे सम्पूर्ण करके आपको सन्तुष्ट करनेका प्रयास करेगा, किन्तु इसके कार्यकी ठीका-टिप्पणी करना कार्यको व्यर्थ बनाना होगा। यह प्रशंसाका इच्छुक होता है।

भाग्य—यह एक अच्छा परिश्रमी, साहसी, तन्मय होकर कार्य करनेवाला होनेसे अपने भाग्यको चमका सकता है। इसके भाग्यमें कई तरहके परिवर्तन होते हैं। प्रायः इसके जीवनमें प्रत्येक १२ वर्ष पश्चात् परिवर्तन होता है। इसके लिये १५ नवम्बरसे १४ दिसम्बर तक लगभग, १५ जनवरीसे १४ फरवरी तक लगभग, और १५ मार्चसे १४ अप्रैल तक लगभगके दिन प्रत्येक वर्षमें शुभदायक हैं। इसमें इसका स्वास्थ्य, मन और भाग्य भी अच्छा रहेगा। इन्हीं दिनोंमें अच्छा परिश्रम करनेसे यह अपने भाग्यको चमका सकता है।

यदि यह किसी भी कार्यको २, ११, २० और २९वें दिनोंमें, किसी भी मासके चाहे वे क्यों न हों, प्रारम्भ करे तो काफी लाभ होगा। किसीसे मिलना, पत्र इत्यादि लिखना, यात्रा इत्यादि सब इन्हीं दिनोंमें करनेसे लाभ होगा। यदि इन्हीं तिथियोंमें रविवार, सोमवार और शुक्रवार पड़े तो और भी शुभदायक होगा, वैसे ये दिन प्रत्येक सप्ताहमें अच्छे हैं। १, ४, ७, १०, १३, १६, १९, २२, २५, २८ और ३१ तिथियाँ भी कार्यके लिये अच्छी हैं। भाग्यशाली नं० २ है।

इसे अपना स्वास्थ्य अच्छा रखनेके लिये और मनकी शान्तिके लिये मक्खनके रंगके, श्वेत, फीका, नीला और फीके हरे रंगके कपड़े पहनने चाहिये, और गुलदस्तों, चादरों, पर्दों इत्यादियोंमें भी इन्ही रंगोंका उपयोग करना बहुत लाभदायक होगा।

इसको अंगूठी गलेके हार इत्यादिमें मोती, चन्द्रमाकी तरह शुभ्र पत्थर अथवा हीरा लगवा कर पहनना चाहिये. इससे भाग्यमें काफी शुभ परिवर्तन होगा।

मित्र—इसे अपने मित्र बनानेमें बहुत सावधानी रखनी चाहिये। इसके मित्र प्रायः १५ जनवरीसे १४ फरवरी, १५ मार्चसे १४ अप्रैल, और १५ नवम्बरसे १४ दिसम्बर तक लगभगके समयमें उत्पन्न होनेवालोंमें से होते हैं। अथवा १, २, ४, ६, ७, ८, ११, १२, १४, १६, १८, २०, २२, २४, २६, २८, ३०, ३१ और १३वीं तिथियोंमें चाहे वह किसी भी मासकी क्यों न हो, उत्पन्न मनुष्यसे मित्रता हो सकती है। यद्यपि इसके मित्र तो बहुत होते हैं, किन्तु गाढ़ मित्र कोई विरला ही होता है।

पाणिग्रहण—इसे अपनी छोटी आयुमें और शीघ्र विवाह नहीं करना चाहिये। जब तक कि यह पूर्णरूपेण उस कन्यासे अथवा कन्या उस मनुष्यसे सन्तुष्ट न हो जाय, विवाह नहीं करना चाहिये, अन्यथा पीछे पछताना पड़ेगा। यदि यह शीघ्र विवाह करना भी चाहे तो इसे अपने अस्थिर, भावनाशील, और सहानुभूतिके विचारोंको दूर करकेकी विवाह करनेकी स्वीकृति देनी चाहिये अथवा विवाह करना चाहिये। खूब सोच विचार कर पाणिग्रहण करना इसके लिए लाभदायक होगा। इसके लिए अच्छा तो यह होगा कि यह १५ जनवरीसे १४ फरवरी तक लगभग, १५ मार्चसे १४ अप्रैल तक लगभग अथवा १५ नवम्बरसे १४ दिसम्बर लगभगके मध्यके समयमें उत्पन्न कन्यासे पाणिग्रहण करना बहुत ही शुभप्रद होगा। और इसकी गृहस्थी सुखमय व्यतीत होगी। जो कन्या १५ जुलाईसे १४ अगस्त तक लगभगके समयमें उत्पन्न हो उसे ऐसे वरसे विवाह करना चाहिए जबकि चन्द्रमा कर्क, वृश्चिक, मकर अथवा मीनराशिमें हो और वर इस समयमें उत्पन्न हुआ हो तो इसकी गृहस्थी बहुत ही सुखमय और सन्तानयुक्त होगी।

यदि युवक या युवती कर्क लग्नमें उत्पन्न हों तो उन्हें ऐसेसे प्रणय करना चाहिए जो कि जब गुरु रोहिणी हस्त या श्रवण नक्षत्रमें हो। या शुक्र—पुनर्वसु विशाखा वा पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्रमें हो। अथवा चन्द्रमा या सूर्य रोहिणी हस्त विशाखा पुनर्वसु पूर्वाभाद्रपदा श्रवण कृतिका उत्तराफाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्रमें हो, उत्पन्न हो तो गृहस्थ जीवन आनन्द और उल्लासमय रहेगा।

संहिता ग्रंथ, और अष्टग्रहीके समय देशकी स्थिति

[सूर्य नारायण व्यास]

भारतीय ज्योतिर्विज्ञानके तीन भाग हैं, गणित, फलित और संहिता। गणित और फलित के अनेक ग्रन्थ विभिन्न आचार्यों द्वारा निर्मित है, और अधिकांश सुलभ भी हैं। संहिता-ग्रन्थों में वाराही-संहिता सुप्रसिद्ध है। किन्तु इस संहिताके अतिरिक्त जो संहिताएं आज देश के विभिन्न भागों में प्रचलित हैं उनमेंसे उत्तर भारतमें भृगु संहिता है, दक्षिण भारतमें नाड़ी संहिता, सत्य संहिता कई भागोंमें विभक्त होकर उन प्रदेशोंकी विधिसे ताड़पत्र या कागज पर लिखित है। पश्चिममें सुर्यसंहिता, छाया-संहिता भी उपलब्ध है। दक्षिण की सत्य संहिता केवल एक ही प्राप्त है, और वह महत्वपूर्ण कृति है। वराहमिहिरसे पूर्ववर्ती सत्याचार्य द्वारा वह निर्मित है। स्वयं वराहमिहिरने सत्याचार्यके कथनको सर्वथा सत्य कहा है।

'सत्येतु सत्योदितम्'

यह ग्रन्थ ताड़पत्र पर लिखित हैं। भृगुसंहिताके नामसे अनेक ग्रंथ कई जगह मिलते हैं। उनमें कुछ प्रतियोंमें जो कुण्डलियोंका वर्णन मिलता है वह आश्चर्य विमुग्ध बना देता है। मुझे कुछ प्रतियोंके देखनेका अवसर मिला है। उनमें कुछ कुण्डलियोंके वर्णन देखकर अवाक् रह जाना पड़ता है। सत्य संहिता भी मैंने देखी है, और वास्तवमें वह अद्भुत ग्रन्थ है। ज्योतिषकी दृष्टिसे छोड़कर भी उसमें जो भारतीय सभ्यता और स्थितिका चित्रण है, वह अत्यन्त उपयोगी और अनुकरणीय है।

भृगुसंहिताके वर्णन व्यक्तिगत कुण्डलियोंके फलादेशसे सम्बन्धित होते हैं, तथापि व्यक्तिके साथ उनकी स्थितिकी चर्चा करते हुए देशकी दशाका भी दर्शन होता है। मेरे एक मित्र महाराजा की कुण्डली का वर्णन करते हुए उनकी अमुक अवस्थामें शासन-परिवर्तनका उल्लेख था, और उस परिवर्तित स्थितिमें नवीन विस्तृत भागके अध्यक्ष होनेकी स्पष्ट सूचना थी, यह वही समय सूचित था, जब भारत स्वतंत्र हुआ था, और राज्योंका विलीनीकरण हो गया था, तथा कतिपय नरेश विस्तृत-प्रदेशके 'प्रमुख' बनाए गए थे, इस प्रकार व्यक्तिके साथ देश स्थितिका भी संकेत प्राप्त होता था, दूसरे एक नरेशके लिए भी १९३९ ई० में मैंने नोट किया था कि वे अपने पिताकी तरह राज्यभ्रष्ट बन जाएगा, और यह भी सत्य ही था।

अष्टग्रह युतिका संकेत

आज कुछ समयसे देशके अधिकांश ज्योतिर्विद् सन् १९६२ में आनेवाली आठ ग्रहोंकी युतिको लेकर चिंता व्यक्त कर रहे हैं। अनेक पत्रोंमें इस पर पर्याप्त चर्चा चलती रहती है, कुछ लोग इस घटनाको जबकि अत्यधिक खराब समझकर महत्व देते हैं, तो कुछ लोग खराब तो बतलाते हैं, पर उतना नहीं। इस प्रकार मिश्र प्रतिक्रिया चल रही है। इस अष्टग्रह युतिको लेकर उक्त संहिताओंमें स्वतंत्र रूपसे कोई विचार प्रकट किया हो यह देखनेमें नहीं आया, संभव भी नहीं, क्योंकि इन संहिताओंमें व्यक्तिगत कुण्डलियों पर ही विचार होता है। अवश्य उसी संदर्भमें कुछ कहा जाए तो वह स्वाभाविक होता है। ऐसा एक उदाहरण हाल ही में मुझे देखने को मिला है, और वह इतना विचित्र है कि पाठकों, पंडितोंके समक्ष विचारार्थ रख देना उचित होगा।

हैदराबाद (आंध्र) के एक सज्जन जिनका नाम श्री वेंकटराव रायसम् है, मुझे सहसा मिलनेको आए, उन्होंने भर्तृहरिशतकके वैराग्य शतकका स्वतंत्र प्रकारसे अनुवाद किया है। उन्होंने अपनी यह रचना मुझे 'भेंट' की। चर्चाके समय ज्योतिर्विज्ञान पर भी बातें चल पड़ीं, इस पर उन्हें स्मरण हुआ कि भृगु संहितासे उन्होंने अपनी कुण्डली भी दिखलाई थी। एक कापीमें उनके पास उसका विवरण लगभग १००-१५० श्लोकोंमें अंकित था। मैंने उसे पूर्णरूपसे देखा, और पूछने पर विदित हुआ कि वह विवरण उनके जीवनके साथ अक्षरशः घटित हुआ है। उनके व्यक्तिगत वर्णनके पश्चात उसमें उनकी दशाओंके अनुसार आगेके जीवनका भविष्य सूचित किया गया था, और उनकी अवस्था के अनुरूप उनकी स्थितिका वर्णन करते हुए देशकी स्थिति पर भी कुछ श्लोक लिखे गए हैं। मैं उन श्लोकोंको पढ़

कर सहसा चौंक उठा, यह उसी समयका वर्णन है, जब आठ ग्रहोंकी युति होने जा रही है। संहितामें १९६२ सन् से कोई सम्बन्ध नहीं है। उसमें जिस सज्जनकी कुण्डली का वर्णन दिया जा रहा है, उनके ५७-५८ और ५९ वर्षकी अवस्थाके समयकी स्थितिका विवरण है, जो संयोगवश सन् १९६१-६२ में जुड़ जाता है।

श्री वेंकटराव जीका जन्म १९६० संवत्के भाद्रपद मास में हुआ है। तदनुसार भाद्रपद २०१६ संवत (सन् १९५९) के सितम्बर-अक्टूबर, में वेंकटरावजीका ५७ वर्ष आरम्भ होता है। १९६१ में ५८वां वर्ष लगेगा जो ६२ तक रहेगा।

उस समयका जो वर्णन भृगुसंहिताके श्लोकोंमें दिया है—वह मूलरूपमें यहां उद्धृत किया जाता है, अवश्य ही ये श्लोक प्रतिलिपिकारोंके क्रमसे अशुद्ध रूपमें है, परन्तु उनके संकेतसे जो सूचना मिलती है वह विचारणीय अवश्य है।

वे श्लोक ये हैं—

मुनिवाण वसु वाणांतरे सूर्ये सूर्यान्तरे तदा,
५७ ५८
भौमान्तरे तथा राहौ काल कूटाऽखिलं धरा।
विश्वक्रान्तिश्च संघर्षो युद्धाग्निः प्रलयंकरा।
दिव्यास्त्रादि प्रयोगश्च जन-धन हानिर्महाभवेत्।
विविध ज्ञानयोगेन विकासं, मानवी बलम्।
सभ्यता संस्कृतिःसर्वाः क्षणे सर्वं पराभवम्।
जलस्थल काशमध्ये गिरि कानन गव्हरे।
सर्वत्र रणकं घोरं तुमुलं तदंग ताण्डवम्।
गोचरे स्वगृहे युद्धं स्व-परिजन मानवम्।
जल चराण्डज पिंडाख्य मखिलं ब्रह्मांड तावकम्।
प्रकृति-पुरुषं रणाक्रांतं युद्धलिप्सा रणांगणम्।
प्रांगणे विश्व ब्रह्मांडं रण नृत्य प्रदर्शनम्।
एवं दिग्वर्ष प्रथमे दिग्वर्षे पुरतश्च वै।
१०
रण चंडी तांडवं च रक्त मृत्यु विकम्पनम्।
....

सहयोग सम्मिलितः सर्वे राष्ट्र शत्रु पराजितः
शासनं त्रिविधाङ्गस्यात् शासकानाम् परिवर्तनम्॥

यह वर्णनके मध्यभागके श्लोक हैं, आगे पुनः व्यक्तिगत चर्चा हुई है।

इन श्लोकोंको अशुद्ध रहते हुए भी आशय बहुत स्पष्ट है—

अर्थात्—५७ और ५८ वर्षकी अवस्थाके आगे जब सूर्यमें सूर्यकी अन्तरदशा रहेगी, तथा भौम और राहुका अन्तर रहेगा (यह दशा वेंकटरावजीकी १९६० से शुरू है, और १९६१-६२ में ५८ वर्षकी अवस्था रहेगी) तब सारी धरती कालकूट (विष) से भर जाएगी, विश्वमें क्रांति होगी, संघर्ष होगा, प्रलयंकर युद्धकी आग भड़क उठेगी। दिव्य शस्त्रास्त्र (दिव्यसे मतलब आकाशमें छोड़े जानेवाले अस्त्र) का प्रयोग होगा, जन और धनकी हानि होगी। अनेक ज्ञान के संयोगसे मानव बल विकसित होगा। सारी सभ्यता तथा संस्कृतिका क्षण भरमें नाश होता दिखाई देगा। जल, स्थल, आकाश, जंगल, पहाड़, खाई, खन्दकोंमें सभी जगह घोर युद्ध होगा, स्वजन और परजनमें जलचर, अण्डज पिंडज, तथा समस्त ब्रह्माण्डमें तथा पंचतत्वोंमें, प्रकृति, पुरुषमें रण आक्रांत रहेगा। रणांगनमें युद्ध लिप्सा होगी। विश्व एवं ब्रह्मांडके प्रांगणमें रणचण्डीका नृत्य होगा। इस प्रकार पहिले १० वर्षमें हाल रहेगा, अगले दस वर्षमें रणचण्डीका ताण्डव, खून और मृत्युके साथ कम्पन होगा।

बादमें अनेकोंके सहयोगसे राष्ट्रके शत्रुओंका पराभव होगा, शासन अलग-अलग अंगोंमें विभक्त होगा, शासनमें नया परिवर्तन होगा।"

यह जिस भृगुसंहितासे लिया गया है, कहते हैं यह प्रति आसामसे प्राप्त हुई थी, और उसकी पुरातन प्रति इस समय श्री केदारनाथ त्रिपाठी संडोरी गांव पो० रामपुर गोदी (अवध) में है।

आठ ग्रहोंकी युतिके समय जो अकल्पित भीषणताका संदेह किया जा रहा है, वह वर्णन चाहे आठ ग्रहोंकी युति को लेकर न कहा गया हो, परन्तु उसी समयको लेकर स्थितिकी भीषणताको अंकित करता है। अवश्य ही ग्रन्थ-कारकी दृष्टिमें उस समय होनेवाली ग्रह-युतिका भीषण रूप रहा है, क्योंकि यह व्यक्तिके फलाफलसे सम्बन्धित नहीं है, किन्तु व्यक्तिकी ५८ वर्षकी अवस्थाके समय जो दुनियाकी स्थिति होनेवाली है, उसका सहज एक भीषण संकेत है।

आश्चर्य यह है कि उक्त-संहितामें जो भीषणताका अंकन

हुआ है, वह सर्वथा आधुनिक-स्थितिका चित्र है। सभ्यताका नाश, दिव्य-अस्त्रोंका प्रयोग, शासन-परिवर्तन, दुनियाके जल-स्थल-आकाशमें नाशका ताण्डव यह किसी एक व्यक्तिकी कुण्डलीका नहीं, उस समय होनेवाली विनाशलीलाका संकेत है। भृगुसंहिताकी जिस प्रतिमें यह अंकित है, वह प्रति-लिपि आज ही की नहीं होगी, न वह आज ही जुड़ाया हुआ अंश होगा, क्योंकि वह एक व्यक्ति (वेंकटराव) की कुण्डलीके भावी वर्णनके साथ सहज परिस्थितिके संकेत रूप में आया है। इसलिए विस्मयजनक ही नहीं भीषणताका सूचक भी है। अष्टग्रहीके योगों पर विचार करनेवाले भृगु-संहिताके इस भीषणरूप पर भी विचार करेंगे, संयोगवश यह अष्टग्रह युतिके समयकी ही स्थितिका चित्र है।

शिक्षाप्रद कहानी—

❀ शील की शक्ति ❀

[लेखक—श्री भंवरलाल नाहटा]

नन्दनपुर नगरमें अरिमर्दन नामक राजा राज्य करता था। इसी नगरमें राजमान्य रत्नाकर श्रेष्ठी रहता था जो बड़ा धर्मात्मा था। प्रौढ़ावस्था प्राप्त हो जाने पर भी निस्सन्तान होने से दम्पतिने अजितबला देवीकी आराधनाकी जिससे उनके यहां पुत्रका जन्म हुआ। सेठने पुत्रका नाम अजितसेन रखा और बड़ा होने पर उसे कलाभ्यास कराया गया। एक दिन सेठ उसके विवाहकी चिन्ता कर रहा था कि उसी समय एक सेठ आया और उसने व्यवसायकी वार्ता करते हुए कहा कि मैं मंगलावती गया था। वहां भोजनके निमित्त जिनदत्त सेठ के यहां गया। अद्भुत लावण्यवती एक कन्याको देखकर मैंने सेठसे उसका परिचय पूछा तो उसने कहा—'यह मेरी पुत्री शीलवती समस्त कलाओंमें निष्णात और पशु-पक्षियों की भाषाओं को समझने वाली है। यदि कोई इसके योग्य उत्तम वर आपके ध्यानमें हो तो मुझेबतलाइये ताकि मैं इस ओरसे चिन्ता-मुक्त हो जाऊँ।' मैंने उसके समक्ष आपके सुपुत्र अजितसेनका नाम प्रस्तुत किया तो उसने अपने पुत्र जिनशेखरको आपके साथ संबन्ध पक्का करनेके लिये मेरे साथ भेजा है। मेरी राय में यह सम्बन्ध कर लेना सर्वोत्तम है। सेठने जिनशेखरको बुलाकर तिलकका दस्तूर करा लिया और शुभमुहूर्तमें बड़े ठाठके साथ अजितसेन और शीलवती का पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न हुआ। अजितसेन अपने व्यापारको देखता हुआ शीलवतीके साथ सुखपूर्वक काल-यापन करने लगा।

एक दिन रात्रि के समय शीलवती ने शिवा-शृगा-लिनी का शब्द सुना और वह घड़ा लेकर तत्काल घरसे बाहर निकल पड़ी। रत्नाकर सेठने उसे घनघोर रात्रिमें अकेली जाते हुए देखा। थोड़ी देरमें वापस आकर जब वह सो गई तो सेठ नाना विकल्प करने लगा। उसने प्रातःकाल होते ही अपनी स्त्रीसे शीलवतीके चरित्रके सम्बन्ध में प्रश्न किया। सेठानीने जब उसके शील, गुणादिकी प्रशंसाकी तो रातमें अकेली बाहर जानेकी बात उसने कही और स्वयं शंकाशील होने से पुत्रको भी स्थितिसे भिज्ञ किया। सेठने बहूका त्याग करनेके लिये पुत्रको राजी कर लिया और बहू से कपटपूर्वक कहा—'बेटी, तुम्हारे पिताने तुम्हें बुलाया है, अतः चलो तुम्हें छोड़ आऊँ।'

शीलवतीने अपने बुद्धि-बलसे सारी परिस्थिति जान कर भी श्वसुरकी आज्ञाको शिरोधार्य किया और उसके साथ रथमें बैठकर चल पड़ी। आगे जाने पर मार्गमें जब नदी आई तो श्वसुरने कहा—'बेटी! अपने जूते उतार दो, पानीमें भीग जावेंगे।' किन्तु शीलवतीने जूता पहिने ही नदी में प्रवेश किया। सेठने मनमें समझ लिया कि यह स्वेच्छाचारिणी है। थोड़ी दूर जाने पर एक हरे-भरे मूंगके खेतको देखकर सेठने कहा—'इस कृषकके घर बहुत से मूंग आवेंगे।' बहूने कहा—'अग्नि-दग्ध होने से कृषक के घर कुछ भी धान्य नहीं आवेगा।' सेठने आगेकी मंजिल

में एक बड़ा नगर देखकर कहा—'बहू ! इस बस्ती वाले नगरमें हम मुकाम करें ।' बहूने कहा—'यह नगर सूना है, यहां नहीं ठहरेंगे ।' श्वसुरने देखा यह सारा विपरीत बोलती है । थोड़ी दूर जाने पर घायल सुभटको देख कर सेठने कहा—'यह बड़ा शूरवीर है ।' शीलवतीने कहा—'पिता जी ! यह सत्त्वहीन और कायर है ।' श्वसुर मन-ही-मन जलता हुआ आगे चलने लगा । धूप चढ़ जानेसे एक वट-वृक्षकी छायामें श्वसुरने विश्राम किया तो शीलवतीने बट छाया छोड़कर मस्तक पर वस्त्र ओढ़कर धूपमें ही विश्राम किया । सेठने उसे छायामें बैठनेको कहा तो उसने सुनी-अनसुनी कर दी । सेठने देखा अब इसे कुछ भी कहना व्यर्थ है । वहांसे श्वसुर-बहू आगे गये तो एक आठ-दस घरोंकी बस्ती वाला छोटा-सा गांव आया । बहूने कहा—'हम इसी गांवमें ठहरेंगे ।' सेठने सोचा—'बड़े नगरको छोड़कर यहां ठहरना चाहती है । कैसी बुद्धिकी है यह ?' इतने ही में बहू का मामा आया और उसने भोजनादि द्वारा बड़ी आवभगत की । इसके बाद मध्याह्न हो जाने पर एक वृक्षके नीचे सेठने विश्राम किया । अब शीलवतीका पीहर निकट ही था । सेठ ने भोजन करना प्रारम्भ किया । रत्नाकर सेठ भोजन कर कपट-निद्रामें सो गया । इतने में कैरके वृक्ष पर एक कौवा बोला । शीलवतीने कहा—'हे कौए ! तुम अपनी उदर-पूर्तिके लिए बोलते हो, पर भाई ! मैंने आगे श्रृगालिनीका वचन माना तो मुझे पतिका वियोग हुआ, अब यदि तुम्हारा वचन मानूं तो पितृ-मिलनमें भी संदेह पड़ जायगा । मुझे बाल्यकालमें विद्याभ्यास करनेसे जो गुण प्राप्त हुए, वे दोष के कारण हो गये ।' श्वसुरने सावधान होकर पूछा—'बेटी ! इस बातका रहस्य बतलाओ ।'

शीलावतीने कहा—'उस रातको मैंने श्रृगालिनीके वचनोंसे प्राप्त शकुनके अनुसार घड़ा लेकर नदीको प्रस्थान किया और नदीमें बहते हुए मृतक को निकाला । उसकी कमर में बंधे हुए रत्नों को निकाल कर घड़े में भरा और घर लाकर पिंडारे में रक्खा । इसी अपराध के कारण मुझे घरसे निकल कर इतनी दूर आना पड़ा । अब यह कौवा कहता है कि इस वृक्षके नीचे दस लाख स्वर्ण मुद्रायें हैं, तो मैंने कहा कि जलेपर क्यों नमक डालते हो ?' श्वसुरने बहूकी बात सुनते ही वृक्षकी मूलमें खोदकर दश लाख मुद्राओंसे भरे घड़े निकाले । उसे प्रतीति हो गई कि शीलवती साक्षात् सरस्वती है । उसने स्वर्ण-मुद्रायें अपने रथमें भर लीं, बहूसे अपने अपराधोंके प्रति बार-बार क्षमा याचना करते हुए उसके गुणोंकी भूरि-भूरि प्रशंसाकी और उसे रथमें बिठाकर नन्दन-पुर की ओर चलने लगा । बहूने कहा—'मेरा पितृगृह अब निकट है, अतः मिलते ही चलें ।' रत्नाकर सेठ ने कहा—'बहू ! अभी तो हमारे घरमें ही प्रकाश करो ।' शीलवतीने श्वसुरका कथन मान लिया ।

सेठने शीलवतीसे कहा—'बेटी, तुमने बसते हुए नगर को उजाड़ क्यों कहा ?' बहूने कहा—'जहाँ अपना कोई न हो वह उजाड़ ही है ।' सेठने कहा—'सूने गांवको बसता क्यों कहा ?' उसने कहा—'मेरे मामा द्वारा किया हुआ स्वागत-सत्कार आपने स्वयं देख लिया ।' सेठने कहा—'छायाको छोड़कर तुम धूपमें क्यों बैठीं ?' शीलवतीने कहा—'बट वृक्ष परसे कौआ विष्टा करे तो अल्पकालमें भरतार मरे या मरणान्त कष्ट पावे । इसलिए मैं वस्त्राच्छादित होकर धूपमें बैठ गयी' । सेठने कहा—'सुभटको तुमने कायर क्यों कहा ?' शीलवतीने कहा—'उसकी पीठ पर घाव थे । यदि वक्षस्थल पर होते तो मैं उसे शूरवीर मानती' । श्वसुरने पूछा—'मूंगके खेतको निष्फल क्यों कहा ?' बहूने कहा—'अग्नि-दग्ध होनेके कारण ।' श्वसुरने पूछा 'तुमने जूते पहने हुए नदीमें प्रवेश क्यों किया ?' शीलवतीने कहा—'पिताजी, नदीमें विषैले सांप, कीट आदि जन्तु और कंकड़, पत्थर तथा कंटकादि की रक्षाके हेतु मैंने ऐसा किया ।' अनुक्रमसे रत्नाकर सेठ अपनी पुत्र-वधूके साथ अपने घर पहुँचा और उसके गुणोंकी प्रशंसा करते हुए अपनी स्त्री और अजितसेन को भी आनन्दित किया । सेठने शीलवतीके रक्खे हुए रत्नोंको पिंडारेमें से निकलवा लिया और सब लोग सुख-पूर्वक रहने लगे ।

कुछ समयके बाद सेठ रत्नाकर स्वर्गवासी हो गया तो अजितसेनके मस्तक पर सारा घरका भार आ पड़ा जिसे वह शीलवतीकी सलाहसे सानन्द निभाते हुए कालयापन करने लगा । एक बार राजा अरिमर्दनको पांच सौ मंत्रियों पर प्रधानमंत्री नियुक्त करनेकी आवश्यकता आ पड़ी तो राजा ने परीक्षाके लिए पूछा कि जो मुझे लातोंसे मारे उसे क्या दण्ड दिया जाय ? मंत्रियोंने कहा—'उसका शिरश्छेद कर देना

चाहिये ।' राजाका मंत्रियोंकी बातसे समाधान नहीं हुआ। इस बातको अजितसेनने शीलवतीसे कहा। शीलवतीने उत्तर दिया—'उसे आभरण देकर सत्कृत करना चाहिये।' अजितसेनने कहा—'यह क्यों ?' उसने कहा—'प्राणनाथ ! राजाको रानीके सिवाय लात मारनेको और कौन समर्थ है ?' अजितसेनने राजाके पास जाकर कहा—'राजन् ! जिसने आपको लात मारी है, उसे सर्वाङ्ग आभरणोंसे अलंकृत कीजिये।' राजाने इस उत्तरसे संतुष्ट होकर अजितसेनको सब मंत्रियोंमें प्रधान नियुक्त कर दिया।

एक बार राजाने किसी शत्रु पर चढ़ाई करनेके लिये प्रयाण किया और साथमें अजितसेनको भी चलनेकी आज्ञा दी। शीलवतीने पतिको विदा करते हुए विश्वास दिलाया कि इन्द्र भी मेरा शील-खंडन नहीं कर सकता और एक पुष्पमाला देकर कहा कि शीलके प्रभावसे यह कभी नहीं कुम्हलायेगी, सर्वदा ताजी रहेगी। राजाके साथ अजितसेन चला गया। एक दिन भयानक अटवीमें जब राजाने अजितसेन के गलेमें सुगन्धित पुष्पमाला देखी तो आश्चर्यपूर्वक उससे पुष्पमालाका रहस्य ज्ञात किया और सब बातें सुनकर मनमें शीलवतीकी परीक्षा करनेका विचार किया।

राजाने कामांग, ललितांग, केलिमित्र और अशोकमित्र नामक चार पुरुषोंको प्रचुर द्रव्य देकर शीलवतीकी परीक्षाके लिये भेजा। इन चारोंने अजितसेनके घरके निकट जाकर अपना-अपना निवासस्थान किया और हाव-भावादिसे शीलवतीको अपना आशय बतलाया। फिर क्रमशः दूतियाँ भेजने पर उसने चारोंको लाख-लाख रुपये लेकर आनेके लिए भिन्न-भिन्न दिवसोंका निर्देश कर दिया। उसने अपने घरमें एक अंधकूपका निर्माण करवाया और उस पर बिना ताने-बानेका पलंग लगाकर शय्या बिछा दी। पांच-पांच दिनके अन्तरसे लक्ष-लक्ष मुद्रा द्रव्य लेकर आये हुए चारों कामी पुरुषोंको शय्या पर बैठाकर कुएमें डाल दिया। वहाँ उन्हें ऊपरसे ही खाने-पीनेको डाल दिया जाता और वे मजबूरीसे अपना नारकीय जीवन बिताने लगे। उन्होंने शीलवतीसे एक दिन संयुक्त प्रार्थनाकी कि हमने अविचार-पूर्ण काम किया अतः दुःख पाते हैं, अब तो हमें बाहर निकालने की कृपा करो। शीलवतीने कहा—'मेरे कथनानुसार करो तो मैं चारोंको मुक्त कर दूँगी।' इतने ही में अजितसेन भी राजाके साथ लौट आया तो शीलवतीने उसे सारा वृत्तांत बतला दिया। उसने चारों पुरुषोंसे आज्ञानुसार कार्य करनेका वचन लेकर उन्हें बाहर निकाला।

शीलवतीने दूसरे ही दिन राजाको अपने घर निमंत्रण देनेके लिये अजितसेनसे प्रार्थनाकी। राजा भोजनार्थ आया। खूब स्वागत-सत्कार पाकर भी भोजनकी कोई सामग्री न देखकर विस्मयपूर्वक उसने इस हंसीका कारण पूछा। शीलवतीने पहिलेसे ही सारी भोजन-सामग्री प्रच्छन्न रखकर चारों उन मित्रोंको यक्षोंका पार्ट अदा करनेका निर्देश कर दिया था। तदनुसार उसने द्वार पर राजाका सत्कार करके चारों यक्षोंको भोजन-सामग्री प्रस्तुत करनेका आदेश दिया। उन्होंने ठाठके साथ प्रच्छन्न सामग्रीको प्रस्तुत कर राजाको चकित कर दिया। राजाने बड़े कौतुकसे भोजनादि द्वारा संतुष्टि प्राप्त की। शीलवतीने चार मुद्राओंकी भेंटपूर्वक राजाको नाना वस्त्रालंकार ताम्बूलादिसे सत्कृत किया। राजाने शीलवतीको अपनी धर्म-बहिन बनाकर जाते समय अपने यहाँ चारों यक्षोंकी विशेष उपयोगिता बतलाते हुए उनकी याचनाकी। शीलवतीने यक्षोंको सहर्ष भेजना स्वीकार कर राजाको विदा किया।

शीलवतीने चारों पुरुषोंको निकालकर चन्दनादि चर्चित करके बांसके करण्डियेमें सुलाकर राजाके पास भेजा। राजाने चारों पेटियां बहुमान-पूर्वक अपने महलोंमें विराजमान कीं और दूसरे दिन रसोई बनानेका निषेध करके भोजनके समय पूजा-अर्चा करके यक्षोंसे भोजन-सामग्री प्रस्तुत करनेकी प्रार्थना की। जब चारों पेटियोंमें से आवाज़ आई 'कि हम कहाँ से दें ?' तो राजाने पेटियोंको खोला। उनमें पिशाचकी भांति विकराल रूप वाले वे ही चारों मित्र निकले। राजाने भयभीत होकर पूछा—'तुम राक्षस हो कि प्रेत ?' उन्होंने कहा—'हम आपके चारों कामी पुरुष हैं, जो अपनी करनीका फल पा रहे हैं।' राजाने उन्हें पहिचानकर सारा वृतांत ज्ञात किया और सब लोगोंके समक्ष सती शीलवतीके शीलकी मुक्त-कण्ठसे प्रशंसा करते हुए उसे बुलाकर अपने अपराधोंकी क्षमा याचना की। देवताओंने पुष्प-वृष्टि करके शीलका माहात्म्य प्रकट किया। इस घटनासे प्रभावित होकर सब लोगोंने पर-स्त्री गमनका त्याग कर अपनेको शील गुणसे अलंकृत किया। राजाने शीलवतीको बड़े आदर-सम्मानके साथ अपने घर भेजा।

षोडश योगोंकी फलवर्द्धिनी व्याख्यामें—

योगाधिराज 'इत्थशाल' योग

[अथर्वकाण्डवाचस्पति पण्ड्या श्री मोतीलालजी नागर, १४ बी/७ देवनगर, नयी दिल्ली-५]

(गतांकसे आगे)

फलवर्द्धिनी

अत्र रहयोगभ्रमनिवारणं रहयोगे प्रकटीभविष्यति । पुत्रेशराशीशश्चन्द्रः पुत्रकारकः पूर्णलाभभावस्थः पुत्रभावेशाधिमित्रेत्थशाली सूतिसुतसद्मेशभौमेत्थशाली जन्मनि पुत्रभावद्रष्टा जन्मलग्नेशवर्षपुत्रभावस्थो मासेशसूतिसुतसद्मेशमासपञ्चमांशेश भौममित्रगृही वर्गोत्तमस्थः पुत्राप्तिसामर्थ्यदाता शुक्रायास्त्यतः शुक्रः पुत्रकर्ता । अस्य समराशिफलमिन्दोर्नीचाधिकाराद् गतम् । अस्य स्त्रीत्वेऽपि वर्षेशपुत्रदमासलग्नभावस्थगुरू ! विषमांशस्थितत्वात् पुत्रदत्वम् । सूतौ दुःस्थशुक्रस्य पञ्चमाशेशत्वं वर्षे गुरुराशिगतत्वञ्च । अत्र तेजोदातृचन्द्रस्य भौमवद्धधिकारयोगाद् भौमस्थकन्याराशिवर्गोत्तमस्थेन्दौ पुत्राप्तिः । 'अंशान्तरं रविगुणमवधिदिनानि' हायनरत्न उक्तानि वर्षलग्ननूलकानि ज्ञेयानि । अत्रोदाहरणं तदसम्भवात् । अथ इत्यादिना पूर्णेत्थशाल उक्तः ।

तत्रानुभूतं दिनप्रवेशग्नं वृश्चिकाख्यं लिखितमस्ति । अत्रापि जन्मवर्षमासग्रहाणां सुतदानां संयोगः कन्यावर्गोत्तमस्थेन्दोः कन्यास्थलग्नेशभौमस्य स्वोच्चस्थलग्नांशेशबुधस्य च चापवर्गोत्तमस्थगुरावित्थशालयोगाः । तत्र लग्नलग्नांशेशयोर्गुरावित्थशाले चन्द्रकृतकार्येशकम्बूलश्च पूर्णोऽतो दिनप्रवेशारम्भसमये पुत्राप्तिर्जाता । दिनप्रवेशेष्टम् १३।३५ स्पष्टश्चन्द्रः ५।२७।३२।४२ गतिः ८४४।११ स्पष्टगुरुः ८।२७।३८।१८ गतिर्वक्रा १।२६ अनयोः समकलकालानयनार्थमनुपातः । यदि चन्द्रगतिकलाभिः षष्ठिघट्यो लभ्यन्ते तदेन्दुगुर्वोरन्तरकलाभिः किमितीत्यनेन लब्धा घट्यादयः १।६ दिनप्रवेशेष्टादस्मिन्निष्टे पुत्रजन्म जातम् । अधिशत्रुगृहस्थभौमवर्तमानेत्थशालात्तस्य तनुसुखं जातमीषत् । बुधोऽष्टमेशोऽपि । अस्य वर्तमानयोगादीषत्कालान्तरे तस्य मरणं जातम् ।

वर्षलग्नं कुम्भाख्यम् । अथ जन्म-वर्ष-मास-दिनप्रवेशलग्नेषु फलसिद्धान्तः कथ्यते । यो दिने फलदाता स एव मुख्यो ग्रहः सर्वत्र विचारणीयः । यथाऽत्र गुरुर्जन्मनि षष्ठसन्धिगो गतप्रायः । वर्षे वर्षेशपुत्रदः पुत्रभावाधिशत्रुद्रष्टा मासे धूमासन्नशुक्राद्दृष्टपुत्रदः । दिने लग्नेशेन्द्वोः (लग्नेशस्य शनेः) शत्रुः लग्नद्रष्टा क्रूरसूर्याधिमित्रेत्थशाली धूमासन्नश्चातः स्वदानफलनाशकः । भौमस्तु दुःस्थशनीत्थशाली सूतौ, वर्षे पुत्रस्थो वक्री, मासे दुःस्थराशीशः, दिनेऽधिशत्रुगृही, अतोऽयमपि स्वदानफलनाशकः । बुधस्तु सूतावस्तः, वर्षेधर्मस्थः, मासेऽष्टमस्थः दिने शत्रुदृष्टः स्वदानफलनाशकः । शुक्रस्तु सूतौ दुःस्थः, वर्षे लाभस्थः पुत्रेऽधिशत्रुद्रष्टा, मासे सप्तमसन्धिगतः, दिनेऽस्तोऽतः स्वकार्यफलनाशकः । एवं कार्यकर्तुस्तत्संयोगिनश्च फलमन्यत्र ज्ञेयम् ।

स्वभावसरला

यहां पर 'रद्द' योगका भ्रम हो सकता है; किन्तु उसका निराकरण आगे रद्द योग की व्याख्याके अवसर पर किया जायगा। ऊपर दिये गये (गताङ्कमें) मकर लग्न के उदाहरण में पञ्चमस्थानकी वृष राशिका स्वामी शुक्र जिस (कर्क) राशि में बैठा है, उसका स्वामी चन्द्रमा पुत्रकारक है, पूर्ण लाभ भावमें स्थित है, पुत्र भावके स्वामी शुक्रके साथ अधिमित्र इत्थशाल योग कर रहा है और जन्मलग्नमें पञ्चम (पुत्र) भावको पूर्ण दृष्टिसे देख रहा है, जन्म लग्नका स्वामी होकर वर्ष लग्नमें पञ्चम (पुत्र) भावको पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, जन्मलग्नका स्वामी होकर वर्ष लग्नमें पंचम भावमें स्थित है। मासाधिपति एवं जन्मकालीन पञ्चम-भावेश तथा मास लग्नमें पञ्चमभावके नवांशपति मङ्गल मित्रके घरमें वर्गोत्तमी होकर स्थित है, शुक्रको पुत्र देने की सामर्थ्य प्रदान कर रहा है; इसलिए शुक्रको पुत्रकर्ता समझना चाहिये। इस शुक्रका समराशिमें स्थित होने का फल तो चन्द्रमाके नीचाधिकारमें होनेसे नष्ट हो गया। शुक्र को यद्यपि स्त्रीग्रह भी माना गया है, फिर भी यह शुक्र वर्षेश, पुत्रप्रद एवं मासलग्नस्थ गुरुके विषम नव-मांशमें स्थित होनेके कारण पुत्रदाता माना जायगा। इसके अतिरिक्त जन्मलग्नमें दुष्ट स्थानमें स्थित शुक्र पञ्चमभावके नवांशका अधिपति है और वह वर्षलग्न में गुरुकी राशिमें स्थित भी है। इस उदाहरणमें, शुक्रको अपना तेज (सामर्थ्य) देनेवाला चन्द्रमा मङ्गलके बहुत अधिकारोंके योगमें है। और मङ्गल जिस कन्या राशिमें स्थित है उसी राशिमें वर्गोत्तमस्थ चन्द्रमा उपस्थित है। अतः कन्याका जन्म न होकर पुत्रकी प्राप्ति हुई। इस सम्बन्ध में 'हायनरत्न' नामक ताजिकग्रन्थमें दृष्टिकर्ता ग्रहोंके अंशान्तरको १२ बारहसे गुणा करने पर जो फलकी अवधिके दिन निकालनेका प्रकार बतलाया गया है, वह तो वर्षलग्नस्थ ग्रहोंके अन्तरसे सम्बन्धित है न कि दीप्तांशों के अन्तरसे। क्योंकि, इस उदाहरणमें वैसा संभव हो नहीं सकता।

इससे आगे ग्रन्थकारने 'अथोविलिप्ता' इत्यादि वाक्यांश के द्वारा पूर्ण इत्थशालका लक्षण बतलाया है। उसके लिये संस्कृत व्याख्यामें एक दिन प्रवेशकी वृश्चिक लग्नका अनुभूत उदाहरण दिया है। उस लग्नमें भी जन्म, वर्ष तथा मासके पुत्रप्रद ग्रहोंका संयोग दृष्टिगोचर हो रहा है। कन्यावर्गोत्तमस्थ चन्द्रमाका, कन्याराशिमें स्थित दिनप्रवेश-लग्नके स्वामी मङ्गलके साथ तथा स्वोच्चस्थ दिनप्रवेश लग्नके नवांशपति बुधका धनराशिमें वर्गोत्तवस्थ गुरुके साथ इत्थशालयोग हो रहा है। जिनमें से लग्नेश और लग्ननवांशपतिका गुरुके साथ जो इत्थशाल योग हो रहा है, उसके साथ-साथ चन्द्रकृत कार्येशके साथ होनेवाला कम्बूलयोग भी पूर्ण हो रहा है; इस कारण दिनप्रवेशके आरम्भकालमें पुत्र प्राप्ति हुई। दिन प्रवेशका इष्टकाल १३ घड़ी ३५ पल है। उस समय स्पष्ट चन्द्र राश्यादि ५।२७।२२।४२ है और उसकी गति ८४४ कला और ११ विकला है इसी प्रकार उस समय राश्यादि स्पष्ट गुरु ८।२७।३८।१८ है और उस गुरुकी वक्र गति १ कला २६ विकला है। चन्द्र और गुरुके समान कला-विकला होनेके समयको जाननेके लिये यह अनुपात किया गया कि यदि चन्द्रगतिकी कला विकलाओंसे ६० घटी समय प्राप्त होता है, तो चन्द्र तथा गुरुके अन्तरकी कला-विकलाओंमें कितना समय प्राप्त होगा ? इस प्रकारकी अनुपात-क्रियासे प्राप्त होनेवाली १ घटी और ६ कला होती हैं। दिन-प्रवेशके इष्टकालसे आगे इस १ घटी ६ पलके बीतने पर पुत्रका जन्म हुआ। किन्तु अधिशत्रुगृहस्थ मङ्गलका गुरुके साथ एवं दिनप्रवेशलग्नके अष्टमेश बुधके साथ वर्तमान इत्थशाल योग हो रहा था; जिससे पुत्र-सुख स्वल्प हुआ। जन्म लेनेके कुछ समय बाद ही उस पुत्रकी मृत्यु हो गई।

इससे आगे संस्कृत व्याख्याकारने कुम्भनामक वर्षलग्न के द्वारा जन्म, वर्ष, मास तथा दिनप्रवेशकी लग्नोंका फल सिद्धांत एवं उन लग्नोंकी ग्रहस्थितिको प्रदर्शित किया है कि, जो ग्रह दिनप्रवेश लग्नमें फलदाता होता है, वही ग्रह सर्वत्र (जन्म, वर्ष तथा मासमें भी) विचारणीय हुआ करता है। जैसे इस उदाहरणकी कुम्भ लग्नमें गुरु फलदाता है। वह जन्मलग्नमें छठे भावकी सन्धिमें चला गया है; इसलिये गुरु गतप्राय है। वर्षलग्नमें वर्षेश होकर पुत्रप्रद और पुत्र-भावाधिपतिसे (शत्रु दृष्टिसे) दृष्ट है। मासलग्नमें धूमग्रहके समीपवर्ती शुक्रकी दृष्टिसे रहित होकर पुत्रदाता है। दिन-

भारतीय शिष्टाचार

पश्चिमी देशोंमें शिष्टाचार पर बहुत ध्यान दिया जाता है, परन्तु हमारे देशमें बच्चोंको शिष्टाचारकी शिक्षा नहीं दी जाती, अतएव वे बड़े होकर साधारण बातोंमें भी अपनी मूर्खता और असभ्यताका परिचय देते हैं। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। हमें सदैव अपने सुख—आराम—के साथ ही साथ इस बातका भी ध्यान रखना परमावश्यक है कि हमारे आचरण और व्यवहारसे किसीको कष्ट न होने पावे, किसी प्रकारकी असुविधा न हो और किसीका जी न दुखे। आज हम शिष्टाचारके साधारण नियमों पर 'ज्योतिष्मती' के पाठकोंका ध्यान आकृष्ट करते हैं। इन शिष्टाचारके सूत्रों को प्रत्येक माता पिता बच्चोंको पढ़ावें और प्रारम्भिक पाठशालाके पाठ्यक्रममें रख दिये जावें तो बालक शिष्ट पुरुष बन सकेंगे।

(१) कोई दूसरा अपरिचित व्यक्ति बच्चोंको पैसा रुपया मिठाई दे तो बिना माता-पिताकी आज्ञाके कदापि नहीं लेना चाहिए।

(२) किसीको कोई वस्तु देनी हो तो बायें हाथसे मत दो और लेनी हो तो बांयें हाथसे न लो।

(३) जब तक जान पहचान न हो, पुरुष स्त्रीसे चार आंख करके बात-चीत न करे। पराई स्त्रीसे बात करनेकी आवश्यकता पड़ जाय तो स्त्रीके पैरोंकी ओर देखना चाहिये, न कि आँखोंकी ओर। स्त्रियोंकी ओर टकटकी लगाकर देखना या उनको घूरना बहुत बड़ी असभ्यता है।

(४) गुरु-शिष्य, पति-पत्नी, पूज्य-पूजक और दो मित्रों के बीचमें होकर कभी नहीं निकलना चाहिए।

(५) शौचके बाद पात्र (लोटे) को बायें हाथसे नहीं उठाना चाहिए।

(६) माता-पिता, गुरु-जन और देवताओंको नित्य प्रणाम करना चाहिए और बाल्यावस्थासे ही नित्य सन्ध्या वा दस-पन्द्रह मिनट इष्टदेव (ईश्वर) स्मरणका अभ्यास डालना चाहिए।

(७) पानी, दूध, घी, आदिमें अंगुली या नाखून मत डालो। दूधमें उङ्गलीसे चीनी न घोलो, चम्मचसे काम लो या दो बर्तनोंमें उलट-फेर करलो।

(८) जिस बर्तनमें पीनेका पानी या दूध आदि रखा हो उसको ढकना मत भूल जाओ। उसको पृथिवीसे कुछ ऊपर रखना अच्छा है। बर्तन ऐसा होना चाहिए जो अन्दर से साफ हो सके।

(९) पानी, दूध, घी आदि निकालनेके लिए जिस लोटे, कटोरे, गिलास या चम्मचको बर्तनमें डालो उसकी पेंदी पहले धो लो या साफ कपड़ेसे पोंछ लो।

(१०) डोल, बालटी या घड़ेके पास हाथ धोनेके लिए भरा हुआ लोटा सदा रखना चाहिए। खाली होने पर उसे फिर भर देना चाहिए। पानी से भरे हुए डोल, बालटी

प्रवेशलग्नमें लग्नेश शनिका शत्रु है, लग्नको मित्रदृष्टिसे देख रहा है। क्रूरसूर्यके साथ अधिमित्र इत्थशाल योग कर रहा है तथा धूमग्रहके समीपमें विद्यमान है; इस कारण अपने उत्पन्न किये हुए फलका स्वयमेव नाशक है। चन्द्रमा जन्मलग्नमें अस्तासन्न है, वर्षलग्नमें अस्त है, मासलग्नमें नीचवर्गोत्तमस्थ है, दिनप्रवेशलग्नमें अष्टमेशसे युक्त है; इस लिये अपने फलका नाशक है। मंगल जन्मलग्नमें दुष्ट स्थान स्थित शनि के साथ इत्थशालयोग कर रहा है, वर्षलग्नमें पञ्चमस्थानमें वक्री होकर बैठा है, मासलग्नमें दुष्टस्थानकी राशिका स्वामी है, दिनप्रवेशलग्नमें अधिशत्रुके घरमें उपस्थित है; इस कारण यह मंगल भी अपने दिये हुए फलका विनाशक है। बुध जन्मलग्नमें अस्त है, वर्षलग्नमें नवम स्थानमें स्थित है, मासलग्नमें अष्टमस्थ है, दिनप्रवेशकी लग्नमें शत्रु दृष्ट है; अतः निजफल का नाशक है। शुक्र जन्मलग्नमें दुष्ट स्थानमें स्थित है, वर्षलग्नमें लाभ स्थानमें बैठ कर पुत्रभावको अधिशत्रु दृष्टि से देख रहा है, मासलग्नमें सप्तमभावकी संधिमें है, दिनप्रवेशलग्नमें अस्त है; इसलिये अपने कार्यके फलका नाशक है। इस प्रकार कार्यकर्ता और उसके संयोगी ग्रहोंके फलका विचार अन्यत्र भी जान लेना चाहिये।

(क्रमशः)

या घड़ेमें हाथ नहीं डालना चाहिए। हाथकी कलाईसे लोटे को टेढ़ा करके पानी लेना चाहिए, उनमें हाथ नहीं डालना चाहिए।

(११) हाथ धोने या बर्तन माँजनेके लिए प्रत्येक स्थान की मिट्टीका प्रयोग मत करो। देख लो कि कहांकी मिट्टी को लोग गन्दा नहीं करते। साफ मिट्टी ढूँढकर काममें लाओ। जमीन खोदकर खेतकी मिट्टी मिल सके तो अच्छा है। ऐसी मिट्टीको कनस्तर आदिमें रखना चाहिए, जमीन पर रखने से बिल्ली आदि जानवर उसको गन्दा कर देते हैं।

(१२) भोजन इस प्रकार खाओ कि पत्तल या थाली से बाहर जमीन या कपड़े पर न गिरे। पत्तल या थाली उठाओ तो उसके नीचेकी जगह भी साफ कर दो।

(१३) पहनने के कपड़े, जूता आदि नित्य झाड़ लिया करो। सोनेसे पहले प्रतिदिन अपने बिछौनेका प्रत्येक कपड़ा झाड़ लो।

(१४) साथ बैठकर एक ही थालीमें दो व्यक्तियोंको नहीं खाना चाहिए। एक ही गिलास या कटोरेका पानी या दूध दो व्यक्तियोंको नहीं पीना चाहिए। किसीका बचा हुआ जूठा या जमीन पर गिरी हुई कोई भी वस्तु मत खाओ।

(१५) बर्तन या खाने की वस्तु किसी नई जगह रखने से पहले उस जगह को धो डालो।

(१६) रात को जो कपड़े पहनकर सोओ उनमें जो सूती हों उनको दूसरे दिन धो डालो और जो ऊनी हों उन्हें धूपमें डाल दो। स्मरण रखो, ऊनी या काले गर्ददार कपड़ोंमें भी मैल लगती है, उनको भी सफेद कपड़ोंकी भांति धोते रहना चाहिए।

(१७) हाथ और पैरके नाखून बढ़ने मत दो। उनके अन्दर मैल न जमने दो।

(१८) जिस बिछौने पर सोओ उसको थोड़ी देर धूपमें रहने दो, परन्तु इसका ध्यान रखो कि उसको चिड़ियां आदि गन्दा न कर दें। पहनने के कपड़ोंको भी इसी प्रकार धूप दिखला दो।

(१९) पहन कर मौजा (जुर्राब) भी दूसरे तीसरे दिन धो डालना चाहिए।

(२०) कपड़ा पहनने के पहले और उतारनेके बाद झाड़ लो। पाजामा झाड़ते समय उसके नीचे का भाग पकड़ो क्योंकि उसीमें मर्दा अधिक रहता है। नङ्गे पैर रहो तो बाहरसे आकर पैर धो डालो।

(२१) अपने साथ सदा एक अङ्गोछा या रूमाल रखो। धोती, दुपट्टे या कुरतेसे नाक-हाथ पौंछना गन्दी आदत है।

(२२) फल खाते समय उसके छिलके, गुठलियाँ गली में या खिड़कीमें मत फेंको। पास ही बर्तनमें, पत्ते पर या रद्दी कागज पर रखते चलो, पीछे वहाँ फेंक दो जहां कूड़ा रहता है।

(२३) घरमें सर्वत्र जूता नहीं ले जाना चाहिये। सीढ़ी में या कमरेके बाहर एक तरफ उतार देना चाहिये।

(२४) जूता या जूठे बर्तनको छू कर हाथ धोना चाहिए।

(२५) बाहरसे आकर जूतेको झाड़ डालना चाहिये—जूते पर बराबर तेल या पालिश आदि लगाते रहना चाहिये।

(२६) लिखते समय उङ्गलियोंमें स्याही न लगा लो। यदि लग जाय तो तुरन्त रगड़ कर हाथ धो डालो।

(२७) रोशनाई (स्याही) कलमसे जमीन पर न छिड़को और न उसको सिरके बालोंसे पोंछो।

(२८) मिट्टी लगा हुआ लोटा या गागर कुएँमें मत डालो।

(२९) कुएँ पर इस प्रकार स्नान करो कि शरीरका पानी कुएँमें न जाय।

(३०) सोये हुए व्यक्तिको कुसमय बिना मतलब न जगा दो।

(३१) अपना कपड़ा आदि धोना हो या पीनेका पानी लेना हो तो नदीमें जरा आगे बढ़कर धाराके निकट जाओ।

(३२) दूसरेका उपयोग कियाहुआ साबुन या तौलिया यथा सम्भव काममें न लाओ।

(३३) खाते समय दाल, चावल, शाक आदिमें कुल हाथ न सान लो, चार उंगलियोंकी दो जोड़ोंके ऊपर खाद्य-पदार्थ न लगाना चाहिए।

(३४) खाते समय पानीका गिलास इस प्रकार उठाओ कि उसमें उंगलीकी दाल आदि न लग जाय।

(३५) थालीमें जूठा मत रहने दो। यह स्वभाव

अच्छा नहीं है। इसमें अन्नका भी दुरुपयोग होता है।

(३६) रोगीसे छेड़-छाड़ मत करो। रोगीसे मीठी बातें करनी चाहिए, चिढ़ाने वाली नहीं।

(३७) छूत वाले रोगियोंसे दूर रहना चाहिए। जिसको चेचक निकले उसके कपड़े या तो जला देने चाहिए या उबलते हुए पानीमें कुछ देर रहने चाहिए, और उस पानीमें नीमकी पत्ती डाल देनी चाहिए।

(३८) साधारण रोगीके पास भी उन्हींको जाना चाहिए जो उसकी सेवा करना चाहें। रोगीसे प्रश्न करना या जबरदस्ती बातचीत करना अच्छा नहीं।

(३९) सब जगह थूकनेकी आदत बुरी है। इससे रोग फैलता है। यदि रोगके कारण थूकना आवश्यक हो तो पीकदानी आदि रक्खो प्रत्येक स्थानमें नाक भी नहीं सींकना चाहिए। इसके लिए रूमाल रक्खो।

(४०) लिफाफा थूक लगाकर बन्द नहीं करना चाहिए। न पोथीके पन्ने थूक लगाकर उलटने चाहिए।

(४१) खाना खानेसे पहले हाथ-मुँह धोना चाहिए—और पीछे भी हाथ धोकर भली प्रकार कुल्ला करो। आवश्यकता हो तो खरकेसे भी दाँत साफ कर लेना चाहिए पर खरकेकी जगह आलपीन आदि से काम नहीं लेना चाहिए। इसके लिए नीमकी सींक बहुत अच्छी है।

(४२) सबेरे उठकर कुल्ला करो। जिस दँतवनसे दाँत साफ करो, उसके दो टुकड़े करके उसीसे जीभ साफ कर लो, तब उसको धोकर कूड़ेकी टोकरीमें फेंक दो। दँतवन बिना धोए मत फेंको। दँतवन करनेके बाद कुल्ला इस प्रकार करो कि दाँतके आगे और पीछेका भाग, मसूड़े आदि भी साफ हो जाएँ।

(४३) सबेरे बिना शौचादि गये और दाँत साफ किये कुछ मत खाओ। भोजन तो स्नानके बाद ही करना अच्छा है।

(४४) जिस बर्तनमें एक बार पानी पी लो या खाना खा लो उसको माँज कर तब काममें लाओ। बर्तन मिट्टीका हो तो उसको एक ही बार प्रयोग करके फेंक दो। जब बर्तन जूठा हो जाय तब उसको अलग एक तरफ रख दो।

(४५) दूसरेकी उपयोगकी हुई बांसुरी या कोई भी बाजा मत बजाओ। बजानी ही पड़े तो उसको पानीसे खूब धो लो।

(४६) एक ओढ़नेमें दो आदमी मत सोओ।

(४७) जिस कपड़े पर स्याहीका, पानका या और किसी वस्तुका दाग लग जाय उसको जब तक दाग छूट न जाय मत पहनो। थोड़ा सावधान रहनेसे ऐसा दाग लगने ही न पायेगा।

(४८) दूसरेकी पहनी हुई धोती, जब तक खूब साफ न हो जाय काममें मत लाओ।

(४९) दूसरेकी प्रयोगकी हुई कंघी काममें मत लाओ।

(५०) जो हलवाई अपनी मिठाई पूरी आदि वस्तुओं को मक्खी और गर्देसे बचानेके लिए सफाईसे ढककर नहीं रखता, अपने शरीरको खुजलाता रहता है या अपना कपड़ा और शरीर मैला रखता है, उसकी कोई वस्तु मत खाओ। जहां तक हो सके बाजारकी मिठाई विशेषकर मलाईकी बरफ, नहीं खानी चाहिए। और बाजारका शरबत नहीं पीना चाहिए।

(५१) जिस कपड़ेको पहनकर शौचादि जाओ या हजामत बनाओ उसको धो डालना अच्छा है।

(५२) शौचादिके लिए पानी कम मत ले जाओ, लघुशंकाके बाद भी पानीका प्रयोग करो। अथवा मिट्टी पत्थर से मूत्रेन्द्रिय साफ करो।

(५३) खेतमें शौच नहीं जाना चाहिए, यदि जाना पड़े तो उठनेके बाद मलको मिट्टीसे ढक दो।

(५४) प्रातःकाल उठते ही एक बार शौच अवश्य जाना चाहिए।

(५५) सर्वत्र लघुशंका करने मत बैठ जाओ। इसके लिए कहीं आड़में उचित स्थान ढूंढ़ लो।

(५६) जहां तक हो सके गुदाप्रक्षालन (आबदस्त) नदी, तालाब आदिमें मत करो। पानी साथ ले जाओ। नदी नाले या तालाबमें गुदाप्रक्षालन करके पानीको गन्दा मत करो।

(५७) जूठे पानीका छींटा किसी मनुष्य या साफ बर्तन पर नहीं पड़ना चाहिए।

(५८) भोजनके समय मरने आदिका अशुभ शोकप्रद

कोई समाचार नहीं सुनाना चाहिए, न ऐसी बातें या ऐसा व्यवहार करना चाहिए जिससे शोक, क्रोध, या गन्दगी प्रकट हो।

(५६) भोजनका स्थान साफ और हवादार होना चाहिए। उसके अन्दर मक्खीका जाना रोकना चाहिए।

(६०) भोजनके समय साफ और ढीले कपड़े पहनने चाहिए।

(६१) किसीको हठात् मनके विरुद्ध नहीं खिलाना चाहिए।

(६२) चलते हुए मार्गमें या प्रत्येक स्थान में खाने लगना ठीक नहीं।

(६३) भोजनके ऊपरसे जाना या उसको लांघना ठीक नहीं।

(६४) भोजन धीरे-धीरे करना चाहिए, दूध या पानी भी ठहर-ठहर कर पीना चाहिए। भोजन इस प्रकार मत करो या पानी दूध इस प्रकार मत पीओ कि मुख से आवाज निकले। धीरे-धीरे खूब चबाकर खाना खाओ।

(६५) बन्द दरवाजोंके अन्दर रहना या सोना अच्छा नहीं। खुले बरामदे या खिड़कीदार कमरेमें रहना या सोना चाहिए। कमरोंकी खिड़कियां या दूसरे सुराख सदा बन्द मत रक्खो।

(६६) मुंह ढककर मत सोओ।

(६७) व्यायाम करनेके समय मुंह बन्द रक्खो और नाकसे सांस लो।

(६८) सोनेवाले स्थानको सामानसे मत भर दो और उसमें जलता हुआ लैम्प सारी रात मत रक्खो।

(६९) लेटकर मत पढ़ो। पढ़ते समय सीधे बैठो।

(७०) सन्ध्याके समय मत पढ़ो।

(७१) पढ़नेके समय रोशनी तुम्हारे बांये या पीछेसे आनी चाहिए।

(७२) प्रत्येक तालाब या कुएंका पानी मत पीओ, पानी उबालकर और छानकर पीना अच्छा है।

(७३) बरफका पानी पीनेकी आदत मत डालो।

(७४) महीनेमें दो एक बार बिना खाये या कम खाकर रह जाना अच्छा है। एकादशी व्रत या अमा पूर्णिमाका एकाशन व्रत उत्तम है।

(७५) भोजन करते समय जूठे मुंहसे न तो किसीको नमस्कार करना और न आशीर्वाद ही देना चाहिए।

(७६) बच्चोंको मत रुलाओ। उनको सदा गोदमें न लिए रहो। उनको अपने बल पर खड़ा होना, जितना जल्दी हो सके, सिखलाओ। उन्हें अपने हाथ-पैर हिलाने दो। वे कभी गिर भी जाये तो तुरन्त उठाने मत दौड़ो। बच्चोंको चूमना अच्छा नहीं।

(७७) भूत-प्रेत की या दूसरी डरानेवाली कहानियां बच्चोंको मत सुनाओ।

(७८) मशकका पानी मत पीओ।

(७९) सड़ा हुआ और कच्चा फल मत खाओ।

(८०) रहनेका घर बहुत साफ रखना चाहिए। उसमें नित्य झाड़ू लगाना चाहिए। उसका फर्श कभी-कभी धुलना चाहिए। घर कच्चा हो तो उसको गोबर मिट्टी से लिपवाते रहना चाहिए। चौकी, मेज, आलमारी, मेज, कुर्सी ऊपर नीचे अच्छी प्रकार साफ करनी चाहिए। मेजमें दराज हो तो उसके अन्दर से साफ करना चाहिए। स्मरण रखना चाहिए कि गर्देसे बचना स्वास्थ्यके लिए बहुत आवश्यक है।

(८१) भोजनके बाद एक बेर लघुशंका कर लेना अच्छा है।

(८२) साफ पानी से स्नान करना चाहिए। स्नानके समय शरीरको खूब रगड़ना चाहिए।

ब्रह्मनिष्ठ श्रीस्वामी शंकरानन्दजी महाराजके जीवनकी
❋ संक्षिप्त झांकी ❋

[लेखक—श्री लक्ष्मीनारायण श्रीवास्तव बी. ए., बी. एड् दरीबापान, जयपुर]

[वीरप्रसू राजस्थानकी वीर गाथाएँ तो विश्वविख्यात हैं ही। जहां इस भूमिमें अनेक अद्भुत पराक्रमी वीर महापुरुषों एवं वीराङ्गनाओंने जन्म लिया है वहां अनेक उच्चकोटिके विद्वान् भक्तजनों एवं सिद्ध योगी महापुरुषोंने राजस्थानको अपनी लीलास्थली बनाकर पावन किया है। मेवाड़ और अर्बुदाचल (आबू) के गिरिगह्वरोंमें अब भी अनेक सिद्धयोगी विद्यमान हैं। किसी भाग्यशालीको दर्शनका सौभाग्य भी मिल जाता है। इस बार राजस्थानकी यात्रामें हमें मेवाड़के प्रायः सभी पावन तीर्थोंके दर्शनका सौभाग्य प्राप्त हुआ और कुछ भक्तजनोंसे भी भेंट हुई जिन्होंने राजस्थानके सिद्ध योगियोंकी अलौकिक जीवन घटनाएँ सुनाईं। 'ज्योतिष्मती' के आगामी अङ्कोंमें राजस्थानके पुण्य तीर्थोंका इतिहास और सिद्धमहापुरुषोंके पावनचरित्र को यथासम्भव प्रकाशित किया जावेगा। इस अंकमें राजस्थानके महान् सिद्धपुरुष स्वामी श्री शंकरानन्दजी महाराजकी संक्षिप्त जीवनीसे इस लेखमालाका यहां उपक्रम प्रारम्भ कर रहे हैं। विद्वान् लेखकने इस लेखमें श्री पं० युगलकिशोरजी आयुर्वेदाचार्य एम० ए० का उल्लेख किया है। उनसे जयपुरमें गत ज्येष्ठ शुक्ला १५ को गलता से लौटते समय भेंट हुई थी। उनके सौम्य स्वभाव एवं विद्वत्ता से हमें बहुत सन्तोष हुआ। उनके विशेष स्नेहाग्रह पर भी समयाभावके कारण हम अधिक जयपुर रुक कर दुबारा वैद्यजीसे भेंट न कर सके इसका हमें खेद है। यह लेख हमें सोलन पहुंचने पर कार्यालयमें मिला। यदि पहले मिल जाता तो जयपुरमें श्रीवास्तवजी से भी भेंट करने और श्री स्वामी शंकराकन्दजी महाराजके सम्बन्धमें विशेष वार्तालाप होता, अस्तु।

—सम्पादक]

वर्तमान संसारमें यदि फ्रांस देशको क्रांति का, जर्मनीको आविष्कारोंका, इंग्लैंड, रूस और अमेरिकाको अन्वेषणोंका और भारतको आत्मोन्नतिका घर कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। भारतमें अब भी ऐसे ऐसे महात्माओंका अवतरण होता रहता है, जिनसे संसारको सत्यका संदेश मिलता रहता है। आजकल अन्तर केवल इतना सा हो गया है कि इन विभूतियोंको पहिचानना औ उनकी लीलाओंको समझना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव हो गया है। इसका कारण सामाजिक पतन और धार्मिक दृष्टिकोणका सर्वथा अभाव है। परन्तु अब भी समाजमें यह शक्ति अवश्य है कि वह चाहे उन उच्च मर्मज्ञ विभूतियोंकी उपस्थितिमें उनका उचित मूल्य न समझ सके परन्तु उनकी अनुपस्थितिमें व्याकुल रहती और अपनी मूर्खता पर पश्चात्ताप करती रहती है।

भारतमें इस प्रकारकी उच्च विभूतियां आकर एक आदर्श उपस्थित करती हैं। इससे समाजमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूपमें चेतना तथा जाग्रति उत्पन्न होती है, या यूं कहा जाय कि उनके द्वारा समाजका पुनर्जन्म होता है और उसे अपने जीवनके लक्ष्यसे अवगत कराया जाता है। विभूतियोंके सरल जीवन प्रेम त्याग, सत्य और अहिंसाकी छाप समाज पर पड़ती है परन्तु ज्ंही समाज कुछ खड़ा होने योग्य होता है कि ये सहसा अपने उज्ज्वल चरित्र और कार्योंका दिव्य ऐतिहासिक प्रकाश छोड़कर सहसा लुप्त हो जाते हैं। जिस प्रकार नाग अपनी मणी खो जाने पर अधीर हो जाता है वही

दशा समाजकी होती है। ऐसी ही उच्च विभूतियोंमें से स्वामी शंकरानन्द जी महाराज थे जिन्होंने जयपुर नगरमें रहकर समाजको उपर्युक्त प्रकारका जीवनदान दिया और एक दिन न जाने कहां सहसा लुप्त हो गये।

अनन्त श्रीविभूषित प्रातःस्मरणीय परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री स्वामी शंकरानन्दजीका जन्म भूतपूर्व जोधपुर राज्यके एक शुभ ग्रामके ब्राह्मण कुलमें हुआ था। आपके बड़े पिता (ताऊ) सन्यासी हो गये थे और ग्रामके बाहर एक शिवालयमें बिराजते थे। वे माता पार्वतीके परम भक्त थे। आपके द्वारा महाशक्ति पार्वतीका शृंगार रियासत जोधपुरकी वेशभूषाके अनुसार लँहगा ओढ़नी और अंगियासे हुआ करता था। सन्यासीजी नित्य ब्राह्ममुहूर्तमें उठकर भवानी पार्वतीके भजनके पश्चात् मन्दिरके बाहर चले जाते थे। सूर्योदयके कुछ देर पूर्व मन्दिरके कुएँ पर स्नान करके फिर भगवतीकी सेवामें लग जाते थे। प्रातः स्वामीजीकी माता मन्दिरकी सफाई आदिके लिए नित्य मन्दिरमें आया करती थीं। इस समय स्वामीजी (श्रीशंकरानन्दजी महाराज) की आयु केवल ६ मासकी थी। आप अपने कुटुम्बमें केवल एक संतान होनेके कारण सबको बड़े प्रिय थे। सन्यासीजी का भी आपसे दुलार था। मन्दिरमें शिवलिंग के सामनेवाली दीवारमें माता पार्वतीका मण्डप था। स्वामीजीकी माताजी मन्दिरका कार्य करते समय आपको शिवलिंग और जगत् माता पार्वतीके बीचमें पर्याप्त स्थान होनेके कारण लिटा देती थी। यद्यपि आपकी अवस्था केवल ६ मासकी थी, परन्तु आप स्वस्थ सुन्दर तथा अन्य विशेष आकर्षणोंके कारण अपनी आयुसे बहुत अधिक जान पड़ते थे।

एक दिन उसी मन्दिरमें बड़ी अद्भुत घटना घटी। सदाकी भांति जब आपकी पुज्य माताजी आपको राजराजेश्वरीके चरणोंमें लिटाकर अपने दैनिक कार्योंमें व्यस्त थी और सन्यासीजी कुएँ पर स्नान कर रहे थे। आप किसी प्रकार उठकर महामाया पार्वतीकी ओढ़नीका पल्ला पकड़ कर खड़े हो गये और उनके स्तनोंसे दूध पान करने लगे। थोड़ी देरमें संन्यासीजी निज मन्दिरमें पधारे और शिवलिंगके सामने स्वामीजीको खड़े माता पार्वतीके स्तनसे दूध निकलते और शिशु स्वामीजीको पान करते देखकर हक्के-बक्के रह गये। शिशु स्वामीजी मग्न होकर एक स्तनको हाथोंसे पकड़े बड़ी तेजीसे दूध पान कर रहे थे।

दूधकी धाराके वेगके कारण शिशु स्वामीजी पूरा दूध नहीं पी सक रहे थे। अतः शिशु स्वामीजीके मुंहके अतिरिक्त छाती, जांघ और भवानी पार्वतीकी पोशाक दूधसे सन गई थी। सन्यासीजी यह दृश्य देखकर गद्‌गद् हो रहे थे। शिशु स्वामीजीकी पूज्य माताजी संन्यासीजीकी प्रेमावेशवश हिचकियां सुनकर निज मंदिरमें पधारी और दूरसे अपने आँखोंके तारेको भगवती पार्वतीको पकड़े खड़ा देखकर भयसे कांपने लगी। उनके इस भयका कारण मूर्तिको छू लेनेके कारण संन्यासीजीका दुखी होना था। पूज्य माताजी तुरन्त शिशु स्वामीजीको उठाने बढ़ी परन्तु संन्यासीजीने रोका और पूज्य माताजीको शिशु स्वामीजीके पास आने पर सारी बात समझमें आ गई। थोड़ी देर पश्चात् शिशु स्वामीजीके पूज्य पिताजी तथा ग्रामके अन्य व्यक्ति मन्दिरमें आ गये। संन्यासीजीने शिशु स्वामीजीको भगवती पार्वतीको भेंट करने का प्रस्ताव रखा। प्रथम बार तो शिशु स्वामीजीकी पूज्य माताजीने इस प्रस्तावको स्वीकार नहीं किया परन्तु पूज्य संन्यासीजी, पूज्य पति तथा अन्य ग्रामवासियोंके समझाने पर प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।

अब शिशु महात्मा मन्दिरमें ही रहने लगे और उनका लालन-पालन संन्यासीजी ही करने लगे। इस प्रकार आपकी आयु आठ वर्षकी हो गई। सन्यासीजी ने इसके पश्चात् एक अन्य सिद्ध महात्मासे आपको दीक्षा दिलाई और बालक स्वामीजीको उनके शिष्यके रूपमें उनके सुपुर्द करके आप मोक्ष धाम पधार गये। इन सिद्ध महात्माको महाराज जगतसिंह जोधपुर नरेशने अपना गुरु बनाकर पैरोंमें सोना तथा ठिकाना मेवासा भेंट किया था। कहते हैं कि इससे पहिले महाराजा जगत्सिंहजी को साधु महात्माओंसे बड़ी चिढ़ थी परन्तु इन सिद्ध महात्मा द्वारा सम्पर्क तथा एक घातक रोगसे मुक्त होकर आप महात्माजीके परम भक्त होकर रहे। सिद्ध महात्मा अपने शिष्यके साथ जिनका नाम उन्होंने शंकरलाल रखा था रहने लगे। बाल अवस्थाके कुछ वर्ष स्वामी शंकरानन्दजीके पूज्य श्रीसिद्ध महात्माजीकी निगरानीमें साधना करते बीते। सिद्ध महात्मा स्वामीजी की गुरु भक्ति व्यवहार तथा उज्ज्वल चरित्रसे बड़े प्रसन्न थे। उन्होंने

महाराजा जगत्‌सिंहजी के अनुरोधसे स्वामीजीको काशी पढ़ने के लिए भेजना स्वीकार किया। काशीमें सिद्ध महात्माजीके एक अन्य मित्र पंडित और सिद्ध सन्यासी थे। यह सिद्ध सन्यासी संस्कृत व्याकरण साहित्य आदिके प्रकाण्ड विद्वान् थे। काशीमें स्वामी शंकरानन्दजीने आपके आश्रममें रहकर शास्त्री परीक्षा पास की। काशीसे सिद्ध संन्यासीजी आपकी अटूट सेवा विद्याध्ययनकी तन्मयताके प्रशंसापत्र समय-समय पर मेवासा भेजा करते थे। पूज्य श्री शंकरानन्दजी संन्यासी के विद्या प्रेमने सिद्ध संन्यासीजीको बड़ा प्रभावित किया परन्तु स्वामीजीके आचार्य खण्डके प्रारम्भ करनेके पूर्व ही आपको मेवासासे काशीसे मेवासा लौटनेका आदेश मिला। इस समय आपकी अवस्था अठारह वर्षकी हो गई थी। आपका रंग सुर्ख गौरवर्ण और आंखोंसे तेज टपकता था।

मेवासा केवल कुछ मास ही रह पाये थे कि आपको सम्पूर्ण भारतका भ्रमण करनेकी आज्ञा प्राप्त हुई। यह भ्रमण अधिक पदयात्रा ही थी। भ्रमणमें जहां-जहांके लिये आज्ञा पत्रोंकी आवश्यकता थी जोधपुर सरकार द्वारा प्रबन्ध करा दिया गया था। यात्राका व्यय स्वयं महाराजा जगत्‌सिंह जी द्वारा भेंट किया गया था। मार्गमें विशेषकर भोजन भिक्षा पर ही निर्भर रखा गया था। यह भ्रमण दो वर्ष और कुछ दिनों पश्चात् समाप्त हुआ (इस समयमें आपको बड़े-बड़े महात्माओंके दर्शनोंका लाभ हुआ) इसके पश्चात् स्वामीजी सिद्ध महात्माजी ही की सेवामें रहने लगे जैसा कि स्वामीजीने स्वयं लेखकको बताया था कि सिद्ध महात्मा जी आपके साथ २-३ वर्ष तक वनमें मेवासासे लापता रहे। स्वामीजीने वन में पृथक्-पृथक् भगवती पार्वतीके विभिन्न स्वरूपोंके प्रत्यक्ष दर्शन किये। एक बार स्वामीजीने श्रीमाता छिन्नमस्ताके अनुष्ठान और श्रीमाता छिन्नमस्ताके स्वरूपको बताया। इस अनुष्ठानके पूर्व आपको घोर साधना कराई गई थी, इसके पश्चात अनुष्ठान जोधपुर और मेवासाकी सीमा पर किया गया था। इस अनुष्ठानके आचार्य स्वयं सिद्ध महात्माजी थे। अनुष्ठानकी सामग्रीमें इस बार यह विशेष बात बताई गई कि वहाँ बहुत से बकरे तथा पाडो (भैंसों) का भी प्रबन्ध था। माता छिन्न मस्ताके दांयी-बांयी ओर दो अधिक आसन बिछाये गये थे और निज आसनके आगे बराबर-बराबर आसन और थे। अनुष्ठानका कार्य सायंकालसे ही आरम्भ कर दिया गया था। वैज्ञानिक दृष्टिसे यह असम्भव-सा जान पड़ता है, परन्तु इस बातको साधकगण ही भली प्रकार जानते होंगे कि जैसा कि स्वामीजीने बताया कि उनके सीधे हाथमें खण्ड (खांडा या तलवार) की शक्ति उत्पन्न हो गई और यही संकेत श्री छिन्नमस्ताजीके पधारनेका था। करकमलोंमें यह शक्ति उत्पन्न होते ही उपस्थित पशुओंको करकमलोंसे पलक मारते बलि पर चढ़ा दिया गया और माताजीके प्रत्यक्ष प्रकट होते ही माताको स्वामीजीने स्वयंका भी शीश भेंट कर दिया। माताजीके आते ही अपने बांये हाथके खड्गसे स्वयंका शीश अलग कर दिया था और वह शीश माताजीके बांये हाथमें था। धड़से रक्तकी तीन धारायें निकल रही थीं। एक धारा दांई और खड़ी एक देवीके मुखमें, दूसरी बांई और एक दूसरी देवीके मुखमें और तीसरी स्वयंके शीशमें जो करकमलमें था गिर रही थी। स्वामीजीके शीशको माताजीने खड्गवाले हाथसे झेला और वापिस धड़के लगा दिया। स्वामीजीने दूसरी बार करकमलसे शीशको काटकर माताको दुबारा भेंट कर दिया। इस बार भी माताने शीशको करकमलमें झेला और धड़से लगा दिया। पास ही बैठे सिद्ध महात्माजी माताकी स्तुति कर रहे थे और इस समय उनसे कोई संकेत न पाकर स्वामीजी अब स्वयं माताजीकी प्रार्थना करने लगे। यह बात बताने योग्य है कि स्वामीजी के प्रत्येक क्रियाओंका संचालन सिद्ध महात्माजीके संकेतों पर हो रहा था। प्रार्थना करते समय स्वामीजीको ज्ञात हुआ कि उनका धड़ रक्तसे सना हुआ है परन्तु शीशके कटने आदिमें कोई पीड़ाका अनुभव नहीं हुआ।

स्वामीजीको माताजीने वर मांगनेकी आज्ञा दी और स्वामीजीने सिद्ध महात्माजीकी आज्ञानुसार माताकी कृपाका वर माँगा। माताजी यह वर देकर विदा हो गईं। लेखकने स्वामीजीके गले पर गले कटनेका चिन्ह स्वयं अपने आंखोंसे देखा है। और प्रश्न करने पर ज्ञात हुआ था कि माताजीके निज आसनके नीचे वाले दोनों आसनों पर काम और रति विराज मान थे। सत्य तो यह है कि जिस मुद्रा और जिन शब्दोंमें स्वामीजीने लेखकसे इस अनुष्ठानका शाब्दिक चित्रण किया था उसको वर्णन करनेमें सर्वथा अयोग्यता प्रकट करता है। इसका कारण वास्तवमें यह है कि लेखक इस प्रकार ध्यानमग्न हो जाता है कि वाक्योंकी रचना समाप्त

हो जाती है। यह अनुष्ठान उस ही समयके कुछ दिनों पूर्व की बात है जबकि जोधपुरके एक बड़े अधिकारी ठिकाना मेवासाकी सरहदमें एक संमुख खड़े हिरनका शिकार करने में असफल रहा तो राज्य सरकारने नियम बनाकर ठिकाना मेवासाकी सरहदमें शिकार खेलना वर्जित कर दिया गया। यह नियम शायद आजतक भी लागू है।

सिद्ध महात्माजीके आदेशानुसार स्वामीजीने अनेकों तत्वाधिकार सम्बन्धी साधनायें कीं और मन्त्र सिद्ध किये। आप दिनोंदिन गम्भीर तथा मौन मुद्रामें रहने लगे थे। सिद्ध महात्माजी जैसा कि स्वामीजी कहा करते थे स्वयं शंकर थे। उनको हर प्रकारका ज्ञान था और उसका कोई अन्त भी नजर नहीं आता था।

स्वामीजीके कथनानुसार सिद्ध महात्माजीने उन्हें अन्तमें एक दिन स्वयंकी गद्दी पर बैठनेका आदेश दिया। यह स्थान सिद्ध महात्माजीके भजन-पूजनका गुप्त स्थान था जहां प्रत्येक व्यक्ति नहीं जा सकता था। गद्दी पर बैठनेका आदेश सुनकर स्वामीजी बड़े सकुचाये परन्तु सिद्ध महात्माजीकी कड़ी आज्ञानुसार ऐसा करना ही पड़ा। सिद्ध महात्माजीके पास ही बैठकर ध्यानमग्न हो गये। उनके नेत्र खुलने पर स्वामीजी ने बताया कि "देखते ही देखते उनका शरीर बढ़ने लगा और उनका पूर्ण अस्थित्व सहस्त्रभुजा कालीमें परिवर्तित हो गया। नीलाम्बरा श्री सहस्त्रभुजा कालीके प्रकाशसे स्थान महान् प्रकाशित हो गया और मुझे आँखें बन्द कर लेनी पड़ी और हाथ जोड़कर स्तुतिके अतिरिक्त मेरे ध्यानमें कुछ न आ सका। उस समय में श्री गुरुमहाराजको भी बिलकुल भूल गया था। कुछ देर पश्चात् मैंने फिर आँखें खोलीं और इस बार मैंने देखा कि प्रकाश बड़ा शीतल है श्री सहस्त्रभुजाके सामने दायीं ओर शंकर, बाईं ओर ब्रह्मा, पीछे दायीं ओर विष्णु और बाईं ओर इन्द्र भगवतीकी प्रार्थना कर रहे हैं। तेज फिर बढ़ा और फिर मुझे आँखें बन्द कर लेनी पड़ीं और स्तुति करने लगा, दूसरी बार मैंने फिर आँखें खोलीं और देखा कि श्रीगुरु महाराज मेरी ओर देख रहे हैं। और जो कुछ मैंने देखा वह केवल स्वप्न सा था। इस घटना के पश्चात् पूज्य श्री बड़े महात्माजीने स्वामीजीको कुछ रहस्यपूर्ण पुस्तकें प्रदान कीं। स्वामीजी इन पुस्तकोंको ठिकाना मेवासाकी वास्तविक निधि और साधकोंका प्राण कहा करते थे। इन अमूल्य पुस्तकोंको स्वामीजी ठिकाना मेवासासे विदा होते समय वहीं किसी गुप्त रीतिसे सुरक्षित रख आये थे। ऐसा अनुमान किया जाता है कि वे पुस्तकें अब भी वहां ही उपस्थित होंगी। स्वामीजीने एक बार बताया था कि पुस्तकोंके गुप्त संकेतों को समझना दूसरेके लिए कठिन होनेके कारण पुस्तकोंको गुप्त रखा गया था। उदाहरणके ढंग पर एक पुस्तकमें एक स्थानसे दूसरे स्थान को उड़कर जानेके यंत्रमें उतरते समय पैरके बल आकाशसे पृथ्वीकी ओरका निर्देशन है। यदि इस निर्देशनका सतर्कता से पालन न किया जावे तो प्राणोंका भय उपस्थित हो जाता है। यंत्रकी गति उसको मुखमें रखते ही आरम्भ हो जाती है। साधकको देहलीसे लंदन पहुँचनेमें एक मिनिट से भी कम समय लगता है। यंत्र जब तक साधकके मुखमें रहता है वह अदृश्य रहता है। दूसरे यंत्रमें जो अदृश्यता से सम्बन्ध रखता है उसमें यंत्र दाँये हाथके बाजू पर बांधना पड़ता है। शरीर अपनी सूक्ष्मता अनुभव करने लगता है। इसके लिए साधकको चाहिए कि एक वर्ष तक फलोंके रसके अतिरिक्त जलका भी प्रयोग न करें। ठिकाना मेवासा में रहते समय पूज्य श्री बड़े महात्माजीकी आज्ञानुसार स्वामीजीको वर्षमें एक बार जोधपुर राजमहलोंमें भी जाना पड़ता था और वह दिन होता था महाराजा जोधपुरकी शुभ वर्षगांठका। इस अवसर पर महाराजा जोधपुर और उनके अन्य कुटुम्बी राजमहलोंमें स्वामीजीका बड़ी श्रद्धा और भक्तिसे आदर-सत्कार किया करते थे।

स्वामीजीने पूज्य श्री बड़े महात्माजीकी अन्तिम लीला साधनागृह ही में देखी जबकि पूज्यश्री महात्माजी वहां ध्यानस्थ स्थित थे। इस अवसर पर स्वामीजीने पूज्य श्री बड़े महात्माजीके शरीरसे अनेकों रश्मियोंको निकल कर अपने शरीरमें प्रवेश करते देखा और उस ही दिनसे स्वामी जी निर्द्वन्द्व गम्भीर तथा जीवनकी सारी आवश्यकताओंसे मुक्त होकर परमानन्द अवस्थामें रहने लगे। इस लीलाके कुछ दिनों पश्चात् ही पूज्य श्री बड़े महात्माजीने समाधि प्राप्त कर ली।

पूज्य श्री बड़े महात्माजीकी समाधीके पश्चात् यद्यपि आप ठिकाने मेवासाके निर्विवाद अधिकारी थे, परन्तु आपने स्वर्णके बन्धनमें रहकर जीवन बितानेसे साफ इनकार कर

दिया और यही नहीं जोधपुरसे जयपुर पधार आये।

जयपुरमें आकर आप गलताजीमें ठहरे। यहां जयपुर नरेश सर सवाई माधवसिंहजी द्वितीयने आपको जागीर भेंट करनेकी इच्छा व्यक्त की, परन्तु आपने इस प्रार्थनाको भी स्वीकार नहीं किया। श्री गलताजीमें आपसे नगरके बड़े-बड़े पंडित सिद्ध और साधक आकर मिलने लगे और अल्पकालमें ही आप अपनी सर्वांगीण निपुणताके लिये प्रसिद्ध हो गये। परन्तु आपका लक्ष्य था शाक्तधर्मका प्रचार तथा संस्कृत-भाषाका प्रसार और इसको वे शान्तिसे गुप्त रहकर करना चाहते थे। अतः आपने तुरन्त ही गलताजीसे प्रस्थानका निश्चय कर लिया और लैला मजनूकी बगीची दरीबापान जयपुरमें विराजकर श्री सरस्वती विद्यालयकी स्थापना की। जयपुर नगरके प्रसिद्ध प्रकाण्ड पण्डित परम-पूज्य आशुकवि परमशाक्त प्रोफेसर श्री हरि शास्त्री स्वामीजी के बड़े कृपापात्र और विश्वसनीय रहे और शास्त्रीजी महा-राजके हार्दिक योगसे श्री सरस्वती विद्यालयका अफिलियेशन बनारस तथा कलकत्ता विश्वविद्यालयसे होगया। श्री सरस्वती विद्यालय अपनी उच्चताके लिए नगरमें ही नहीं अपितु राजस्थानमें प्रसिद्ध होगया और सैकड़ों विद्यार्थियोंको प्रतिवर्ष इससे बड़ा लाभ होने लगा। विद्यालयकी विशेषता यह थी कि विद्यार्थी अपना सारा काम स्वयं करते थे और स्वामीजी भिक्षा द्वारा अपना जीवन निर्वाह करते थे। विद्या-लयका सामान एक टाइमपीस, वेद, एक घड़ा और एक बाल्टी रस्सी था। विद्यालय प्राचीन गुरुकुलका जीवित चित्र था। स्वामीजीकी विद्वत्ता नगरमें अद्वितीय मानी जाती थी। विद्यार्थियोंकी भी श्रद्धा और भक्ति अटूट थी और उनको स्वामीजीके पास पढ़नेका अभिमान था। कालेजोंके समकक्ष होनेके कारण एक बार पं० जुगलकिशोरजी शर्मा एम० ए० निरीक्षक संस्कृत पाठशाला, जयपुर राज्य, जयपुर और वर्त-मान रजिस्ट्रार विभागीय परीक्षायें राजस्थान, जयपुरने डाइरेक्टर आफ एजूकेशन श्री विलियम ओवन्ससे श्री सरस्वती पाठशालाके निरीक्षणकी प्रार्थना की। श्री विलियम ओवन्स विद्यालयका प्रत्यक्ष निरीक्षण करके बड़े प्रभावित हुए और स्वामीजीने द्रव्यके प्रति घृणा प्रकट करते हुए श्री ओवेन्सकी प्रार्थनाको अस्वीकार किया। इसका श्री ओवेन्स पर असाधारण प्रभाव पड़ा। विद्यालयसे प्रस्थान करते समय जब श्री ओवेन्सने स्वामीजीसे हाथ मिलानेको अपना हाथ बढ़ाया तो आपने हाथ मिलानेसे इनकार कर दिया और हँस कर उपदेश दिया कि "आपकी आयु लगभग ५० वर्षसे ऊपर हो गई है, अब आपको मेरी तरहसे संन्यासी होकर रहना चाहिए और उस समय आपका हाथ मेरे हाथसे मिल सकेगा। गृहस्थ और संन्यासीका हाथ नहीं मिला करता।" साहब पर इस उपदेशका भारी प्रभाव पड़ा और फिर कई बार अकेले स्वामीजीसे आकर विद्यालयमें मिले जिसके बारे में निश्चित कुछ भी नहीं लिखा जा सकता। श्री जुगल-किशोरजी शर्मा पर स्वामीजी की बड़ी कृपा थी और श्री जुगलकिशोरजी शर्मा भी अपनी ओरसे विद्यालयकी सेवा में कोई कमी नहीं रखते थे। जयपुरमें स्वामीजीका अधि-कांश समय विद्यार्थियोंके पाठनमें ही व्यतीत होता था।

स्वामीजी प्रातः ३ बजे उठा करते थे। इस समय सब से पहिले स्नानादिसे निवृत्त होकर अपनी साधना आदि करते थे। आप सहस्रभुजा महामायाको चराचरकी उत्पन्न-कर्ता मानते थे। जिस भाषामें तथा मुद्रामें स्वामीजी सहस्र-भुजा महामायाके स्वरूपका वर्णन करते थे वह लेखकके लिए लिखना असम्भव है। परन्तु उस आनन्दका जो अंश भी शब्दोंमें बंध सकता है पाठकोंके सामने उपस्थित किया जाता है। अति आनन्दमुद्रामें स्वामीजी वर्णन करते थे कि सहस्र-भुजा नीलाम्बरा जिस समय अपने असंख्य चन्द्र सूर्यके तेज के साथ अपने सिंहासनसे तनिक हिल भी जाती है तो ब्रह्मा विष्णु और शंकर कांप उठते हैं। जिस समय भक्त पाहिमाम्, शब्द उच्चारण करता है तो 'पा' कहनेके साथ ही संसारका सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान कर देती है, 'ही' के उच्चा-रण होने पर सारे दैविक सुख भोग दे डालती है और 'माम्' कहते-कहते तो स्वयंको भक्तके सुपुर्द कर देती है। आपका कथन था कि सोलह महाविद्या उसके तेजसे ही उत्पन्न हुई थी। श्री सहस्रभुजा अजन्मा है और उसने न तो कभी किसी राक्षससे युद्ध ही किया न संसारमें अवतारके रूपमें ही प्रकटी है। देवता और राक्षसोंके सारे नाटक उसके संकेतसे हुए और त्रिलोकीका संचालन उसकी इच्छासे होता है, वह प्रत्येक स्थान पर उपस्थित है, सबको देखती है तथा सर्व-शक्तिमान है। वह ही केवल एक अधिष्ठात्री है, वह ब्रह्माकी जननी, विष्णुकी पालिका, तथा शंकरके सारे तेजको स्वयंमें

व्याप्त करनेमें समर्थ है। त्रिलोकी उसकी नाट्यशाला है और देव, दानव, मानव, थलचर, जलचर और नभचर सब उसके नाटकके पात्र हैं। वह सबमें है और सबसे अलग भी। वह सब कुछ करती है और कुछ भी नहीं करती, वह दयामयी है, वह सत्य है, वह प्रेम है और वही एक माया और ब्रह्मके मिलनेका बिन्दु है।

उसका निराकारस्वरूप बिन्दु है। वह बिन्दुसे अक्षर और मात्रिकाओंका रूप धारण करती है, प्रत्येक मात्रिका पृथक्-पृथक् देवताओंका बीज और शक्ति है। स्वामीजीका कहना था कि साधक इस बातको न जानकर विफलताको प्राप्त करते हैं कि अक्षर और मात्रिकामें ही मूल अनुभव करनेकी बात है। मात्रिकायें सूर्यकी रश्मियोंमें उपस्थित हैं और रश्मियों द्वारा सारे वातावरणमें फैलकर शक्तिका संचालन करती हैं। ये मानव शरीरमें व्याप्त हैं। प्रथम मात्रिकाओंको अपने शरीरमें अनुभव करना चाहिए। फिर ये वातावरण तथा रश्मियोंमें अनुभव की जावे और इस प्रकार इनके द्वारा बिन्दु स्वरूपका अनुभव किया जावे। स्वामीजीके रहन-सहनकी तो बात ही क्या, पृथ्वी पर मिट्टी बिछाकर आप विराजते थे और यही आपकी शयन-शैया थी। काशाय रंगका साफा, एक कुर्ता तथा एक जोड़ा धोती आपके वस्त्र थे। आपका जीवन अत्यधिक सादा था। कभी आप भोजन भी बनाया करते थे। आपका कहना था कि एक संन्यासीके आगके पास जानेसे संसारका सारा सुख भस्म हो जाता है, दैविक प्रयोगमें आनेवाली वस्तुओं पर कर लगानेसे बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, राजसत्ताका ह्रास हो जाता है और संसारके सारे काम उल्टे होने लगते हैं, आपका अनुशासन कठोर था। आपको स्वयं द्रव्यसे घृणा थी। किसी प्रकारकी मादक वस्तुओंके प्रयोगके घोर शत्रु थे। एक बार जोधपुरके एक संतके शिष्य श्री सूरजपुरीने स्वामीजीकी बिना आज्ञाके अपने गुरुजीसे कुछ रुपये मनिआर्डर द्वारा मंगवा लिये। स्वामीजी इस पर श्री सूरजपुरी पर इतने रुष्ट हुए कि तुरन्त विद्यालयसे निकाल कर जोधपुर भेज दिया और संत महाराजको भी बड़ा कड़ा विरोधपत्र लिखा। स्वामीजी विद्यामें द्रव्यके प्रयोगको व्यापार कहते थे जिससे किसी प्रकारका भी विकास होना सम्भव नहीं। स्वामीजीकी सम्पूर्ण दिनचर्या चमत्कारपूर्ण थी। क्या साधु, क्या संन्यासी, क्या राजा-महाराजा, क्या पंडित, क्या साधारण जन उनके चमत्कारोंसे वंचित नहीं रहता था। पग-पग पर आश्चर्यजनक चीजोंका दिखा देना और असम्भव बातोंका सम्भव बना देना उनके लिये साधारण बात थी और इस पर विशेषता यह थी कि कभी मान-गुमान छूकर भी नहीं निकला था। उनका जीवन विश्वसेवा के लिये खुला हुआ था। त्याग और दयाकी तो आपके द्वार पर नदियां बहा करती थीं, जो सबके लिये समान थी। परन्तु वे संसारके बड़े आदमियोंसे कम ही मिला करते थे। स्वामीजी अपनी धुनके इतने पक्के थे कि जब कभी वे किसी बातका निश्चय कर लेते थे तो उसको करके ही छोड़ते थे। उस समय वे चमकती हुई तलवार या दहकते हुए अंगारोंके समान होते थे। उनको कुछ कहनेमें देर लगती हो होनेमें देर नहीं लगती थी। जैसे भगवतीका स्वरूप है : "चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा" जितनी हृदयमें कृपादृष्टि होती है उतनी ही समरमें निष्ठुरता होती है। महामायाकी निष्ठुरतामें भी एक प्रकारकी कृपा ही होती है, ठीक इसी तरह स्वामीजीका स्वरूप था। सौम्य और सरलताकी मूर्ति एक कठोर और सर्वशक्तिमान् प्रतिमाका रूप धारण कर लेती थी। यही कारण था कि क्या राजा महाराजा, क्या साधु संन्यासी और अन्य जनसाधारण लोग उनसे अधिक बात करते भय खाते थे। सत्यके प्रेमीसे असत्यता या जालसाजी का व्यवहार असह्य होना प्राकृतिक बात है और इससे लोगोंमें सत्य और उत्तम बातोंसे प्रेम स्वतः ही केवल स्वामीजीके सम्पर्कमात्रसे उत्पन्न हो जाता था। स्वामीजीके सामने कोई असत्य कहनेका साहस नहीं कर सकता था। सत्य प्रेमी स्वामीजी असत्यताके घोर विरोधी और असत्य भाषीको दण्ड दिये बिना कभी स्वतन्त्र नहीं छोड़ते थे। इस सिद्धान्तका जयपुर नगरवासियों पर बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा और आचरणमें आश्चर्यजनक उन्नति हुई। स्वामीजी के कई कार्य तो इतने स्पष्ट परन्तु साधारण बुद्धिसे इतने ऊंचे होते थे कि लोग देखकर दंग और मंत्रमुग्ध हो जाते थे। सन् १९३२ के दशहरेकी घटनाका चित्र आज भी लेखकमें बड़ी क्रांति उत्पन्न कर देता है। दशहरेकी रात्रिके १०॥ बजे सहसा लेखकके मनमें स्वामीजीके दर्शनोंकी उत्कंठा उत्पन्न हुई। सरस्वती विद्यालय जाकर द्वारके किवाड़ पहिलेसे ही खुले थे, स्वामीजीकी आज्ञासे विद्यालय

के चौकमें प्रवेश किया। प्रवेश करते ही जो दृश्य देखा तो कांप उठा। स्वामीजी एक बहुत ही मस्त दशामें चौकमें मिट्टी पर शान्त और चित्त पड़े थे और आपकी बाईं छाती का भाग गहरा कटा हुआ था जिससे रक्त फव्वारेकी तरह बह रहा था और पासकी मिट्टी रक्तसे सनी पड़ी थी। लेखकका अपने पर विश्वास जाता रहा। तरह-तरहके विचार आये और गये। आंखोंको गाड़-गाड़कर देखा। चांदनीमें साफ निश्चय हो गया कि हृदय पर कोई घातक शस्त्रकी करामातसे यह सब कुछ हो रहा था। किसी डाक्टरको लाकर दिखानेके प्रस्ताव व्यक्त करनेके पूर्व शान्तिको भंग करके स्वामीजीने लेखकसे तुरन्त विद्यालयसे चले जानेको कहा। आज्ञाका पालन किया गया। परन्तु लेखकका यह अटल विश्वास बन गया कि स्वामीजी उस रात्रिको अवश्य समाधी प्राप्त कर लेंगे। अपने विश्वासकी परीक्षाको जब लेखक स्वामीजीके पास प्रातः गया तो आप सदाकी भांति दैनिककार्य में व्यस्त थे। लेखकने लज्जित हो स्वामीजीके चरण पकड़ लिये और स्वामीजीने मुस्कराकर कहा यह कोई बड़ी बात नहीं थी।

यदि प्रत्येक व्यक्तिके (जो स्वामीजीके सम्पर्कमें आया है) द्वारा अनुभव किये गये चमत्कारोंको इस लेखमें दिया जाय तो यह एक बड़ा ग्रन्थ बन जायेगा। अत: लेखक उन सबसे क्षमा चाहता है कि उनके बहुतसे अद्भुत अनुभवों को जानते हुए भी नहीं लिखा गया है। लेखमें लेखकने भी अपने अनेकों अनुभवोंमेंसे केवल एक अनुभव व्यक्त किया है। यह सत्य है कि १९४७ की घटनासे स्वामीजीकी सेवाओंका मूल्य उनके प्रति श्रद्धाभक्ति और सम्मान कहीं अधिक बढ़ा हुआ है और जयपुर नगरका प्रत्येक व्यक्ति उनके लिये व्याकुल नजर आता है। उनके भक्तोंके चेहरों पर कुम्हलाहट और दिलमें एक कसक झलकती है। एक विद्यालय जिसने हजारों विद्यार्थियोंको विद्यादान दिया जिसमें भारतीय संस्कृतिका दिग्दर्शन होता गया था जहां आचरण और सत्यमार्गकी शिक्षा दी जाती थी सहसा १९४७ में स्वामीजी द्वारा ही बन्द कर दिया गया। विद्यालयका सामान वितरित कर दिया गया और आप श्री जगमोहन नाथजी लंगरके साथ जयपुरसे उदयपुर प्रस्थानके लिए स्टेशन जाने को तैयार होगये। अन्य लोग भी आपके साथ गये। फर्स्ट क्लासमें आपने प्रवेश किया और कम्बल ओढ़कर लेटगये, पं० लगर फर्स्ट क्लासका टिकिट लाये परन्तु सबके सब क्या देखते हैं कि स्वामीजी कम्बलके अन्दरसे लुप्त हो गये हैं। सब स्थानों पर खोजा गया परन्तु अनाथोंका कल्पवृक्ष लुप्त हो गया था

जयपुरमें एक हलचल मच गई। सिद्ध और पण्डितोंका निश्चय है कि स्वामीजी हिमालय पहाड़में किसी स्थान पर किसी महात्माके स्थान पर सकुशल हैं और सम्भव है किसी समय फिर अपने भक्तोंके बीचमें आनेका कष्ट करेंगे।

स्वामीजीसे उनके सारे शिष्यों और जनसाधारणकी आग्रहपूर्ण प्रार्थना है कि एक बार अवश्य ही पधारकर दर्शनों से कृतार्थ होनेका अवसर प्रदान करें।

पुनर्जन्मकी आश्चर्यजनक सत्य घटना

[लेखक—भक्त श्री रामशरणदासजी, पिलखुवा]

पता नहीं मेरे इस धर्मप्राण भारत देशके ऋषि-मुनियों की संतान हिन्दुओंको आज न जाने क्या हो गया है कि जो उन्हें अपना तो सब कुछ बुरा प्रतीत होने लगा है और दूसरे म्लेच्छ देशोंका सब कुछ अच्छा लगने लगा है। जिन धर्म शास्त्रोंके अनुसार चलने पर कभी भारत जगद्गुरु कहलाता था और सारा विश्व भारतके सामने नतमस्तक होता था, आज वही भारत अपने शास्त्र व पुराणोंकी अवहेलना करने पर उतारू हो गया है और यहां तक शास्त्र विरोधी बनता जा रहा है कि आजके भारतीयोंको शास्त्रानुसार बैठकर मल-मूत्र का त्याग करना भी अच्छा नहीं प्रतीत होता, और वह पाश्चात्य लोगोंकी भांति शास्त्रविरुद्ध खड़े-खड़े मूतने लगे हैं, कागज से गुदा पौंछने लगे हैं और परमपवित्र चरणामृत की जगह सबकी जूठी चायकी प्यालियां पीने लगे हैं। और हवन यज्ञके धुएं उड़ानेके बदले बीड़ी, सिगार, सिगरेट के गंदे विषैले जहरीले धुँए उड़ाने लगे हैं। इतना ही नहीं आज तो भारतीयोंको शास्त्रानुसार मरना भी अच्छा नहीं लगता और अन्तिम दाह-संकार भी अच्छा नहीं लगता। उसमें भी पाश्चात्योंकी नकल करने पर उतारू हो गये हैं। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि आजके नेता प्राचीन सनातनधर्मानुसार, शास्त्रानुसार दाह-संस्कारको एकदम समाप्त करनेके लिए विदेशोंसे लाखों रुपयोंकी मुर्दा फूंकने की बिजलीकी मशीनें (यंत्र) मंगा रहे हैं, और उन्हींसे मुर्दोंको बिना जातिपांतिका विचार किये सबको बिजलीसे फूंक देनेकी योजना बना रहे हैं। दिल्लीमें बिजलीके यंत्र मुर्दे फूंकनेके लिए आ भी गये हैं।

दाह-संस्कार कितना महत्वपूर्ण संस्कार है और इसका शास्त्रानुसार होना कितना आवश्यक है ? दाह-संस्कारमें तनिक भी कमी रहनेसे मृतक आत्माको अगले जन्ममें कितना महान् भयंकर दुष्परिणाम भोगना पड़ता है इसकी यह आजके पाश्चात्य सभ्यताके रंगमें रंगे मनचले काले अंग्रेज नेता तनिक भी परवाह नहीं करते हैं। शास्त्रानुसार, धर्मानुसार दाह-संस्कार न करने से क्या-क्या भयंकर दुष्परिणाम भोगने पड़ते हैं और शास्त्रोंमें आई पुनर्जन्मकी बातें अक्षरशः सत्य कैसे हैं और आशुतोष भगवान् शंकरकी उपासनासे पुत्र प्राप्ति व मनोवांछित फलकी प्राप्ति कैसे होती है ? इस सम्बन्धकी एक बिल्कुल सत्य घटना हम पाठकों के सम्मुख रखते हैं, आशा है पाठक इसे ध्यान से पढ़नेकी कृपा करेंगे।

यह मार्च सन् १९६० की बात है कि हम मुजफ्फरनगरमें अपने भानजे नीरज के परोजनमें गये हुए थे और एक दिन सहसा काली नदीके किनारे देव मन्दिरोंके दर्शन करते हुए और किसी संतके सत्संगकी तलाशमें घूम रहे थे। अकस्मात् एक स्थान पर तख्त पर विराजमान गीताका पाठ करते एक संत दृष्टिगोचर हुए। हम उनको प्रणाम कर उनके चरणोंमें जा बैठे। संतजीके समस्त गीता कंठस्थ थी तथा उन्होंने उपनिषद् भी खूब देखे थे एवं कुछ योगाभ्यासी भी थे। आपका शुभ नाम था श्री स्वामी मदनानन्द सरस्वतीजी महाराज और आप ऋषिकेशके कैलाशवासी योगिराज पूज्यपाद श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती जी महाराजके प्रमुख शिष्योंमें से वयोवृद्ध संत थे। आप एकाक्षी (काने) संत थे। आपका सत्संग प्राप्त कर हमें बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। शास्त्र पुराणोंके सम्बन्धमें प्रसंग चलने पर महाराजने कहना आरम्भ किया—

"हमारे सनातनधर्मके शास्त्रपुराणोंकी सभी बातें अक्षरशः सत्य हैं; पर आजके पाश्चात्य सभ्यताके चकाचौंध में फंसे मनुष्य इन्हें माननेके लिए तैयार नहीं हैं, यह देश का दुर्भाग्य नहीं तो क्या है ? शास्त्र पुराणोंकी बातें इतनी सत्य हैं कि मैं इसका प्रत्यक्ष जीता-जागता प्रमाण आपके सामने हूँ, पर आजके घोर कलिकालके युगमें मेरी बातोंको कोई सत्य कैसे मानने लगा ? मेरी एक आंखका न होना एवं मेरा जन्म होना यह सब बातें, शास्त्रोंकी बातें सत्य हैं इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं पर कोई माने तो ?"

हमें संतजीके मुख से यह सुनकर बड़ा भारी आश्चर्य हुआ और हमने संतजी से प्रार्थना की कि महाराजजी ! आप शास्त्रोंकी बातें अक्षरशः सत्य हैं इसका प्रत्यक्ष प्रमाण कैसे हैं ? कृपा कर हमें अवश्य सुनाइये।

संतजी—भाई ! मेरे जीवनकी यह बड़ी महान् आश्चर्य-जनक बिल्कुल सत्य घटनायें कि जिन्हें सुनकर बड़े-बड़े घोर नास्तिकोंकी बोलती एकदम बन्द हो जाती है और शास्त्र-पुराणोंकी बातें अक्षरशः सत्य हैं इसमें तनिक भी सन्देह नहीं रहता। मैं गीता हाथमें लेकर शपथपूर्वक कहता हूँ जो भी मैं आपको सुनाने जा रहा हूं वह अक्षरशः सत्य है तनिक भी झूठ नहीं है और झूठ बोलकर आपसे या किसी से कुछ लेना भी नहीं है।

मैं—नहीं महाराजजी ! आप निःसंकोच सुनाइये। हम आपकी बातें बड़े ध्यानसे सुनेंगे तथा औरों तक भी पहुँचाकर शास्त्रोंकी बातोंमें सबको श्रद्धा विश्वास हो इसका प्रयत्न करेंगे।

संतजी—अच्छा तो सुनिये ध्यान से मेरी बातें, कि मैं बाबा होकर पोतेके रूपमें जन्म लेकर कैसे आया और मेरी माताने भगवान् श्री शंकरकी पूजा आराधनाका फल मुझ पुत्र के रूपमें कैसे पाया ? दाह-संस्कार में कमी रहनेके कारण मैं एक आंखवाला कैसे उत्पन्न हुआ ? मैं अपने जीवनकी यह महान् आश्चर्यजनक बिल्कुल सत्य घटना पूरी ज्यों की त्यों सुनाता हूँ।

बाबा दूसरे जन्ममें पोता कैसे बना ?

मेरा जन्म जिला कानपुरके तहसील देरापुरमें संवत् १६४२ में हुआ था। मैं जातिका दुबे ब्राह्मण हूँ और मेरे पूज्य पिताका शुभ नाम पं० श्री मथुरी दुबे अर्थात् पं० मथुराप्रसाद दुबे था और माताजीका शुभ नाम श्री दुलारी देवी था। पूज्य बाबाजीका शुभ नाम श्री परमसुख दुबे था। हमारी पूज्या माताजीके चार लड़कियाँ हुईं पर लड़का कोई नहीं हुआ। वह लड़का न होनेके कारण दिन रात चिन्ता में निमग्न रहा करती थी और साधु-सन्तोंसे भी यह पूछा करती थीं। किसी के बताने के अनुसार उन्होंने पुत्रप्राप्ति के लिये आशुतोष भगवान् श्रीशङ्करकी शरण ली। हमारे ग्रामके बहार पं० श्री कनौजीलाल मिश्रका बनवाया हुआ भगवान् श्री शङ्करका मन्दिर था जो पीर पहलवान्के नाम से प्रसिद्ध था। इन्हीं भगवान शङ्करकी हमारी पूज्य माताजी ने पुत्र प्राप्तिके निमित्त पूजा आराधना करना प्रारम्भ कर दिया। प्रतिदिन दोनों समय वह श्रीशङ्कर मन्दिर जाय और बड़े प्रेम से श्रीशङ्करका पूजन करे, भजन करें, दीपक बाले और शङ्कर से पुत्र प्राप्तिके लिये करुण प्रार्थना करे। आशुतोष भगवान् शङ्कर बड़े ही परम कृपालु हैं, दयालु हैं, उन्होंने माताजीकी प्रार्थनाको तत्काल सुना। भला शास्त्रोंकी बात कि शंकरकी अराधनासे अवश्य ही पुत्र प्राप्ति होती है कैसे झूठ हो सकती है ? पर जहां शास्त्रानुसार चल कर शंकर पूजन करनेसे शंकर प्रसन्न हुए वहां और उनकी कृपासे पुत्र प्राप्तिका शुभ अवसर हाथमें आया। अकस्मात् एक कार्य शास्त्र विरुद्ध होनेके कारण एक घोर अनर्थ भी हो गया। बात यह हुई कि इसी बीच अकस्मात् हमारे पूज्य बाबा श्री परमसुख दुबेजी का स्वर्गवास हो गया। आपकी आयु उस समय लगभग ६० वर्षकी थी। प्राचीन ढंग के पंडित थे। नीचे तक का अंगरखा पहिना करते थे और लाठी लेकर चला करते थे। शरीर पूरा होने पर उन्हें मृतक घाट (श्मशान भूमि) में ले जाया गया। शास्त्रानुसार यह प्रथा है कि सूर्यास्त होते समय मुर्दा नहीं फूंका जाता, सूर्यास्तके समय दाह संस्कार करना पाप माना जाता है। किन्तु हमारे घर वालोंने बिना इस बातकी परवाह किये सूर्यास्त के समय ही शास्त्र विरुद्ध दाह संस्कार कर डाला।

हमारे पूज्य बाबा (पितामह) जी के शास्त्र विरुद्ध दाह कर्म संस्कार करने का महान् घोर भयंकर दुष्परिणाम यह हुआ कि जो आज उन्हीं बाबा को मुझ पोतेके रूपमें आकर आज तक भोगना पड़ रहा है, जो आपके सामने है अर्थात् मेरा एक आंख से हाथ धो बैठना।

स्वप्नमें एक आंख वाला पुत्र होनेकी सूचना

बात यह हुई कि एक दिन रात्रि में हमारी पूज्या माता जी को पूज्य बाबाजीने स्वप्नमें दर्शन देकर कहा कि तुम लोगोंने हमारा दाहकर्म सूर्यास्तके समय कर दिया इसलिये हमारा क्रियाकर्म भ्रष्ट हो गया। शङ्कर पूजनसे तुम्हारे पुत्र होगा और हम ही तुम्हारी कोखसे पुत्र बनकर जन्म लेंगे

तथा सूर्यास्तके समय हमारा दाहकर्म करनेके कारण हमारा एक नेत्र जाता रहा। हम तुम्हारे एक नेत्र वाले अर्थात् काने पुत्र होंगे।

माताजी को यह स्वप्न देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने बाबाकी यह भविष्यवाणी कि मैं ही पोते के रूप में जन्म लेकर आऊंगा सबको सुनाई। स्वप्नके कुछ दिनों पश्चात् ही माताजी को गर्भ रहा और मैं बाबाकी भविष्यवाणी के अनुसार ठीक एक आंख वाला पुत्र उत्पन्न हुआ।

पूर्वजन्म की बातें कैसे बताई ?

जहाँ शास्त्र विरुद्ध सूर्यास्तके समय दाहकर्म करने के कारण बाबाको मुझ पोतेके रूपमें आकर एक आंखसे हाथ धोकर आज तक कष्ट उठाना पड़ रहा है, वहाँ जीवनभर मेरी माताको भी मेरी एक आंख न होने का बड़ा दुःख रहा। जब मैं बड़ा हुआ और बोलने लगा तो मैं सबके सामने बाबा होनेका प्रत्यक्ष प्रमाण देने लगा। मैं सबको यह बताने लगा कि यह मेरी लाठी है, जिसे मैं पूर्वजन्म में बूढ़ा होने के कारण लेकर चला करता था। यह मेरा अंगरखा है जिसे मैं पहिना करता था। अमुक हमारे रिश्तेदार हैं। यह सब बातें बताने पर भी माताने मेरी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया और उसने यह समझा इसे भूतप्रेतकी बीमारी है। आगे जाकर मैं बड़ी-बड़ी विचित्र बातें बतलाने लगा और पूर्वजन्ममें जब मैं बाबा था उस समयके गाड़े हुये रुपये बताकर सबके सामने उखाड़ कर दिखाये तो सब आश्चर्यचकित रह गये और बरबस सबको यह एक स्वरसे स्वीकार करना पड़ा कि वास्तवमें बाबा ही पोतेके रूप में जन्म लेकर आये हैं और इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। बहुत दिनों तक इसी प्रकार मैंने पूर्वजन्मकी सभी सत्य बातें बता कर चमत्कार दिखाये, बादमें माताजीने कान बिंधवा दिये जिससे मैं सब कुछ भूल गया और मुझे कुछ भी याद नहीं रहा।

शास्त्र विरुद्ध, सनातनधर्म विरुद्ध दाहकर्म होने के कारण जहां मुझे आंख से हाथ धोना पड़ा। और मेरे परिवार वालोंको भी इस बातसे बड़ा घोर दुःख हुआ वहां माता जी द्वारा की गई पुत्र प्राप्तिके लिये श्रीशङ्कर आराधनाके कारण मुझे उनके लिये पुत्रके रूपमें आना पड़ा। हम बहुत दिनों तक तो घर पर रहे, पहलवानी करते रहे, नौकरी भी की किन्तु अन्तमें सब कुछ छोड़छाड़ कर ऋषिकेशके स्व० महान् योगिराज संत श्री स्वामी श्री सत्यानन्द सरस्वतीजी महाराजकी शरणमें आ गये और उन्हीं से संन्यास लिया। माताजीने हमारा नाम मदन रखा था किन्तु पूज्य गुरूजी महाराजने संन्यासके समय मदनसे मदनानन्द सरस्वती परिवर्तित कर दिया। हमें गुरुदेवने गीता, उपनिषद्, आदि का स्वाध्याय कराया, योगाभ्यास भी सिखाया और इस प्रकार परमार्थ पथका पथिक बना दिया। मुझे अपने जीवन की इन सभी सत्य घटनाओंसे यह स्पष्ट सिद्ध हो गया कि शास्त्र पुराणोंमें जो श्रीशङ्कर आराधना, विष्णु आराधनाके फल बताये गये हैं वह बिल्कुल ही सत्य हैं, मेरी पूज्या माताने शंकर आराधना से मुझे पुत्र रूपमें प्राप्त किया यह इस बातका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

शास्त्र पुराणोंमें जो पुनर्जन्मकी हजारों घटनायें भरी पड़ी हैं जिन्हें आजके शिक्षित कहलाने वाले बाबू लोग नहीं मानते और मुसलमान ईसाई तो पुनर्जन्मके सिद्धान्तमें विश्वास ही नहीं करते, हम बाबा होकर पोतेके रूपमें जन्म लेकर किस प्रकार आये एवं पहिले जन्मकी गुप्त बातें प्रत्यक्ष कैसे बताकर आश्चर्यचकित किया ? इससे बढ़कर पुनर्जन्म का प्रत्यक्ष प्रमाण और क्या होगा ?' आशा है पाठक इन सत्य घटनाओंसे शिक्षा ले शास्त्र पुराणोंकी महत्ताको स्वीकार करके आत्म कल्याणका मार्ग प्रशस्त करेंगे।

—

ज्योतिषके अनुभव-सिद्ध योग

[लेखक—श्री पं० परमानन्द ज्योतिषज्ञ, फूलियां कलां (राज०)]

ज्योतिष शास्त्र पर आस्था एवं सत्यता प्रकट करने वाले हमारे अनुभूत योग गतांकमें दिये थे। अब हम पाठकोंकी सेवामें पुत्र-पुत्री संख्या योग, एवं भाग्योदयादिके समयका ज्ञानादिक योग दे रहे हैं जिसे देखकर ज्योतिषके पूर्वाचार्यों को धन्यवाद दें।

पुत्र-पुत्री संख्या योग—

(१) पंचम स्थानमें यदि शनि पड़ा हो तो उस व्यक्ति के कन्या संतान ज्यादा होती है। याने पंचम स्थित शनिसे ७ सात कन्यायें होती हैं। किन्तु ये कन्यायें तभी जीवित रहती हैं जबकि शनि, तुला या मेष राशिका हो।

कुम्भराशिका शनि यदि ६ अंश से १३ अंश एवं १६ अंश से २८ अंश तकका हो तो लगातार पांच पुत्र होते हैं।

यदि मकर राशिका शनि ६ अंश २४ कलाके भीतर हो तो तीन लड़के पैदा होते हैं!

२. पंचम स्थानमें राहु या केतु होवें तो संतान बहुत कम होती है यदि होती है, तो नष्ट हो जाती है। साथ ही यह भी ध्यान रखा जाय कि पंचम स्थानकी राशि मेष, वृष, एवं कर्क हो और इनमें राहु या केतु पड़ा हो तो संतान होने में कोई विलम्ब नहीं होता, एक लड़की तथा एक लड़का उत्पन्न होता है। उच्च अथवा नीच राशिका केतु, पंचम में हो और उसे कोई ग्रहपूर्ण दृष्टिसे नहीं देखें तो चार स्त्रियोंसे विवाह करने पर भी संतानकी आशा नहीं रखना चाहिए।

३. यदि गुरु पंचममें गया हो तो लगातार पांच पुत्र होते हैं किन्तु पंचम स्थानमें धनुः या मीन राशि नहीं होना चाहिए अन्यथा इन राशियोंके होने से एवं उसमें गुरू १० अंश से २८ अंशके बीच होवे तो उनके संतानका अभाव रहता है। पंचम स्थानमें उपरोक्त राशियां हों और उनमें कोई ग्रह नहीं गया हो तथा गुरुकी दृष्टि हो तो अवश्य ही क्रमशः २ लड़के १ लड़की पैदा होते हैं।

४. पंचम स्थानमें यदि मकरका मंगल हो तो २ लड़के जीवित रहते हैं। अन्य राशिका होने से जीवित नहीं रहते हैं तथा लड़कियां ज्यादा होती हैं। अन्य राशियोंका मंगल पंचम स्थानमें हो तो ५ लड़कियां एवं तीन लड़के होते हैं, जिनमें से लड़के अधिकतर मृत्युको प्राप्त होते हैं। अक्सर हमने यह देखा कि जिसके उच्चका या स्वगृहीका मंगल पंचममें नहीं है तो पुत्रका सुख उस व्यक्तिको नहींके बराबर होता है।

५. सूर्य, चन्द्रमा, बुध और शुक्रके पंचम स्थानमें जानेसे क्रमशः १ पुत्र २ कन्या तथा यमल १ लड़का-लड़की; तीन कन्या तथा एक पुत्र हो जिसमें पुत्र मृतावस्थाको प्राप्त होता है। ३ कन्या १ लड़का (मृतावस्था प्राप्त), १ लड़की एवं शुक्र से ४ कन्यायें, १ पुत्र तथा २ पुत्रियां पैदा होती हैं। सामान्य नियम—अधोलिखितका भी पूर्ण ध्यान रखें।

(अ) लग्नका स्वामी लग्न, दूसरे, तीसरे, हो तो प्रथम संतान पुत्र होता है। लग्नेश चतुर्थ पंचम, षष्ठमें हो तो कन्या प्रथम एवं बाद लड़का पैदा होता है। लग्नेश सप्तम, अष्टम, नवम हो तो प्रथम पुत्र तथा बाद कन्या संतान होती हैं। एवं लग्नेश दशम, एकादश, द्वादश में गया हो तो प्रथम कन्या बाद पुत्र पैदा होते हैं।

(ब) पंचम स्थानमें स्थित ग्रहों एवं उन पर जिन-जिन ग्रहोंकी पूर्ण दृष्टि हो उससे तथा ऊपरी नियमोंसे संतान निर्णय करें, जितने इनमें स्त्री संज्ञक ग्रह हों उनसे लड़कियां एवं पुरुष संज्ञक ग्रहों से लड़कोंका अनुमान करना चाहिए।

भाग्य भवन विचार

मनुष्यको कंगालसे कोट्यधिपति एवं कोट्यधिपतिसे कंगाल बनाना भाग्यका ही खिलवाड़ है। इसका निर्णय करने में सूक्ष्म अन्वेषणकी आवश्यकता है। हमारे कुछ परीक्षित योगोंसे भाग्यका निर्णय ठीक बैठता है।

भाग्य भवनमें ग्रहोंके जाने से या उन पर पूर्ण दृष्टि प्रभुत्वसे ही ये वर्ष भाग्योदयादिक एवं अधोलिखित

लाक्षणिक समझेंगे।

सूर्य—नवम स्थानमें सूर्यके जानेसे या पूर्ण दृष्टिसे उस व्यक्तिकी प्रारम्भिक स्थिति कष्टप्रद होती है, याने प्रारम्भिक समयमें वह व्यक्ति धन, धर्म, एवं चरित्रसे पतित हो जाता है। यदि उच्च या स्वगृही सूर्य हो तो धन-धान्य, धार्मिकता तथा चारित्रिकताकी चर्मोन्नति होती है। उसे आदर्श मार्ग की ओर अग्रसर करता है। सामान्य तया भाग्योदय इस ग्रहसे पूर्णतया २२ वें वर्षसे २४ वें वर्षके मध्य होता है, तथा १६, २०, २२, २४, २६, ३४, ३६, ४२, ४५, ४८, ५६, ७१ वें वर्ष विशेष महत्त्वपूर्ण होते हैं। जिनमें ऊपर बतलाई बातोंकी विशेष प्रगति होती है और भाग्योदयादि के सर्वोत्तम वर्ष होते हैं!

चन्द्रमा—नवम स्थित चन्द्र या दृष्टि बलसे वह व्यक्ति भाग्यवान्, धार्मिक वृत्ति वाला, पितृ यज्ञोंका करने कराने वाला, नौकरी पेशासे धार्मिक वृत्तियोंके कार्योंको करके द्रव्य उपार्जन करने वाला होता हैं। यदि क्षीण निर्बली चन्द्र हो तो उपरोक्त फलमें प्रारम्भिक जीवनके दिनोंमें कमी करता है। उस व्यक्तिका सामान्यतया भाग्योदयादिका समय २४ वां एवं २५ वां वर्ष होता है। इनके अतिरिक्त १८ वां २१, २५, २७, ३०, ३३, ३५, ४४, ४६, ५८, ७२, ७४ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होकरके उपरोक्त लक्षणोंकी एवं कार्योंकी उल्लिखित वर्षोंमें भाग्योन्नति होती है।

मंगल—जिस व्यक्तिके ९ में मंगल हो वह व्यक्ति प्रायः मन्द भागी होता है। उसकी प्रकृत्ति सदा उष्ण होती है। मादक वस्तुएँ भांग गांजा आदिका सेवन करने वाला होवे, सदा आनन्दमग्न दुखी होते हुये भी अपने आपको रखे। भगवान् शंकरकी भक्ति करने वाला होवे। भाग्योदय वर्ष उस व्यक्ति के २० वें वर्ष से ३२ वें वर्ष के भीतर जब कभी अन्तर मंगल या मंगलके मित्रका समय हो तभी पूर्ण भाग्योदय होता है। प्रारम्भिक समय ऐसे व्यक्तिका कष्ट साध्य एवं प्रांपचिकता लिये होता है। यदि नीच या विकृतावस्था का मंगल हो तो वह व्यक्ति सदा अपने किये कार्यों का विपरीत ही फल प्राप्त करता है, अर्थात् अनुकूल नहीं। १६, २१, २४, २८, ३२, ३३, ३७, ३९, ४३, ४६, ४९, ५१, ६७ वां वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं।

बुध—इस ग्रहके नवम भावमें स्थित होनेसे व्यक्ति अच्छे भाग्य वाला होता है। पाप दृष्टिसे युत या नीचका हो तो व्यक्ति मंदभागी तथा आर्थिक दृष्टिसे दुखी होता है। इस ग्रहके प्रभावसे व्यक्ति बौद्ध धर्मानुयायी या आर्य समाजी होता है। अधिक वाक् चातुरी वाला होवे। स्वगृही या शुभ दृष्टि उच्चका होनेसे व्यक्ति लोकपूज्य एवं धन यश वाला होता है। भाग्योदयादिका समय ३२ वें वर्ष से ३६ वें वर्षके बीच होता है। इनके अतिरिक्त १७, ३२, ४७, ५३, ५७, ६१, ७३ वाँ वर्ष विशेष महत्वशाली तथा भाग्योदयकारक होते हैं।

गुरु—नवम भाव गुरुसे युक्त वा दृष्ट हो तो अनेक देशों का भ्रमण करने वाला, गौर शरीर वाला, सभी सुखों से युक्त, बुद्धिमान्, गुणी, कुलमुख्य, विद्वान्, शिक्षाविभागीय या विश्वविद्यालयोंमें शिक्षक, प्रोफेसर, लेक्चरार या आफीसर तथा बड़ा उपदेशक होता है। रत्नादिक या रुई, चांदी, सोना का अच्छा व्यापारी भी हो सकता है। भाग्योदय समय १६ वें वर्षसे २३ वें वर्षके भीतर होता है। कम समयमें ही अच्छी कुशाग्र बुद्धि एवं प्रगति वाला होता है। यदि नीच या पाप दृष्ट तथा विकृतावस्था का गुरु हो तो अपनी अन्तरदशाओं तथा दशाओंमें उपरि कारणोंमें भयंकर आपत्तियोंका देने वाला होता है। भाग्यशाली वर्ष १८, २२, २४, २७, २९, ३२, ३६, ४२, ४८, ५२, ६० वां वर्ष विशेष महत्वशाली होते हैं।

शुक्र—यदि नवम भावमें शुक्र नीच या पाप दृष्ट युक्त हो तो वह व्यक्ति दुर्भाग्यशाली तथा शरीरमें शुक्र सम्बन्धी बीमारी वाला होता है। यदि शुक्र स्थिति ठीक हो तो व्यक्तिकी मेल-मुलाकात, उठ-बैठ, बड़े व्यक्तियोंसे होती है। गुरु भक्ति रखने वाला, अनेक धन्धों को करके धनोपार्जन करने वाला तथा अपनी भुजाओं के बल पर नाचने वाला होवे। यदि शुक्र स्थिति अति श्रेष्ठ हो तो सेनाध्यक्ष, शस्त्र निर्माणकर्ता, युद्धादिके कार्यों में चतुर होता है। भाग्योदयके वर्षोंका समय २५ वें वर्षसे २८ वें वर्ष तक होता है। इनके अतिरिक्त १८, २३, २५, २८, ३१, ३५, ३८, ४१, ४६, ४९, ५४, ५८, ६३ वां वर्ष भी महत्वपूर्ण होता है।

शनि—इस ग्रह की सुधरी स्थिति वाला व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली होता है। किन्तु प्रारम्भिक समय खराब एवं प्रभुकी तरफसे परीक्षाओंका होता है। बाद इनके ३८ वें वर्षसे व्यक्ति अनेक ऐश्वर्य भोगने वाला होता है। बुद्धि बड़ी कुशाग्र होती है। यदि उच्च राशिका शनि भाग्य भवन में हो, पाप ग्रह से दृष्ट न होकर शुभ ग्रहसे दृष्ट हो तो वह व्यक्ति बैकुण्ठ लोकसे आने वाला तथा वापिस उसी लोकको जाने वाला होता है। इसके अतिरिक्त अनेक धार्मिक ग्रन्थों, अध्यात्मवादके ग्रन्थोंका लेखक तथा मनन करने वाला भी होता है। भाग्योदय ३६ से ४२ वें वर्षके बीच होता है। इनके अतिरिक्त १८, ३०, ३६, ४३, ३८, ४३, ४५, ६०, ६१ वां वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं।

राहु, केतु—इन दो ग्रहोंमें से एक भी कोईसे ग्रह के भाग्य भवनमें जानेसे व्यक्ति नीच मनुष्योंके समाजका उपदेशकर्ता होता है। धार्मिक रुचि वाला तथा नीचोंसे पैसा उपार्जन करने वाला होता है। भाग्यसे हीन तथा मिली-जुली बुद्धि वाला होता है। इनका भाग्योदय काल ४२ वें वर्षसे ४८ एवं ४८ से ५२ वें वर्ष के मध्य होता है। ये ग्रह उस व्यक्तिको भुतादिक या कापाली विद्याका जानने वाला भी बनाते हैं, याने उन विद्याओंका ज्ञाता भी होता है। महत्वपूर्ण वर्ष १८, २१, २६, ३६, ४२, ४८, ५१, ५२, ७६वां होते हैं।

सामान्य नियम—(१) भाग्येश भाग्य भवन पर दृष्टि डाले तो अपने देशमें भाग्योदय हो। पापी ग्रहसे दृष्ट या पापी ग्रहोंका समावेश हो तो परदेशमें भाग्योदय होता है।

(२) भाग्येश केन्द्र या त्रिकोणमें हो तो भाग्योदय स्वदेश एवं १६ वें वर्षसे २६ वें वर्षोंके बीच होगा।

(३) यदि भाग्येश स्वगृही या मित्रगृही हो तो भाग्योदय उस व्यक्तिका बहुत विलम्बसे होता है तथा आरम्भमें अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं याने वृद्धावस्थामें भाग्योदय होता है।

(४) भाग्येश नीचका, शत्रुक्षेत्री, त्रिकमें हो या पापी ग्रहोंसे युक्त या दृष्ट हो तो सभी ओरसे व्यक्ति दुखी हो जाता है।

(५) उपरोक्त नियमों के अलावा भाग्य भवनको प्रथम भवन मानकर वहांकी केन्द्र राशि स्थित संख्याओं तथा बाद पंचम नवम (नवमको प्रथम मानकरके ही) राशियों को जोड़ा जाय तो क्रमशः जितने वर्ष बनते जायेंगे वे वर्ष उस व्यक्तिके जीवनमें भाग्योन्नतिकारक होंगे। इन वर्षोंमें धन-धान्य युक्त, लक्ष्मीदायक, विद्याप्राप्ति, यश कीर्तिके बढ़ाने वाले होंगे।

उपरोक्त बातोंके अतिरिक्त भी कई व्यक्तियोंकी कुण्डली में ग्रह ऐसी विकृतावस्थामें भी होते हैं कि संतान कई व्यक्तियोंके नहीं होती है तथा भाग्योन्नतिमें कई बाधायें आकर व्यक्ति मंद भागी होता है। तो हम उनको ऐसे सरल उपाय बतायें कि उनकी सभी समस्याएं हल हो जायं। ये उपाय बड़े सरल एवं सीधे हैं। आजके विद्वज्जन इनको उपयोगमें नहीं लाते हैं। अन्यथा इन छोटे-छोटे परीक्षित उपायोंसे बिगड़े कार्य सुधर कर जीवन आनन्दमय बन सकता है। जिन भाइयोंको उपरी योगोंमें शंका हो या ग्रहों की किसीके विकृतावस्था हो तो इच्छुक जन-पत्रव्यवहारसे मुफ्त निराकरण करायेंगे, एवं हमारे बताए उपायोंसे चलनेसे वे उत्तम संतानवान् तथा भाग्यशाली होकर अपना तथा राष्ट्र का कल्याण करेंगे। अगले अंकमें पाठकोंकी सेवामें वे सभी सरल उपाय और मनुष्य कुण्डली पहिचान एवं गलत कुण्डली को शुद्ध करनेपर सरल ढंगसे प्रकाश डाला जायगा।

❋ दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र ❋

स्वतन्त्र भारतके १४वें वर्षका भविष्य

चन्द्रग्रहणका संसार पर प्रभाव

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

सं० २०१७ वि० भाद्रपद कृष्णाष्टमी रविवार ता० १४ अगस्त १९६० ई० को इष्टघट्यादि ४।५३।२१ पर सिंह-लग्नमें भारतको स्वतन्त्र हुए १३ वर्ष पूर्ण होकर १४वाँ वर्ष प्रवेश होगा। यद्यपि स्वतन्त्रता समारोहका उत्सव तो १५ अगस्त सोमवारको ही सदा की भांति मनाया जावेगा, तथापि सूक्ष्म सौरगणनासे वर्ष प्रवेशका काल १४ अगस्तको सिंहलग्नमें ही बनता है। जैसे १३ वर्ष पूर्व सन् १९४७ में १४ अगस्तकी अर्धरात्रिमें १२-१ पर स्वातन्त्र्य सत्ता ग्रहण करनेका सुमुहूर्त साधा गया था—उसी इष्टकालके आधार पर वैसे ही वर्ष प्रवेशका समय भी १४ को ही आता है।

१४वें वर्षकी लग्न कुण्डली यह है—

सू.बु.ह. ४
६
ने. ७
शु. रा. ५
मु. ३
२ म.
८
श. ९ प्लू.
११ के.
१ चं.
१०
१२

इस वर्ष लग्न कुण्डलीमें लग्नेश सूर्य मुंथेश बुधके साथ १२वें में, राज्येश पराक्रमेश शुक्र लग्नमें राहुसे पीड़ित भौम दृष्ट है, अतः यह वर्ष भारतीय जनताके लिए अनेक प्रकारकी अवाञ्छनीय अप्रिय घटनाओंका प्रतीक सिद्ध होगा। सिंह लग्न और शुक्र दोनों ही पूर्वदिशाके अधिष्ठाता हैं, ये राहुसे पीड़ित हैं और उत्तरदिशाधिपति बुध १२वें सूर्यके साथ है अतः भारतकी पूर्वोत्तरीय सीमामें उत्तरोत्तर अशान्त वातावरण बढ़ेगा। चीनकी गतिविधि पूर्वी सीमामें बढ़ेगी। लद्दाख, नेफा, नेपाल, भूतान सिक्किममें चीनी सेना अतिक्रमण करेगी। इस वर्ष चीनसे शान्तिपूर्ण समझौतेका योग नहीं है। चीनकी कथनी और करनीमें अन्तर होनेसे विवाद बढ़ता जायेगा। अधिकारियोंके पारस्परिक आवागमन विचार विमर्शसे भी कोई स्थायी लाभ नहीं होगा, केवल समय-यापन होगा। वर्षेश शुक्र राहुके साथ राष्ट्रीय सम्पत्तिका अपव्यय वा अर्थहानि और विपत्तिका सूचक माना गया है, यथा—"पापारिवीक्षितयुते विपदोऽर्थनाशः" इस वर्ष आशाकी किरण केवल इतनी ही दिखाई दे रही है कि मुंथा ११वें गुरुसे दृष्ट है, और मंगल दशममें बलवान् है, अतः भारतकी सैन्य संगठन शक्ति दृढ़ होकर प्रतिरक्षामें समर्थ होगी। आश्विनमासके प्रारम्भमें ८ सितम्बरको मंगल मिथुन राशिमें प्रवेश करके ७॥ मास तक रहेगा, इस अवधि में अनेक प्रकारके राजनैतिक षड्यन्त्र तोड़फोड़ उपद्रव और प्रकृति-प्रकोपसे हानि होगी। वैसे तो श्रावण मासमें भी पांच शनि और रविवार हैं और श्रावण शुक्ल पक्षमें तिथिक्षय और कर्कराशि अश्लेषा राक्षसगण नक्षत्रमें शुक्रोदय हो रहा है अतः यहींसे प्रजामें अशान्ति, शासक शासित वर्गमें संघर्ष, श्रमिक वर्गमें असंतोष और कहीं हड़ताल आदिसे देशको अग्नि-परीक्षामेंसे निकलना होगा। कार्तिकसे अनिष्टयोग अधिक बन रहे हैं। यथा—

पंचार्कवारे दुर्भिक्षं पंचभौमे महद्भयम्।
पंचमन्दे च रोगः स्याच्छेषा वाराः शुभावहाः॥
कर्केऽतिवृष्टिर्धान्यस्य विनाशं चौरजं भयम्।
श्रावणे शुक्लपक्षे च तिथिः कापि क्षया भवेत्।
तदा वै कार्तिके मासि छत्रभङ्गः प्रजायते॥

आश्विन शुक्ल ११ को शनिवारका फल यों लिखा है—

एकादश्यां शनौ तस्मिञ्छत्रभङ्गोऽथवा भुविः।
नगरग्रामभंगः स्याद्वैरिचौराद्युपद्रवाः॥

नीचाभिलाषी शुक्र लग्नमें राहुके साथ भौमदृष्ट है अतः स्त्रियोंका वर्चस्व बढ़ेगा। भ्रष्टाचार व्यभिचार और निर्लज्जता पराकाष्ठा पर पहुँचेगी। वर्षेश और दशमेश भी शुक्र है अतः राज्यके अनेक उच्चाधिकारी भी कामिनी-कांचनके वशीभूत हो कर्तव्यच्युत होंगे। मंगलके कारण प्रायः सेनानायकोंमें भी विलासिता बढ़ेगी, वे अपने कर्तव्यके प्रति पूर्ण जागरूक नहीं होंगे। अतः समय रहते ऐसे लोगोंमें शुद्धिकरण आवश्यक है।

वर्ष लग्नमें लग्नेश सूर्य धनेश लाभेश बुधके साथ १२वें होनेसे राष्ट्रीयजनों एवं शासक शासित वर्गमें दृष्टिदोष पैदा होगा, अर्थात् एक दूसरेके हृद्गत भावोंको निष्पक्ष निःस्वार्थ उदार भावसे समझ नहीं पायेंगे, या यों कहें कि आत्मा (सूर्य) निर्मल न होनेसे पारस्परिक फूट क्लेश विवाद बढ़कर अशान्तिका कारण बनेगा। कहीं समुचित व्यवस्थाके अभावमें, कहीं स्वार्थान्धतासे तो कहीं प्रकृति-प्रकोपसे योजनाएँ पूर्ण रूपमें सफल न होकर राष्ट्रीय निधिका ह्रास होगा। ताजिक ग्रन्थोंमें सूर्य बुधके व्ययस्थ होनेका फल यों लिखा है—

दृष्टिरुग्द्रव्य नाशश्च विद्वेषो बन्धुवर्गतः।
देहे पित्तोद्भवा पीड़ा वर्षे सूर्ये व्ययस्थिते॥
स्वल्पलाभमनारोग्यं व्ययाधिक्यं नृपाद्भयम्।
स्ववर्गे कलहं नित्यं कुर्यात्सौम्यस्तु रिःफगः॥

चन्द्रग्रहणका विशेष प्रभाव

भाद्रपद शु० १५ सोमवार ता० ५ सितम्बर १९६० ई० को चीन, जापान, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, बर्मा, मलाया, सिंगापुर, इम्फाल, डिब्रूगढ़, चटगाँवमें खग्रास और पूर्वी भारतमें ७८ रेखांशसे पूर्वमें ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण होगा। संसारकी आत्मा और मन सूर्य चन्द्रमा हैं, या यों कहें कि संसारके जीवन और अस्तित्वके मूलस्रोत सूर्यचन्द्रमा ही हैं—जब ये राहु केतुसे ग्रसे जाते हैं या ग्रहण लगता है तब सम्पूर्ण जगत् उससे प्रभावित होता है, अतः पूर्वाचार्योंने ग्रहणको शुभाशुभ भावी घटनाओंका प्रतीक माना है। ग्रहण मध्यकालीन ग्रहस्थिति यह है—

के.चं. ११　　श. गु. ९
१२　　१०　　८
७ न.
१
मं. २　　४ ह.　　शु. ६
३　　सू.बु.रा.५

भारतीय स्वतन्त्रताके १४वें वर्ष लग्नसे ग्रहण लग्नका षडष्टक योग बन रहा है। सू० बु० रा० गु० श० मं० की स्थितिसे ज्ञात होता है कि—शासकों पर विपत्ति आयेगी, उनको दुःख पहुंचेगा। सज्जनोंकी सम्पत्तिका अपहरण होगा। भ्रष्टाचारी शासकोंसे लोग घृणा करेंगे। विश्वव्यापी महत्वकी घटनाएँ घटेंगीं। प्रतिरक्षा व सैनिक प्रतिष्ठानों, लोहा व इस्पातके कारखानों, रासायनिक कारखानों, उत्पादन केन्द्रों और खानोंमें न केवल आकस्मिक दुर्घटनाओं अपि तु तोड़फोड़ वा हड़ताल, लाठीचार्ज, गोलीकांड आदिसे भी असंतोष व्यापेगा। श्रमिकवर्ग निम्नश्रेणिके कर्मचारियों और शासकवर्गमें भारी असंतोष होगा। श्रमिकवर्ग असंभव माँगे सामने रखकर तर्कयुक्त बात न सुनेगा। अवसरवादी स्वार्थी नेता उन्हें मार्गभ्रष्ट कर अविवेकपूर्ण कार्यके लिए प्रेरित करेंगे। किन्तु सरकार दृढ़ रहेगी और कठोर उपायोंसे स्थिति का सामना करेगी। बुध, सूर्य-राहुके साथ अष्टम होनेसे वाणिज्यव्यवसायकी दशा अधिक बिगड़ेगी। दुर्भिक्ष, दुर्लभता, दुर्घटनाएँ, विस्फोट, असुरक्षा, बाढ़ें, हड़तालें, भावोंका अकल्पित उतार चढ़ाव वा विस्फोट साधारण बात होगी। जनसाधारणका जीवन शोचनीय होगा। सर्दी गर्मी तीव्र होगी। ऋतु वैपरीत्यसे शीतला और संक्रामक रोगोंका प्रकोप बढ़ेगा। भारतके कुछ भागोंमें एक नये प्रकारकी महाभारी फैलेगी जो स्त्रियों और बच्चोंके लिए पीड़ादायक होगी। हस्पतालों और कारखानोंमें मृत्युएँ अधिक होंगी। शिशिर की फसलें (फरवरीसे अप्रैल तककी) कीड़ों द्वारा अथवा प्रकृति-प्रकोप अनावृष्टि ओला दृष्टिसे नष्ट होगी। परराष्ट्रीय विषयोंमें अप्रत्याशित पेचीदगियाँ पैदा होंगी। सरकारकी नीतिकी कड़ी आलोचना होगी पर वह अपनी नीतिका अनु-

[शेष पृष्ठ ४९ पर]

यात्रा-संस्मरण—

राजस्थानके पवित्रतम तीर्थ

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

राजस्थानके मेवाड़ प्रान्तमें जितने अधिक पवित्र तीर्थ-स्थान, चमत्कारपूर्ण ऐतिहासिक देवालय और पर्वतस्थ सघन वनमें सिद्ध महापुरुषोंकी तपोभूमि है उतनी अन्य किसी प्रान्तमें मिलना असम्भव है। मेवाड़ महाराणा प्रताप की वीर भूमिके रूपमें तो विश्वविदित है ही, साथ ही यहां की अद्भुत स्थापत्य-कला-पूर्ण पंचतीर्थी वा चारों धाम (श्री एकलिंगजी, श्री नाथद्वारा, श्री द्वारिकाधीश, श्री चारभुजा-रूपनारायण और श्रीपरशुराम महादेव) भी दर्शनार्थियोंके लिए मनोमुग्धकारी शांतिदायक सुरम्यस्थल हैं। इस बारकी लम्बी राजस्थान यात्रा हमारी जितनी आनन्ददायक रही और प्रायः सभी पुण्य तीर्थस्थानोंके दर्शनोंका सौभाग्य प्राप्त हुआ, उतना अनुपम लाभ पहले कभी प्राप्त नहीं हुआ। इस यात्राका संक्षिप्त वर्णन हम नीचे दे रहे हैं। वैवाहिक कार्योंसे निवृत्त होकर केलवाड़ेसे हमने श्रीपरशुराम महादेव (मेवाड़के बदरीश्वर) दर्शनसे यात्रा प्रारम्भ की।

श्रीपरशुराम महादेव

यह पवित्र प्राकृतिक दर्शनीय स्थान मेवाड़ भूमिके कुम्भलगढ़ जिलामें ३६५५ फीटकी ऊंचाई पर सघनवनाच्छादित पर्वतकी प्राकृतिक गुफामें है। यहां पहुँचनेके लिए मेवाड़ में श्रीचारभुजाजीसे केलवाड़ा तक मोटर बस सर्विस चलती है और केलवाड़ेसे आगे ८ मीलका पैदल रास्ता है। ३ मीलका मार्ग बड़ा भयानक ऊबड़खाबड़ जंगलका है—जिसमें सिंह, भालू आदि हिंसक जन्तु भी रहते हैं, पर वे किसी यात्रीको सताते नहीं। कई जगह तो उतराई चढ़ाई पर केवल एक डेढ़ फुट चौड़ा विकट मार्ग है, जहां एक ओर ऊंचा पहाड़ और दूसरी ओर नीचे पाताल दिखाई देता है। जहांसे यदि पैर फिसल जावे तो सीधी मुक्ति हो जावे, अस्थियोंका भी पता न चले। परन्तु भगवान् परशुरामका स्मरण करते हुए श्रद्धालु आबाल वृद्ध पुरुष और महिलाएँ सानन्द गुफामें पहुँचकर अनुपम शान्तिका अनुभव करते हैं। मारवाड़की ओरसे जाने वालों के लिए फालना रेलवे स्टेशनसे सादड़ी तक मोटर सरविस और आगे ७ मील पैदलका रास्ता है। मेवाड़की अपेक्षा यह मार्ग कुछ सरल है। कहते हैं भगवान् श्रीपरशुराम ने यहीं तपस्या की थी। कपासन (मेवाड़) के समीप ही मातृकुण्ड तीर्थस्थान है, इसी मातृकुण्डमें स्नान करके भगवान् श्रीपरशुराम मातृहत्या दोषसे मुक्त हुए थे। यहां प्रति वर्ष परशुराम-जयन्ती पर मेला भी होता है।

हां, तो भगवान् श्रीपरशुरामकी गुफामें प्राकृतिक स्वयंभु शिवलिंग बना हुआ है, ऊपर विशालकाय पत्थर की चट्टानमें गायके स्तनसे बने हुए हैं जिनमें से जलकी बूंदें टपक कर निरन्तर अभिषेक होता रहता है। कहते हैं कुछ वर्ष पूर्व इन्हीं स्तनोंमें से शिव-लिंग पर दुग्ध टपकता था, पर अब दुग्धके स्थानमें जल बिन्दुओंसे अभिषेक होता है। पचास वर्ष पूर्व गुफामें पहुँचने तक बांसकी बड़ी बड़ी ७ सीढ़ियां लगी हुई थीं, उन पर से पुजारी और कोई साहसी पुरुष ही पहुंचकर भगवान्के दर्शन कर सकता था। परन्तु अब पत्थरकी पक्की सीढ़ियां लग जानेसे सबको दर्शन सुलभ हो गए हैं।

अद्भुत चमत्कार

गुफासे बाहर जहांसे सीढ़ियां प्रारम्भ होती हैं पहाड़ की गगनचुम्बी ऊंची चट्टानों पर पचासों भ्रमरों (मधुमक्खियों) के छत्ते लगे हुए हैं। यहां अब भी यह चमत्कार है कि यदि कोई स्त्री पुरुष अपवित्रावस्थामें बिना स्नान किए श्रद्धारहित होकर गुफाकी सीढ़ियों पर पैर रखता है तो उसी समय मधुमक्खियां उसी अपवित्र व्यक्ति पर टूट पड़तीं हैं और वह जान बचाकर उलटे पैर वापिस

भागता है। ४० वर्ष पूर्व जब ग्रीष्मकालमें महाराणा साहब स्व० श्री फतहसिंहजी कुम्भलगढ निवास कर रहे थे तो उनकी कुछ दासियोंने श्रीपरशुराम भगवान्के दर्शनों की इच्छा व्यक्त की, महाराणा साहबने जानेका प्रबन्ध करवा दिया। कहते हैं उनमेंसे कोई एक दासी अपवित्र (रजस्वला) थी और सबके साथ स्पर्श हो गई थी। बिना स्नान किये ही सीढ़ियों पर पैर रक्खा कि मधु मक्खियां उन सभी दासियों पर टूट पड़ीं। सभी वहीं अचेत हो गिर पड़ीं। भील और राजकीय कर्मचारियोंने उन सबको अर्धमृतावस्थामें पीठ पर उठाकर बड़ी कठिनाईसे वापिस कुम्भलगढ़ पहुंचाया। यह घटना जिन्होंने स्वयं देखी उनमें से कुछ वृद्ध पुरुष अब भी विद्यमान हैं।

वै० शु० ११ को प्रातः बरातके साथ ही मैं उदयपुर चला गया था, वहां मुझे ३-४ दिन अधिक लग गये। वैशाखी पूर्णिमाको वापिस केलवाड़े लौटा। केलवाड़े विवाह में जितने प्राहुणिक (महमान) आए थे उन सब स्त्री पुरुषों ने वै० शु० १३ को भगवान् श्रीपरशुरामके दर्शनार्थ जाने का निश्चय किया। हमारी श्रीमतीजीने सोचा कि ज्योतिषी जी (मैं) उदयपुरसे पता नहीं कब लौटते हैं? और समय व साथ न मिला तो आशा नहीं कि वे भगवान् परशुराम की कठिन यात्रा करें। ऐसा विचार करके वे सबके साथ त्रयोदशी को चलकर चतुर्दशीको भगवान्के दर्शन कर केलवाड़े लौट आई।

दूसरे ही दिन गुरुवारको मैंने भी भगवान् श्री परशुरामके दर्शनका निश्चय किया। सभी महमान दर्शन कर आये थे। और कई बिदा भी हो चुके थे। अब दुबारा इस कठिन यात्रा में मेरे साथ मार्गदर्शकके रूपमें साथ कौन जावे? यही प्रश्न था। मुझे बड़ी उत्कट इच्छा हो रही थी कि कल तृतीया शुक्रवार है, श्रीपरशुराम जयन्ती अक्षया तृतीया न सही, पर एक पक्ष बादकी तिथि तो तृतीया ही है अतः भगवान् श्रीपरशुरामके दर्शन अवश्य करने चाहिएँ। दृढ़ 'शिव-संकल्प' अवश्य सफल होता है। जीव यदि थोड़ा भी शिवकी ओर जानेका प्रयत्न करे तो करुणावरुणालय भगवान् आशुतोष उसे अपनी ओर खींच ही लेते हैं। "जो इच्छा करहुं मन माँहि। राम कृपा कछु दुर्लभ नाँहि।" द्वितीयाको सायंकाल केलवाड़ेसे ही एक महाराज (भोजन बनाने वाले ब्राह्मण) का मेरे साथ मार्गदर्शक रूपसे श्रीपरशुराम महादेव जानेका प्रबन्ध हो गया। मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। तृतीयाको प्रातः सूर्योदय से पूर्व ही हमने यात्रा प्रारम्भ की। श्रीमतीजी भी इस यात्रामें पुनः हमारे साथ चल पड़ी और उनका १४ वर्षीय भतीजा (बालक गोपालकृष्ण) भी हठात् साथ हो लिया। मैंने सोचा कि मार्ग बड़ा कठिन है, पत्नी दो दिन पूर्व ही यात्रा करके थकी हुई है और यह बालक है, भगवान् ही पार पाड़े तो भले ही। भगवान्का स्मरण करते प्रकृति निरीक्षण करते हुए हम चारों व्यक्ति प्रातः ८ बजे ५ मील तय करके उदावड़ग्राम पहुँच गये। यहां जंगलातका छोटा-सा दफ्तर है जिसे "राणा काकाका नाका" कहते हैं। कर्मचारियोंके रहने का सुन्दर स्थान है। सुशीतल जलकी बावड़ी भी है। यहीं पर हम सबने स्नान किया और भगवान्के दर्शन करके लौट कर यहीं भोजन बनाकर विश्रामका निश्चय किया। यहांसे आगे ३ मीलका बड़ा कठिन मार्ग है। परन्तु हमें जाते समय कुछ भी थकावट प्रतीत नहीं हुई। फूटा देवलसे आगे कुछ यात्री हमें दर्शन करके लौटते हुए मिले। उनमेंसे दो व्यक्ति हमें ऐसे भी मिले जिन्होंने अपने साथियोंका कहना नहीं माना और बिना स्नान किये ही गुफामें प्रवेश करना चाहा, तो उन दोनों व्यक्तियों पर मधुमक्खियाँ टूट पड़ीं और वे अपनी जान बचा बिना दर्शन किये ही लौट रहे थे। उनके अन्य साथियोंको भ्रमरों (मधुमक्खियों) ने कुछ नहीं कहा, वे श्रद्धापूर्वक दर्शन करके लौटे। इस अद्भुत ईश्वरीय चमत्कारको स्वयं देखकर हमने उन परम कारुणिक भगवान् श्रीपरशुरामको मन ही मन शतशः प्रणाम किया। जो अनीश्वरवादी ईश्वरीय सत्ताको नहीं मानते वे वहां जाकर स्वयं देखें कि भ्रमर (मधुमक्खियों) जैसे जन्तुओंको यह कैसे पता चल जाता है कि इतने व्यक्तियोंमें अमुक व्यक्ति अपवित्र अश्रद्धालु या बिना स्नान किये हुए है और उसीको वे क्यों काटते हैं? दूसरोंको क्यों नहीं? दैवीशक्तिके बिना उन भ्रमरोंको कौन ऐसी प्रेरणा दे सकता है? यहां नतमस्तक हो उस अखिल-ब्रह्माण्डनायक जगन्नाटकके सूत्रधारकी अद्भुत शक्तिको स्वीकार करना पड़ता है।

दस बजे हम भगवान् श्रीपरशुराम गुफाके मुख्यद्वार पर जहांसे सीढ़ियाँ प्रारम्भ होती है, पहुँचे। बांई ओर

श्रीपरशुरामजीके पुजारी श्रीगोस्वामी नवलपुरीका आश्रम और धूनी है। धूनीसे ऊपर यात्रियोंके ठहरनेके लिए धर्मशाला भी अब बन गई है। पक्के पत्थरोंका शुष्क पहाड़ होनेसे जलकी बहुत कमी है। पीनेका जल दो मील नीचेसे आता है। धूनीसे ऊपर संकटमोचन कूपमें भी बहुत थोड़ा जल था। पूजा सामग्री हम अपने साथ ले गये थे। शुद्ध जलपात्र गोस्वामीजीसे लेकर गुफामें पहुंच भगवान् श्रीपरशुरामका पूजन किया। गुफामें अनुपम शान्त वातावरणका अनुभव हुआ। पत्नीने प्रणामकर सहजगद्‌गद्‌भावसे कहा--"प्रभो! आप वास्तवमें ही आशुतोष हैं, अभी परसों ही तो मैं प्रार्थना कर गई थी कि एक बार फिर जल्दी ही उनके साथ दर्शन देने की कृपा करें। आपने मेरी वह प्रार्थना जल्दी सुनी और आज चौथे दिन ही पुनः इनके साथ दर्शनका सौभाग्य प्राप्त करा दिया।"

यहां अधिकतर यात्री सकामभावसे (मनमें कुछ न कुछ कामना लेकर) आते हैं और उस मनःकामनाके पूर्ण होने पर पुनः दर्शनार्थ यथाशक्ति भेंट पूजा लेकर जाते हैं। गुफामें ५-७ व्यक्तियों से अधिकके बैठनेका स्थान नहीं है। ऊपर पत्थरके प्राकृतिक गौके स्तन से ४-५ बने हुए हैं जिनमेंसे कभी-कभी बहुत कम जलकी बूंदें टपकती हैं। इसे यात्री-गण शुभ-शकुन या कार्यसिद्धिका चिह्न मानते हैं। पूजनके उपरान्त यात्रीगण अपने अभीष्ट कार्यका स्मरण करके स्तन के नीचे अंजली बांधकर बहुत देर तक खड़े रहते हैं, यदि जल बूंद हाथमें गिर जाय तो समझते हैं कि भगवान्‌की आशिका (आशीर्वाद) मिल गया, कार्य अवश्य होगा। भगवान्‌के दरबारमें निष्कामभावसे जाना ही अधिक श्रेयस्कर है, यही हमें गुरुजनोंसे शिक्षा मिली है, अतः हम कभी भी जगदीश्वरके दरबारमें कोई कामना लेकर नहीं गये और न सांसारिक तुच्छ पदार्थोंके मांगनेकी इच्छा होती है। एक मात्र यही याचना सर्वविध कल्याण कारक है—'भवद्भक्ति-मेव स्थिरां देहि मह्यं कृपाशील शम्भो! कृतार्थोऽस्मि तस्मात्।'

पूजनोपरांत मैंने महामहिम श्री १०८ मदमृतवाग्भवा-चार्य प्रणीत 'श्रीपरशुरामस्तोत्र' का पाठ प्रारम्भ किया। प्रारम्भमें ही ऊपरके गौस्तनमें से जलकी बूंद मेरे मस्तक पर गिरी और एक बूंद पाठकी समाप्ति पर दक्षिण स्कन्ध पर पड़ी। पास बैठी हुई पत्नी और चि० बालक गोपालकृष्णके मस्तक पर भी एक-एक बूंद पड़ी, इससे हम सबको अत्यन्त आनन्द हुआ। बिना मांगे ही आशिका मिल गई यह जान भक्तियुक्त साष्टांग प्रणामकर यही प्रार्थना की कि—"जिस प्रकार आपने अपने श्रीचरणोंमें बुलाकर दर्शनोंसे हमें कृतार्थ किया है उसी प्रकार मेवाड़के शेष तीर्थस्थानोंकी यात्रा भी हमारी सानन्द सम्पन्न हो जावे।"

गुफासे नीचे उतर कर कुछ देर श्रीगोस्वामीजीके पास विश्राम और जलपान करके इस पुण्य क्षेत्रसे वापस केलवाड़े की ओर प्रयाण किया। एक बजे हम लोग पूर्व निश्चित स्थान उदावड़ ग्रामके समीप "राणा काका नाका" पर पहुंच गये, वहां चौका बर्तन सब तैयार था, हमारे साथके महाराज ने दो बजे तक सुन्दर दाल बाटीका भोजन बनाकर तैयार कर दिया। भगवान्‌को भोग लगाकर हम सब भोजन पर बैठे। इस दिनके भोजनमें जितना स्वाद और रस था वह अनुपम ही था। भोजनोपरान्त ४॥ बजे तक हमने वहीं विश्राम किया। सायंकालीन सुशीतल समीरके साथ पार्वत्य प्रदेशका प्रकृति निरीक्षण करते हुए हम लोग सायंकाल ८ बजे केलवाड़ा घर पहुंच गये। और हमें कोई विशेश थकावट भी नहीं हुई। घरवाले भी सब चकित थे कि जिन्होंने कभी २ मीलकी भी पैदल यात्रा नहीं की वे १६ मील की कठिन यात्रा करके आज ही कैसे लौट सकेंगे। किन्तु यह सब भगवान् श्रीपरशुरामकी महिमाका फल था। उनकी कृपासे श्रीचारभुजा, श्रीरूपनारायण, श्रीनाथद्वारा, श्रीएकलिंगजी, श्रीद्वारिकाधीश, पुष्कर और श्रीकल्याणजीके दर्शन भी हमें बड़े आनन्दसे विशेष पर्वों पर हुए और सभी प्रकारकी सुविधाएँ आगेसे आगे स्वयं जुटती गईं। उनका संक्षिप्त वर्णन नीचेकी पंक्तियोंमें देखिये।

श्रीचारभुजाजी

मेवाड़में चारभुजा रोड स्टेशनसे लगभग २० मील पश्चिममें गढ़बोरपुरीमें चारभुजाका सुप्रसिद्ध प्राचीन विष्णु मंदिर है। यह बड़ा चमत्कारी दर्शनीय स्थान है। गोपवंशके गूजर लोग ही यहांके पुजारी हैं। गढ़बोर नगर और समीपस्थ ग्रामोंमें इन गूजर पुजारियोंके लगभग ३०० घर हैं। ये सब 'सेवक' कहलाते हैं। इन सबको मेवाड़ राज्य

की ओरसे जागीरमें कुछ जमीनें मिली हुई हैं । एक मास तक शुक्ल प्रतिपदासे कृष्णामावस्या तक एक गूजरके घरकी पूजाकी बारी होती है । उस मासमें वही गूजर परिवार विधिवत् पूजा करता है । श्रीचारभुजाजीके अद्‌भुत चमत्कार हैं । श्रद्धालु भक्तजनोंकी मनःकामनाएं यहां पूर्ण होती हैं । मेवाड़के प्रत्येक गांवमें श्रीचारभुजाजीका आज छोटा-बड़ा एक मंदिर अवश्य होगा । श्रद्धालु भक्तजनोंको आज भी ये प्रभु ग्रामीण गूजरके वेषमें दर्शन देकर कल्याण किया करते हैं । यहाँकी चमत्कारपूर्ण पुण्य गाथाएँ पहले भी हमने सुनी थीं और इस बार हमारे सुपरिचित कथाव्यास श्री श्रीधरजीने अभी गत दो तीन दशकोंकी प्रत्यक्ष अनेक अद्‌भुत घटनाएं हमें सुनाईं । उन्हें हम आगामी अंकोंमें देनेका प्रयत्न करेंगे । अभी इसी गत ज्येष्ठमासकी एक घटना श्री व्यासजीने लिखकर हमारे पास भेजी, वह हम इसी अंक में आगे प्रकाशित कर रहे हैं ।

केलवाड़ेमें श्वसुर परिवारसे विवशता प्रकट करके बड़ी अनुनय विनयसे ज्येष्ठकृष्ण ५ रविवारको मैंने विदा ली । मेरी छोटी साली श्रीमती अ० सौ० फूलबाई भी केलवाड़े हमारे साथ थीं, उन्होंने हम दोनोंको एक दिनके लिए अपने घर घाणेराव ले जानेका हठ ठान लिया । वहांके लिए बस श्रीचारभुजासे ही जाती है । अतः मध्याह्नकी बससे चलकर हम तीनोंने दो बजे श्रीचारभुजाजी पहुँचकर दर्शन किये । उसी दिन वहां पर मेरे सुपरिचित स्नेही राजस्थान लोकसेवा-आयोगके अध्यक्ष श्रीमान् लक्ष्मीलालजी जोशी सपरिवार दर्शनार्थ पधारे हुए थे । जोशीजीके ६२ वर्षीय पिता श्री पं० जटाशंकरजी भी साथ थे । आपका भी मुझ पर अनन्य स्नेह है । श्रीचारभुजापुरीमें अकस्मात् भेंट हो जानेसे सबको बहुत प्रसन्नता हुई । श्रद्धेय श्रीजटाशंकरजी जोशी मेवाड़में सुख्यातिप्राप्त वयोवृद्ध तपस्वी सज्जन हैं । आपके ही अनुरूप आपके सुपुत्र श्री लक्ष्मीलाल जी जोशीने भी राजस्थानमें पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त की है । उच्चाधिकार सम्पन्न होकर भी आप भगवन्निष्ठा गुरुजन सेवा पितृभक्ति परोपकारिता सादगी और नम्रताके मूर्तिमान् प्रतीक हैं । आप अपने पूज्य पिताश्री, दोनों पुत्रों एवं पुत्रवधुओं और पौत्रोंको लेकर श्रीचारभुजा नाथद्वारा कांकरोली श्रीएकलिंगजीकी यात्रार्थ पधारे थे । मेवाड़से लौटते समय अजमेर ठहरनेका स्नेहपूर्ण आमंत्रण देकर श्रीजोशीजी निजी मोटरकार और जीप द्वारा सपरिवार कांकरोली गये और हम अपना अधिक सब सामान श्री पं० श्रीधरजी व्यासके सुपुर्द करके सायंकाल ६ बजेकी बससे देसूरी होते हुए घाणेराव (मारवाड़) रात्रिके १० बजे श्री मोहनलालजी जोशी साहब के घर पहुंचे । दूसरे दिन प्रातः ही मिलनेवाले इष्टमित्रोंका तांता लग गया । घाणेरावके राजज्योतिषी श्री पं० फतेलाल जी कथाभट्ट और उनके सभी सुयोग्य पुत्रों एवं राज्यके अधिकारी वर्गने स्नेहाग्रहवश मंगलवारको भी हमें रोक लिया । घाणेरावमें दर्शनीय स्थानोंमें डूंगरी पर श्री महादेवजीका मंदिर महासतियां और नाथोंके स्थानमें संगमरमरकी मनुष्याकार श्रीगणेशजीकी खड़ी हुई मूर्ति ऋद्धि सिद्धि सहित बड़ी विशाल है । यहांके जैन मंदिर भी प्रसिद्ध हैं ।

श्रीराणकपुरजीका जैन मंदिर

घाणेरावसे १५ मील पश्चिममें जैनियोंके प्रसिद्ध तीर्थ श्रीराणकपुरजीमें सुविशाल मंदिर है । भारतीय स्थापत्यकलाकी दृष्टिसे यह मंदिर बड़ा ही विशाल अद्‌भुत एवं दर्शनीय है । मंदिरमें सभी तीर्थङ्करोंकी सैंकड़ों मूर्तियाँ हैं । मुख्य मंदिरमें आदीश्वर भगवान् श्रीपार्श्वनाथजी की विशाल मूर्ति है । मंदिरका प्रांगण बहुत बड़ा है । दोनों मंजिलों पर अगणित असंख्य स्तम्भ (खम्भे) हैं । पत्थर पर खुदाईका बारीक काम और यहांकी मूर्त्तिकलाको देखकर दक्षिण भारतकी कलाका स्मरण हो आता है । पर्वतकी तलहटी और सुरम्यवनमें छोटी नदीके किनारे पर होनेसे यह स्थान बड़ा रमणीय एवं शांतिदायक है । मंदिरके अहातेमें ही बाग और बहुत बड़ी धर्मशाला भी है । प्रतिदिन दूर दूरसे यात्रीगण और कला प्रेमी यहां आते हैं । यहां ठहरने और भोजनादिकी व्यवस्था बहुत अच्छी है । सादड़ीसे यह स्थान ७ मील है । नित्य बस जाती है । स्नेहीजनोंके आग्रहसे बुधवारको प्रातः घाणेरावसे चलकर हम लोग १० बजे राणकपुरजी पहुँचे । मध्याह्नमें वहीं विश्राम करके रात्रिको सबके साथ घाणेराव पहुँच गये ।

गढ़बोर और सेवन्त्री

ज्येष्ठ कृ० ६ गुरुवारको हम घाणेरावसे मध्याह्नमें चलकर श्रीचारभुजापुरी गढ़बोर २ बजे श्रीधरजी व्यासके यहां

पहुँचे। श्रीचारभुजानाथके दर्शन करके सायंकाल सेवन्त्रीमें श्रीरूपनारायणके दर्शनार्थ जानेका विचार बना। सेवन्त्री श्रीचारभुजासे ६ मील वायव्यकोणमें है। श्रीचारभुजाकी भांति यह मंदिर भी प्राचीन ऐतिहासिक और चमत्कारपूर्ण है। चारभुजा श्रीकृष्णरूप या शेषावतार लक्ष्मणरूपमें और श्रीरूपनारायण बलदाऊ या श्रीरामरूपमें माने जाते हैं। जिस समय औरंगजेबकी यावनी सेना भारतके सभी पवित्र स्थानोंको नष्ट भ्रष्ट और मूर्तियोंको खण्डित करती हुई जब सेवन्त्रीकी ओर पहुँची तो एक दिन पहले ही मंदिरके चारों ओर सैंकड़ों विषैली मक्खियोंके छत्ते लग गये। ज्यों ही सेनाने सेवन्त्रीमें प्रवेश करना चाहा कि लाखों मधु-मक्खियाँ उड़कर सेना पर टूट पड़ीं। यवन सेना उलटे पैर जान बचाकर भागी और फिर रूपनारायण और चारभुजा की ओर जानेका साहस नहीं किया। अभी लगभग १०० वर्ष पूर्व महाराणा साहब उदयपुर और उनके सामन्त कोठारिया-रावतजीको भगवान् श्रीरूपनारायणने (अपने भक्त पुजारीकी प्रतिज्ञा निभानेके लिए) श्वेत दाढ़ीके दर्शन दिये थे। कोठारिया रावतजीको विश्वास नहीं हुआ कि भगवान्की वास्तविक दाढ़ी है, वे समझे कि पुजारीने बड़ी चतुराईसे नकली बालोंकी दाढ़ी भगवान्के मुखारविन्द पर लगा दी है। महाराणाकी आज्ञानुसार एक बाल खींचकर उखाड़ा गया तो उसमेंसे रक्तकी धारा बह निकली। कोठा-रिया रावतजी मूर्छित हो गिर पड़े। तबसे उनके लिए यह आदेश है कि—"गद्दी पर बैठनेके बाद मेरे मंदिरमें कोई न आवे।" तबसे अभी तक यह परम्परा बराबर निभाई जा रही है। कोठारियाके राजकुमारोंका मुण्डन संस्कार श्री रूप-नारायणमें ही होता है। पर रावतजी वहां नहीं जा सकते। कोठारिया मेवाड़के बड़े १६ सामन्तोंमेंसे हैं, श्रीनाथद्वारासे ३ मील है। वर्तमान कोठारिया-नरेश रावतजी श्रीमानसिंहजी परम ईश्वर भक्त सच्चरित्र उदार हृदय नवयुवक हैं। स्नेह-वश अभी गत ज्येष्ठ कृष्णामावस्याको हम नाथद्वारासे आपसे मिलने कोठारिया गये थे। आपकी सज्जनता और विद्या-प्रेमसे हम बहुत प्रसन्न हुए। आपकी मंत्रशास्त्र और आयुर्वेदमें भी अच्छी अभिरुचि है। अन्यान्य शास्त्रीय चर्चाओंके साथ श्रीरूपनारायणका प्रसंग भी चला तो आपने बताया कि—"मैंने तो भगवान् श्रीरूपनारायणसे प्रार्थना करके दर्शनकी आज्ञा माँगी थी कि—"दीन बन्धो! हमारे किसी पूर्वजने आपका अपराध किया तो उसका दण्ड उसके एक वंशज होनेके नाते ही अभी तक हमें क्यों मिले। अपराधी ही दण्डका भागी होता है। आप करुणानिधान हैं। मुझ दासको तो दर्शनकी आज्ञा होनी चाहिए।" मैंने पुजारीसे परची माँगी तो मुझे दर्शनकी आज्ञा मिल गई थी, परन्तु मेरी वृद्धा माताजीने अभी मुझे आज्ञा नहीं दी, इस-लिए दर्शनसे वंचित हूँ। कोठारिया नरेश श्रीमानसिंहजीने आज तक कभी मद्यपान नहीं किया। यह जानकर हमें बहुत प्रसन्नता हुई। आपके राजप्रासादमें ही हम दिन भर ठहरे। आपकी अ० सौ० श्रीमती राणी साहिबा और दोनों राजकुमार भी बहुत सुशिक्षित सौम्य स्वभावके हैं। आपने अपनी मोटरकार द्वारा ही हमें सायंकाल नाथद्वारा पहुँचाया।

हां, तो ज्ये० कृ० ६ गुरुवारको सायंकाल ५ की बससे श्रीरूपनारायण जानेका निश्चय किया। श्री पं० श्रीधरजी व्यासने अपनी धर्मपत्नीको हमारे साथ वहां सब व्यवस्था करनेके लिए भेजा। व्यासजी वैशाखसे आषाढ़ तक प्रतिदिन प्रातः सायं श्रीमद्भागवतकी कथा श्रीचारभुजाके मंदिरमें राज्यकी ओरसे करते हैं, अतः वे हमारे साथ जा नहीं सकते थे। व्यासजीने हमें बताया कि "इस वैराट प्रान्तके पर्वतोंमें सूर्यकुण्ड अमरकुण्ड विष्णुकुण्डादि सात कुण्ड प्रसिद्ध हैं, जो पवित्र तपोभूमि है और अब भी वहां सिद्ध पुरुष गुप्त-रूपेण रहते हैं। प्रतिदिन सन्ध्या समय वहां दिव्यधूपकी सुगन्धी आती और आरतीके समय घड़ी घंटा नगारे मृदङ्ग आदिका दिव्यशब्द सुनाई देता है। परंतु उस स्थानका पता नहीं चलता कि वह शब्द और सुगन्धि कहाँसे आती है। श्रीरूपनारायणसे अमरकुण्ड ३ मील है वहां आप अवश्य, जावें और कल दशमीको रूपनारायणके विमानके विशेष दर्शन भी रात्रिमें होंगे वह भी करें।" नगरके पश्चिमीद्वार पर (छड़ीदारजीकी हवेलीमें ऊपर) ४॥ बजेसे बैठे हुए हम सेवन्त्री जाने वाली बसकी प्रतीक्षा बड़ी आतुरतासे कर रहे थे। नीचे कुछ यात्री और भी प्रतीक्षामें थे। ६॥ बजे व्यास जीके दौहित्र श्री दुर्गादत्तने आकर कहा कि "आज कांक-रोलीसे बस आई नहीं अतः सेवन्त्री नहीं जावेगी, अब तो कल सायंकाल ५ बजे ही जावेगी।" यह सुन हमें दुःखके

साथ बड़ी निराशा हुई, पर दृढ़ संकल्पने साहस नहीं छोड़ा, सोचा कोई मार्गदर्शक मिल जावे तो पैदल ही चल दें। इतनेमें सेवन्त्रीके दो व्यक्ति जाते दिखाई दिये, व्यासजीने उन्हें रोककर हमारा साथ करा दिया। नीचे बैठे हुए पांच यात्री भी हमारे साथ हो लिए। परस्पर परिचय पूछने पर ज्ञात हुआ कि उनमेंसे एक सज्जन तो उज्जैनके श्रीराम-नारायणजी शर्मा, उनकी पत्नी और पुत्री हैं, तथा दूसरे सज्जन प्रतापगढ़के राजज्योतिषी श्री पं० मदनलालजीके पुत्र श्रीरामेश्वरजी शर्मा और उनकी पत्नी हैं। ये तो अपने ही स्वजातीय बन्धु निकल आये, अतः परस्परके परिचयसे सबको बड़ा आनन्द हुआ और आत्मीयता बढ़ती गई। इस सायंकालीन सुखद पैदल यात्रामें हम ३ पुरुष चार स्त्रियां और एक कुमारी अन्नपूर्णा इस प्रकार आठ प्राणियोंका एक छोटा-सा दल बन गया। बड़े आनन्दपूर्वक वार्तालाप करते हुए रात्रि ९॥ बजे हमारा दल सेवन्त्री पुरीमें पहुँचा और भगवान् श्री रूपनारायणके शयन आरतीके दर्शन कर विश्राम किया।

व्यासजीकी धर्मपत्नीने एक पुजारीके यहां हम सबके शयनकी व्यवस्था कर दी और वहींकी एक महिलाको प्रातः हमें अमरकुण्ड ले जानेके लिए तय्यार कर ली। दशमीको प्रातः मंगलाके दर्शन करके हमारा दल उस पथ-प्रदर्शिका महिलाके साथ अमरकुण्ड यात्राके लिए निकला। मार्ग बड़ा बीहड़ और भयानक है। एक मील तक तो सघनवना-च्छादित पर्वतकी उतराईमें मार्गका कुछ पता ही नहीं चलता, परिचित लोग अनुमानसे ही वहां तक पहुँचा देते हैं। ८॥ बजे हम अमरकुण्ड पर पहुँचे। वहांके शान्त वातावरण सुशीतल प्राकृतिक जलकुण्ड और अनेक वृक्षलतादिसे सुशोभित पर्वतको देख चित्त अत्यन्त आनन्दित हुआ। यहां भग्नावस्थामें एक पर्णकुटी हमें दिखाई दी, उसके सामने ही वृक्षके नीचे शिवलिंग भी है। दो वर्ष पूर्व इस पर्णकुटी में हमारे चिरपरिचित स्नेही, 'मीरांसुधासिन्धु'के लेखक और मेवाड़में 'रघुपति राघव राजाराम' मंत्रके गायक स्व० महात्मा श्री आनन्दस्वरूपजी ६ मास तक रहे थे। हमने अमरकुण्ड में स्नान किया, बिल्व वृक्षके नीचे सन्ध्योपासन करके शिव-पूजन कर सिद्ध भूमि और धूनीको प्रणाम किया और १० बजे हमारा दल वहां से चल पड़ा। इस वनमें सीताफल, टीमरू, आम, जामुन, करौंदा, गूलर, गूंदा आदिके असंख्य वृक्ष हैं, प्रत्येक ऋतुमें यहां कोई न कोई फल अवश्य मिलता है, यही यहांके सिद्ध पुरुषों और वानरोंका आहार है। मैं सायंकालीन सन्ध्या समय तक वहां ठहर कर उस दिव्य धूपका आनन्द लेना चाहता था पर पत्नी और अन्य साथी नहीं माने। मुझ अकेले को वे उस भयानक जंगलमें छोड़कर जानेको कथमपि तय्यार नहीं थे, अतः बाध्य हो सबके साथ चलना पड़ा। लौटते समय धूप सामनेकी अच्छी हो गयी थी, और पहाड़की चढ़ाई भी, अतः बालिका अन्नपूर्णा और श्रीरामेश्वरजीकी पत्नीको बहुत थकावटका अनुभव हुआ। १२॥ बजे सेवन्त्री पहुंचकर धर्मशालामें सब स्त्रियों ने मिलकर दाल-भात बाटी अमचूरका सुन्दर मालवीय भोजन बनाया। श्री भगवान् रूपनारायणको भोग लगाकर सबने २॥ बजे आनन्द पूर्वक भोजन किया। रात्रिको १० बजे एक दिव्य सुसज्जित विमानमें मन्दिरसे भगवान्की सवारी बड़ी धूमधामसे मसाल व गाजे-बाजेके साथ निकली। पुजारी और सेवक भक्तगण तालमृदङ्गके साथ भक्तिरस पूर्ण भजन और कीर्तन करते जाते थे, मन्दिरके प्राङ्गणकी परिक्रमा में ही विमान भजन मंडलीके साथ धीरे-धीरे घूमता है, स्थान-स्थान पर भगवान्को भक्तोंकी ओर से भोग लगता और प्रसाद बँटता जाता था। इस दिनके दर्शनकी शोभा निराली ही थी। भजन मण्डलीमें एक वृद्ध पुजारी १०२ वर्षकी आयुका था जिसे दो आदमी सहारा देकर लाये थे, परन्तु स्पष्टोच्चारणमें वह वृद्ध सबका अग्रणी था। रात्रि ११॥। बजे विमान परिक्रमा करके मंदिरमें पहुंचा और १२ बजे शयन आरती के दर्शन करके हम लोगोंने अपने स्थान पर जाकर विश्राम किया। एकादशीको प्रातः ५॥ बजे मंगला के दर्शन करके हमारा दल श्री रूपनारायणकी सेवन्त्री पुरी से ६ बजेकी बससे प्रस्थान करके ७ बजे श्री चारभुजाकी गढबोरपुरीमें पहुंचा। श्री पं० श्रीधरजी व्यासके घर पर ही हम लोग ठहरे। 'सेवन्त्री' ग्राम शबरीके नामसे कहा जाता है। इसी तपोभूमिमें शबरी भिल्लनीको भगवान् श्रीरामके दर्शन हुए थे। श्री रूपनारायण रामरूप कहलाते हैं। यहां शबरी का मंदिर भी है। उसीके नामका अपभ्रंश यह 'सेवन्त्री' ग्राम है। एकादशीको दुबारा श्री चारभुजानाथके दर्शन करके सायंकालको बससे हमारा दल कांकरोली

पहुंचा। वहां भगवान् श्री द्वारिकाधीशके दर्शन करके रात्रि-विश्राम किया।

दूसरे दिन श्रीनाथद्वारामें श्रीनाथजीके दर्शन करके रविवार प्रदोषको कैलाशपुरीमें भगवान् श्रीएकलिंगके दर्शन किये, सोमवारको भी कैलाशपुरीमें विशेष पूजाके दर्शन कर चतुर्दशी मंगलको सायंकाल पुनः श्रीनाथद्वारा लौटे। अमावस्याको श्रीनाथजीके और ज्ये० शु० १ को द्वारिकाधीश के दर्शन कर अपनी जन्मभूमि रायपुर पहुंचे। वहां सभी इष्टमित्र पारिवारिक जनोंके दर्शन करते हुए मरेवड़ा, देवगढ़, कामलीघाट, भीम, ब्यावर होते हुए ज्ये० शु० ६ को अजमेर पहुंचे। वहां श्रीमान् सेठ रामलालजी लुणियाकी मोटर कार से हमने श्रीगंगादशमी निर्जला एकादशीका स्नान पुष्कर जाकर किया। चतुर्दशीको जयपुरमें आमेरकी अधिष्ठात्री भगवती श्री शिलादेवीके दर्शन किये और पूर्णिमाको प्रातः गालवाश्रम (गलता) स्नान और श्री गोविन्ददेवजीके दर्शन किये और इसी पूर्णिमाको हमारे स्नेही श्री दुलेसिंहजी कोठारी ने नई मोटर कार खरीदी थी उसमें वे स्वयं हमें जयपुर से ४८ माईल डिग्गीमें भगवान् श्री कल्याणजीके दर्शनार्थ ले गये और पूर्णिमाके विशेषदर्शन करवाकर रात्रि ११॥ बजे जयपुर अपने स्थान पर पहुंचाये।

श्रीएकलिंगजी श्रीनाथजी श्रीद्वारिकाधीश और श्री कल्याणजीकी यात्राका विशेष वर्णन, वहां के अद्भुत चमत्कार और इन सिद्धपीठोंका संक्षिप्त इतिहास आगामी अंकमें प्रकाशित करेंगे।

—

[पृष्ठ ४२ का शेष]

सरण करनेमें समर्थ होगी। पूर्वकी ओर जहाँ यह ग्रहण दिखाई देगा वहाँ इसका फल अधिक होगा। बंगाल, बिहार, आसाम, उड़ीसा, नेपाल, भूतान, तिब्बत, चीन, जापानमें विशेष रूपसे और साधारणतः दिल्ली, उत्तरप्रदेश, पंजाबके आसपास भी कहीं भूकम्प, बाढ़, आकस्मिक विस्फोट, रेल्वे दुर्घटना, हड़ताल आदि उपद्रवसे हानि होगी।

भारतके प्रधानमंत्री पं० श्री जवाहरलालजी नेहरूके जन्म-लग्न और राशिसे यह ग्रहण अष्टम हो रहा है अतः उन्हें अकल्पित उलझनोंका सामना करना पड़ेगा। इस अवधिमें श्री नेहरूजीको अपने स्वास्थ्य और सुरक्षाका विशेष रूपसे ध्यान रखना चाहिए। श्री नेहरूजीको इस समय जन्म लग्न राशिसे छठा शनि अनुकूल चल रहा है, यह शत्रुनाशक प्रतिष्ठावर्धक है। फरवरी १९६१ से ७वाँ शनि इतना उपयोगी नहीं रहेगा, वहां किसी सहयोगीके अवसानसे भी आघात पहुँचेगा और राष्ट्रीय उलझनें बढ़ेंगीं अतः इसी अवधिमें वे अपनी विदेश नीतिको दृढ़ बनाकर चीनको वस्तुस्थितिसे अवगत करदें तो भारतके लिए विशेष कल्याणकारक होगा। आगेका विशेष विवेचन आगामी 'नववर्षाङ्क' और हमारे श्रीविश्वविजय पंचांगमें करेंगे वहाँ देखें।

———

विवाहोत्सवों पर मङ्गलकामना

इस वर्ष वैशाख मासमें इष्टमित्र स्नेही सम्बन्धीजनोंके यहां इतने अधिक विवाह थे कि हार्दिक इच्छा होते हुए भी कई जगह पहुंच नहीं पाया। अक्षयातृतीया और वैशाख शु० ६ के विवाह लग्न सर्वाधिक थे। अनेक स्थानोंसे स्नेहामंत्रण प्राप्त हुए, परंतु मैं जिन मुख्य स्थलों पर सम्मिलित हो सका वहांका संक्षिप्त विवरण क्रमशः यहां दिया जा रहा है। इस अवधिमें विवाहित वर-वधुओंको ईश्वर चिरायुः यशस्वी एवं विद्या-विनय-सम्पन्न बनावें ताकि उनके द्वारा राष्ट्र और समाजकी समुचित सेवा हो सके। यही हार्दिक मंगल कामना है।

चि० श्री रमाकान्तका शुभ विवाह

सुन्दरनगर (मण्डी सुकेत) के राजज्यौतिषी बन्धुवर श्री पं० हरकृष्णदयालुजीके सुपुत्र चि० श्री रमाकान्त शास्त्री (प्रो० श्रीतारिणी गवर्नमेण्ट संस्कृत-कालेज सोलन) का पाणिग्रहण संस्कार भरतगढ़ (अम्बाला) में श्री रामप्रकाशजी कौशल S.D.O. की सुपुत्री आयुष्मती कान्तादेवी प्रभाकरके साथ वैशाख शु० ३ गुरुवार दिनाङ्क २८ अप्रैलको सानन्द सम्पन्न हुआ। वरयात्रामें सुकेतके राजकुमार श्री ललितसेन और अन्य अधिकारीवर्ग तथा प्रसिद्ध विद्वान् सम्मिलित हुए। अमृतसर, जालन्धर, खन्ना, लुधियानासे भी कुछ विद्वान् सीधे भरतगढ़ वरयात्रामें सम्मिलित हुए। मैं चण्डीगढ़से श्रद्धेय श्री पं० मुकुन्दवल्लभजी राजज्यौतिषीके साथ कुराली होते हुए अक्षया ३ को सायंकाल भरतगढ़ पहुंचा। रात्रिको मीनलग्नमें सुप्रसिद्ध विद्वानों द्वारा शास्त्रीय पद्धतिसे विवाह संस्कार सानन्द सम्पन्न हुआ। मुझे अपने श्वसुरालय केलवाड़ा (राजस्थान) विवाहमें सम्मिलित होना था अतः दूसरे दिन न ठहर सका। २६ को प्रातः ही भरतगढ़से विदा हो मध्याह्नको चण्डीगढ़ पहुंचा। वहांसे पत्नीको साथ ले दिल्ली होते हुए राजस्थानके विवाहमें सम्मिलित हुआ।

स्वस्तिमती नारायणी और वैष्णवीदेवीका शुभ विवाह

उदयपुर मण्डलान्तर्गत केलवाड़ा (कुम्भलगढ़) निवासी श्री भँवरलालजी शर्मा उपाध्यायकी दो सुपुत्रियोंके विवाह-संस्कार वैशाखशुक्ला ६ दिनाङ्क ५ मई १६५६ को सानन्द सम्पन्न हुए। ज्येष्ठपुत्री आयुष्मती नारायणीदेवीका विवाह उदयपुर निवासी श्रीमान् पुरुषोत्तमजी बण्डेलाके सुपुत्र चि० श्री रमेशचन्द्रजी शर्माके साथ और कनिष्ठपुत्री स्वस्तिमती वैष्णवीदेवीका विवाह रायपुर (मेवाड़) निवासी श्रीमान् नाथूलालजी त्रिवेदीके सुपुत्र चि० श्री सत्यनारायणके साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। कन्याओंके पितामह (दादाजी) श्री लक्ष्मीलालजी साहब उपाध्यायने वृद्धावस्थामें भी जिस तन्मयतासे अतिथियोंकी सेवा भोजनादि व्यवस्था और सभी वैवाहिक कार्योंमें स्नेहपूर्वक जितना श्रम किया वह प्रशंसनीय ही नहीं नवयुवकोंके लिए भी अनुकरणीय है। ८५ वर्षकी वृद्धावस्थामें भी आपमें जितनी आत्मीयता एवं कार्यक्षमता है उतनी आजके नवयुवकोंमें भी नहीं है। दूसरे दिन प्रातः उदयपुर रायपुरके कुछ बराती कुम्भलढ़ किला देखने गये और कुछ श्रीपरशुराम महादेवके दर्शनार्थ गये। इसी दिन सायंकाल (दशमी शुक्रवारको) भात प्रीतिभोज और रात्रिमें अन्य वैवाहिक कार्य मंगलविदाई आदि सम्पन्न हुए।

केलवाड़ा प्राकृतिक सौन्दर्य और जलवायुकी दृष्टिसे मेवाड़में सुन्दर स्थान है। ३८०० फुटकी ऊंचाई पर अर्बुदाचल (अरावली) में बसा हुआ यह ग्राम और कुम्भलगढ़ मेवाड़का आबू कहलाता है। स्वर्गीय महाराणा फतेहसिंहजी प्रतिवर्ष ग्रीष्मकालमें कुछ समयके लिए कुम्भलगढ़ निवास करते थे। केलवाड़ामें कुम्भलगढ़ तहसील, विकास-खण्ड-केन्द्र, पंचायत बोर्ड, हाईस्कूल, हस्पताल, कन्या पाठशाला आदि होनेसे ग्राम छोटा होने पर भी उत्तरोत्तर अच्छी प्रगति कर रहा है।

चि० श्री भूपेन्द्रसिंहजीका शुभविवाह

उदयपुरके सुप्रसिद्ध महता साहब श्रीमान् संग्रामसिंहजी के कनिष्ठ सुपुत्र चि० श्री भूपेन्द्रसिंहजीका शुभविवाह श्रीयुत महता साहब जगदीशचन्द्र सिंहजी (उदयपुर) की सुपुत्री स्वस्तिमती स्नेहलता कुमारीके साथ वैशाख शु० ११

दिनाङ्क ७ मई को अर्धरात्रिमें बड़े समारोहके साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। महता साहबके पूर्वज महाराणाके मंत्रीवर्गमें रहकर अपने अनुपम पराक्रम एवं जनसेवाके द्वारा अविस्मरणीय सुयश प्राप्त कर चुके हैं। श्री महतासाहब संग्रामसिंहजी भी धर्मनिष्ठ ईश्वरभक्त साहित्यरसिक विद्या-विनय-सम्पन्न सहृदय सज्जन हैं। आपके यहां विद्वानोंका उचित सम्मान होता है और जो भी विशिष्ट विद्वान् उदयपुर पहुंचता है वह आपसे अवश्य मिलता है। मेरा आपसे ३० वर्ष पुराना स्नेह सम्पर्क है और यह उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ आत्मीयरूप ले चुका है, अतः उक्त विवाह में पहुँचनेके लिए महता साहबके स्नेहपूर्ण आग्रहको मैं टाल नहीं सका। केलवाड़े मैं कई वर्षोंके बाद गया था, अतः वयोवृद्ध श्रद्धेय श्वसुरजी, अन्य पारिवारिकजन एवं इष्टमित्र विवाहके बाद कमसे कम सप्ताह भर मुझे छुट्टी नहीं देते, एतदर्थ उदयपुरसे वापस केलवाड़े लौटनेकी प्रतिज्ञा करके जैसे-तैसे ७ मईको सायंकाल ४ बजे उदयपुर पहुंचा। मालदासजीकी सेहरीमें महता साहबकी हवेली 'नवेली' की भांति भव्यरूपमें सजी हुई थी। महमानोंका मंगलमय मेला सा जुटा था। यहीं पर मेरे कुछ पूर्व परिचित स्नेही जनों—श्री उदयलालजी महता साहब, श्री इन्द्रसिंहजी महता, श्री डॉ० मोहनसिंहजी महता (वायसचांसलर राजस्थान यूनिवर्सीटी) श्री गोवर्धनसिंहजी महता (कमिश्नर अजमेरप्रान्त) श्री निरंञ्जननाथजी आचार्य (उपाध्यक्ष राजस्थानविधानसभा) श्री भगवतसिंहजी महता (मुख्य सचिव राजस्थान) श्री दुलेसिंहजी कोठारी, श्री प्रो० चरणदासजी, श्री माणिक्यलालजी वर्मा और वैद्यराज श्री भागीरथजी जोशी आदि—से वर्षों बाद मिल बैठनेका सुअवसर प्राप्त हुआ। अन्य अनेक विशिष्ट अतिथियोंसे श्री महता साहबने मेरा परिचय कराया।

रात्रिको ८॥ बजे हवेलीसे वर निकासी (वर-यात्रा) प्रारम्भ हुई। बरातमें राज्यके अनेक उच्चाधिकारी, प्रसिद्ध नागरिक एवं गण्यमान्य सज्जन सम्मिलित हुए। इस वर यात्राकी शोभा निराली ही थी। बाजार ऊपर नीचे चहुँ ओर दर्शकोंसे खचाखच भरे थे। १० बजे रात्रिको बरात कन्याके घर श्री भीमसिंहजीकी हवेली पर पहुंची। भीम-निवासकी शोभा और सजावट भी अद्भुत थी। भव्य मंडपमें वर और बरातियोंका कन्यापक्षकी ओरसे समुचित स्वागत सत्कार जलपान हुआ। इसी सभामंडपमें विवाह संस्कारके महत्व पर आशीर्वादात्मक मेरा संक्षिप्त भाषण हुआ। तदनन्तर मकर लग्नमें विधिवत् विवाह संस्कार सानन्द सम्पन्न हुआ। महता साहबका परिवार बहुत बड़ा है और प्रायः सभी प्रतिष्ठित नागरिकोंसे आपका घनिष्ठ स्नेह सम्बन्ध है अतः विवाहके अनन्तर भी कई दिनों तक आपके इष्टमित्र स्नेही जनोंकी ओरसे प्रीतिभोज (पार्टियों) का कार्यक्रम चलता रहा। तीसरे दिन श्रीमान् महता साहब भगवतसिंहजीकी ओरसे प्रीतिभोज था, मित्रोंके आग्रहसे मुझे भी तब तक उदयपुर रुकना पड़ा।

इस विवाहमें श्री महता साहब संग्रामसिंहजीने पहरावणी (कन्या पक्षकी ओरसे वर पक्षके पारिवारिक जनोंको वस्त्रादि दिये जाते हैं उसे पहरावणी कहते हैं) न लेकर एक नवीन आदर्श उपस्थित किया। कन्यापक्षकी ओरसे दहेजका सार्वजनिक प्रदर्शन भी नहीं किया गया। भातके अनन्तर श्री महता साहबने स्वयं मुझे एक कक्षमें ले जाकर दहेजकी सब वस्तुएँ विशेषरूपसे दिखाईं। महता परिवारकी प्रतिष्ठाके अनुरूप सभी वस्तुएँ बहुत सुन्दर एवं आकर्षक थीं।

इसीदिन वै० शु० ११ को हमारे चिरपरिचित स्नेही राजस्थानके सुविख्यात वैद्यराज पं० श्री भागीरथजी जोशी (बीकानेर) की सुपुत्रीका विवाह भी उदयपुरमें भव्य समारोहके साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

चि० कुँ० कृष्णसिंहजीका शुभविवाह

झाबुवा (मध्यप्रदेश) मण्डलान्तर्गत उमरकोट ठिकाने के उमराव ठाकुरसाहब श्रीमान् मोतीसिंहजीके सुपुत्र चि० श्रीयुत कुँवर कृष्णसिंहजीका शुभ विवाह अक्षया ३ दिनाङ्क २८ अप्रैल १९६० ई० को बरखेड़ीके ठाकुर साहब श्रीमान् लोकपालसिंहजीकी भगिनी स्वतिमती भारतेन्दुकुमारीके साथ अद्भुत समारोहके साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें हिजहाईनेस श्रीमन्त झाबुवानरेश, महाराजसाहब खवासा, श्रीमान् ठाकुर साहब पंचेड़ आदि कई ठिकानोंके अधिपति सामन्तवर्ग और मण्डलके उच्चाधिकारी सपरिवार सम्मिलित हुए। श्रीमान् ठाकुरसाहब मोतीसिंहजी धर्मनिष्ठ भगवद्भक्त विद्यानुरागी सहृदय सज्जन हैं। ज्योतिर्विज्ञानमें आपकी विशेष अभिरुचि है। वर्षोंसे आपका मेरे साथ बहुत अधिक

त्रैमासिक राशि-भविष्य

[श्री शक्तिमोहन, शिमला]

आगामी तीन मासका (६ जुलाई से ४ अक्टूबर १९६० ई० तक) राशिफल दिया गया है। यह राशिफल ग्रह गोचर-गणनाके आधार पर लिखा गया है। प्रत्येक व्यक्तिको यह सर्वथा सत्य ही मिले यह आवश्यक नहीं। वार्षिक, मासिक फल यथार्थ रूपमें जन्मपत्र वर्षपत्रके सूक्ष्म गणितसे ही ज्ञात हो सकता है।

मेष

नवें शनि-गुरु एवं पांचवे राहुकी स्थिति महत्वपूर्ण है। जहां एक ओर नवम शनि एवं पंचम राहु व्यक्तिगत एवं व्यावहारिक क्षेत्रोंमें उलझनें उत्पन्न करेंगे वहाँ गुरु-देव समुचित सद्बुद्धि एवं सहायताका भी विधान करेंगे। मेष राशि वालोंके लिये आगामी तीन मासोंमें सूर्य मंगलकी गति विशेष प्रभावपूर्ण प्रतीत होती है। २४ जुलाईसे ९ सितम्बर तक मंगल दूसरे स्थानमें रह कर शत्रु पक्ष एवं राज पक्षसे भय, स्वभावमें चिड़चिड़ापन, व्ययकी अधिकता तथा धोखेसे हानि और पित्त वृद्धि इत्यादि अशुभ फल देगा। इसी बीचमें सूर्यदेव भी चौथे और पांचवें स्थानमें रहकर अनेक प्रकारसे शारीरिक एवं मानसिक कष्ट देंगे। १० अगस्तसे ९ सितम्बरके बीच चित्तमें अशांतिकी अधिकता होगी, स्त्री-पुत्रको कष्ट होगा, एवं राज पक्षसे चिंताका कारण बनेगा। नौकरी पेशा लोगोंको इस समयमें क्रोधको वशमें रखनेका प्रयत्न करना चाहिये, अन्यथा व्यर्थ ही झगड़ा खड़ा हो सकता है। व्यापारी-वर्गको व्यापारमें विशेष सावधानी बरतनी चाहिये। ९ सितम्बरके बाद तीसरे मंगल और १७ सितम्बरके बाद छठे सूर्य शत्रु पक्ष पर प्रभुत्व एवं राजपक्षसे लाभ देने वाले हैं। किन्तु इस दौरान में शुक्र एवं बुधकी गति कौटुम्बिक कलह-कारिणी बन सकती है, अतः वाणी और व्यवहारमें सतर्कता रखनी चाहिए। आश्विनका उत्तरार्द्ध व्यापारी-वर्गके लिये शुभ है।

वृष

अष्टम शनि-गुरु एवं चतुर्थ राहु विभिन्न कौटुम्बिक समस्याएँ उत्पन्न करने वाले हैं। गुरु-देवकी हीन स्थिति दैन्य एवं मानहानि कराने वाली है अथवा धन सम्बन्धी तंगी और स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ताएँ बनी रहेंगी। मंगलका द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थानका अतिक्रमण महत्वपूर्ण हैं। व्ययकी अधिकता, उद्विग्नता, अस्थिरता तथा कष्टप्रद यात्रा एवं धनहानि इत्यादि अशुभ फल आगामी तीन मासके अन्दर मंगलकी स्थितिके कारण होंगे।

बीच में १६ जुलाईसे १६ अगस्त तकका समय श्रेष्ठ है। पराक्रम वृद्धि, सफलता एवं इच्छित सुखोंकी प्राप्ति होगी। इसी बीचमें व्यापार आदिसे कुछ लाभ भी संभव है।

मिथुन

सप्तम गुरु एवं तीसरे राहु श्रेष्ठ हैं। उत्साह व्यवसाय में उन्नति एवं योजनाओंमें सफलताकी प्राप्ति होगी। सप्तम गुरु कौटुम्बिक सुख विशेष देता है और सुन्दर स्थानों की यात्रा कराता है। कुछ लोगोंके लिये विवाह कारक भी हो सकता है। किन्तु शनि साथमें होनेसे विघ्न बाधा उत्पन्न करता है, अतः सावधानी आवश्यक है। २४ जुलाईके बाद मंगल बारहवें तथा पहले रहते हैं यह अधिक व्यय, आंखमें

घनिष्ठ स्नेह सम्बन्ध है। ठाकुरसाहबका विशेष स्नेहाग्रह होने पर भी मैं सम्मिलित न हो सका इसका कारण यह है कि इसीदिन अक्षाया३को यहां चि० रमाकान्त शास्त्रीका विवाह था। एक वर्ष पूर्व ही मैं इस विवाहमें सम्मिलित होनेके लिए वचनबद्ध हो चुका था। अतः इस दिन अन्य किसी स्नेही सम्बन्धियोंके विवाहमें सम्मिलित न हो सका इसके लिए स्नेहीजनोंसे मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

कष्ट, तथा अनेक चिंताएँ करेंगे तथा कष्ट-प्रद यात्रा एवं असफलता इत्यादिके कारण चित्तमें खिन्नता उत्पन्न करेंगे। १७ अगस्तसे १६ सितम्बर तक सूर्य तीसरे, स्वराशिमें राज पक्षसे लाभ, शत्रुओं पर विजय तथा व्यपारादिमें लाभ और बान्धवोंमें यशकी प्राप्ति कराता है। राज कर्मचारी वर्गके लिये यह समय उत्तम है। ६ सितम्बरके बाद स्वास्थ्यका ध्यान विशेष रखें, क्योंकि जन्म राशिस्थ मंगल सप्तम शनि एवं गुरु पर दृष्टि रखता है यह स्वयंको एवं स्त्री-पुत्रको भी रोग एवं कष्ट देने वाला है। वायु एवं पित्तके विकार संभव है। व्यक्तिगत एवं सामाजिक क्षेत्रमें काफी दिलचस्प मामले सामने आयेंगे।

कर्क

विवाद, विरोध, कलह, खींचातानी एवं अत्यधिक व्यस्तता होते हुए भी आप अनुभव करेंगे कि कोई आशा एवं प्रेरणा प्रदान करने वाला सूत्र भी है जो आपको इन कठिन परिस्थितियोंमें भी मजबूतीसे अपने पैर टिकानेका अवसर देता है। वास्तवमें देखा जाय तो जो विवाद पिछले दिनोंसे चल रहा है यह उसका अन्तिम अध्याय है—और शीघ्र ही समाप्त होगा। जुलाईके उत्तरार्धमें यात्राकी संभावना है और २४ जुलाईसे ६ सितम्बरके बीच लाभस्थानस्थ मंगल राजपक्षसे सम्मान, धनका लाभ और अनेक प्रकारके सुख देने वाला है। १६ सितम्बरके बाद तृतीय सूर्य भी यश, धन एवं सुख-प्राप्ति कराता है। किन्तु इसी समय मंगल बारहवें चल रहा है अतः विघ्न-बाधाएं भी अनेक उत्पन्न होंगी। कर्क राशि वालोंको उचित है कि जो भी ऐसे कार्य हैं जिनकी स्थिति अनिश्चित एवं शंका-पूर्ण हों, उन्हें ६ सितम्बरके बाद हाथ भी न लगायें। साथ ही इस समयके बाद अनावश्यक व्यय उठानेको भी तैयार रहें।

सिंह

आजकल आपको पांचवें गुरु स्वराशिमें चल रहे हैं। यह श्रेष्ठ फलदायक हैं। संतानका सुख, राजपक्षसे लाभ, गृहमें उत्सव तथा अन्य शुभ फल गुरुदेवकी कृपासे होंगे। किन्तु साथमें पंचम शनि और जन्म-राशि पर राहुकी स्थिति उलझन, व्यग्रता, उद्विग्नता, क्रोध तथा बाधाओंकी सुचना भी देती है। श्रावण मासमें व्यय अनावश्यक रूपसे बढ़ जायेंगे। बहुत सी नई समस्याएं उत्पन्न होंगी। किन्तु इसी बीच २४ जुलाईसे ६ सितम्बर तक मंगल दशवें आकर उत्साह एवं प्रेरणा प्रदान करेंगे। ६ सितम्बरके बाद ग्यारहवें मंगल धनका लाभ तथा प्रसन्नता प्रदान करेंगे। १६ सितम्बरसे सुर्य भी तीसरे आ जाते हैं यह यश-धन-सुख लाभ कराने वाले हैं। सब प्रकारसे देखते हुए सिंह राशि वालोंको यह समय सामान्य ही जायेगा। श्रावण तथा भाद्रपद मासमें अच्छा हो यदि सिंह राशि वाले वाणी एवं व्यवहार पर संयम रखें, अन्यथा अकारण कलह की स्थिति बनेगी। आश्विन मासमें उन्नति कारक समय है। व्यापारी गण नये कार्यमें बेधड़क हाथ डाल सकते हैं।

कन्या

चौथे शनि-गुरु एवं बारहवें राहु लगातार चित्तमें चिंता एवं असंतोष बनाये रखेंगे। व्यय अधिक होगा। एकके बाद एक उलझनें सामने आयेंगी। ६ सितम्बरसे पहले मंगलकी गति भी बाधा उत्पन्न करने वाली और कष्ट देने वाली है। श्रावणमें ग्यारहवें सूर्य, शुक्र एवं बुधकी स्थिति कुछ न कुछ धन लाभ अवश्य करायगी। व्यापारी-वर्गको यह समय श्रेष्ठ व्यतीत होगा। किन्तु भाद्रपदमें व्यय बढ़ जायेंगे। कन्या राशि वालोंको गृह सम्बन्धी एवं व्यक्तिगत कठिनाइयों का सामना अधिक करना पड़ेगा। आश्विन माससे समय उत्तरोत्तर उन्नति कारक है। दशम मंगल राजपक्षसे सम्मान प्राप्त करायेगा। इसी समयमें यात्राकी योजना भी संभव है।

तुला

तीसरे शनि एवं ग्यारहवें राहु अत्यन्त शुभ हैं। यश एवं धनसे संतोष रहेगा। किंतु तीसरे गुरु राज-कर्मचारियों को राज भय तथा व्यापारी वर्गको हानिका भय करते हैं। इसी समय मंगल सातवें, आठवें एवं नवें स्थानमें चलकर अधिक चिन्ता, शरीर में पित्त व्याधि अथवा चोट लगनेसे रक्त स्राव इत्यादि करता है। गुरु स्वराशिस्थ होनेके कारण अशुभ फल कुछ न्यून करते, किंतु ६ सितम्बरके बाद मंगलकी दृष्टि अपयश एवं कलह अवश्य करायगी और शत्रु भय भी होगा।

आगामी तीन मासोंमें श्रावण एवं भाद्रपदके अन्दर दशम एकादश स्थानमें सूर्य तथा बुध-शुक्रका क्रमश राज-पक्षमें मान, धनका लाभ तथा कौटुम्बिक सुख देगा। अगस्तका उत्तरार्ध व्यापारी वर्गके लिए श्रेष्ठ है। १६ सितंबरके बादका समय विशेष चिन्ता उत्पन्न करने वाला है।

अष्टम मंगल स्त्रीको एवं सतानको कष्ट देने वाला होता है तथा स्वयं को भी थकान एवं अन्य शारीरिक कष्ट संभव है। अतः २४ जुलाईसे ६ सितम्बरके बीच दुर्घटना एवं बदपरहेज़ीसे सावधान रहें।

वृश्चिक

द्वितीय गुरु अत्यन्त शुभ है, तथा धन-मान एवं गृहस्थ सुखको देने वाला है। स्वराशिस्थ होनेके कारण अपना सम्पूर्ण शुभ फल देगा। किंतु २४ जुलाईसे ६ सितम्बर तक सातवें मंगलसे इसको वेध होनेके कारण इसका शुभफल नहीं होगा। इस कालमें द्वितीय शनि अपना अशुभ फल देगा। आवश्यक व्यय बढ़ जायेंगे, एवं कुटुम्बके अन्दर कलहकी स्थिति बनी रहेगी। स्त्री-पुत्रको रोग एवं स्वयंको भी शरीरकष्ट होगा। दशम राहु एवं नवम सूर्य-बुध यशकी हानि तथा राजपक्ष एवं शत्रु पक्षसे भय कराने वाले हैं। व्यापारी वर्गको यह समय बड़ा कठिन होगा। समझदारी इसीमें है कि कोई झगड़ा मोल न लें। १७ अगस्तसे आगे एक मास तक सूर्य दशम स्थानमें स्वराशिका होकर पड़ा है। यही समय कुछ अच्छा है। राज-कर्मचारियोंको अपने अफसरोंसे मान तथा व्यापारियोंको व्यापारमें थोड़ा लाभ इसी दौरानमें हो सकता है। ६ सितंबरके बाद अष्टम मंगल शनिसे दृष्ट है अतः दुर्घटना आदिका भय है। वृश्चिक राशि वालोंको आगामी तीन मासके अन्दर लम्बी यात्रा नहीं करनी चाहिए और न ही कोई शारीरिक खतरा मोल लेना चाहिए।

धनुः

श्रावण मासका आरम्भ अत्यन्त अनिश्चित एवं द्विविधापूर्ण परिस्थितियोंमें होता है। पहले शनि-गुरु, पांचवें मंगल, सातवें सूर्य, राहु नवें, यह सभी निरुत्साह, कष्ट, भय, उच्चाटन, कलह एवं असफलताके द्योतक हैं। किन्तु यह परिस्थिति अधिक दिन नहीं ठहरेगी। शीघ्र ही मंगल छठे आ जायेगा और शत्रुनाश, धन लाभ एवं इच्छित फल प्राप्ति इत्यादि शुभ फल होंगे। आठवें सूर्य रोग एवं स्त्री पुत्रको कष्ट देने वाला है। किन्तु अष्टम बुध-शुक्र चित्तको चंचल एवं विलासी प्रवृतिका बनाते हैं, तथा मनोरंजनका भी विधान करते हैं। ऐसेमें संयम एवं सतर्कतासे काम लेना उचित है, अन्यथा शरीरकष्ट तथा व्यर्थके झगड़े पैदा होने का भय है। सम्पूर्ण ग्रहस्थितिको देखते हुए आगामी तीन मास अच्छे नहीं कहे जा सकते। २४ जुलाईसे ६ सितम्बर तक छठे मंगल तथा १६ सितम्बरसे आगे सूर्य दशवें स्थानमें आकर परिस्थितियोंमें कुछ सुधार लायेंगे, अन्यथा बाकी समय तो शारीरिक एवं मानसिक विचारों में ही व्यतीत होगा। व्यापारके लिए समय अनुकूल नहीं है। ६ सितम्बरके बाद यात्रा अथवा स्थान परिवर्तन संभव है।

मकर

बारहवें शनि-गुरु एवं आठवें राहु चल रहे हैं। इसके कारण अधिक व्यय, अकारण चिंताएं, चोरी या धोखेका भय, शरीरमें कष्ट वा निर्बलता इत्यादि फल होंगे। श्रावण के आरम्भसे भाद्रपदके अन्त तक मंगल चौथे और पांचवें में हैं यह कौटुम्बिक कलह दुश्चिन्ता, स्त्री-संतानको कष्ट एवं शत्रु पक्षसे भय कराने वाला है। पंचम मंगल क्रोध बढ़ाकर कलह कराता है। अतः वाणी एवं व्यवहारमें संयम लाभ-प्रद सिद्ध हो सकता है। १५ जुलाईके बाद यात्राकी योजना बन सकती है, अथवा अन्य कोई परिवर्तन सामने आ सकता है। ५ अगस्तसे २२ सितम्बर तक चिंताओंमें थोड़ी कमी आयेगी। ६ दिसम्बरके बाद छठे मंगलसे शत्रुपक्ष पर विजय एवं व्यापारमें लाभ होगा। सम्पूर्ण ग्रह स्थिति उत्तम होते हुए भी ६ सितम्बरके बाद पर्याप्त सुधारकी आशा है।

कुम्भ

आगामी तीन मासोंकी ग्रह स्थिति कुम्भ राशि वालों को महत्वपूर्ण है। आजकल वैसे भी समय अच्छा चल रहा है। व्यापारादि की स्थिति संतोषजनक है। ग्यारहवें शनि-गुरु धन लाभ लगातार कराते रहेंगे। श्रावणके आरम्भ में तृतीय मंगल एवं १५ जुलाईके बाद छठे सूर्य भाग्यमें निरन्तर वृद्धि करते रहेंगे। २४ जुलाईके बाद चौथे मंगल

श्रीचारभुजाका अद्भुत चमत्कार

[लेखक—श्री पं० श्रीधर दुर्गादत्त व्यास, देवगढ़, मेवाड़]

उदयपुर (मेवाड़) राज्यमें श्री चारभुजाजीका परम पवित्र तीर्थ स्थान है। कलियुगमें प्रत्यक्ष प्रभु (हाज़रा हज़ूर) बिराजते हैं। भक्तजनोंके मनोवाञ्छित कार्य-पूर्ण करते हैं। अभी ज्येष्ठ कृष्णा ६ (नवमी) को हमारे भाग्यसे श्रीमान् प्रातःस्मरणीय ज्योतिर्विद्चूड़ामणि पं० हरदेवजीका श्री चारभुजाजीमें पधारना हुआ। उन्होंने हमको उत्साह दिलाया कि ऐसे प्रभुका प्रत्यक्ष चमत्कार "ज्योतिष्मती" में लेख रूपमें क्यों नहीं भेजते ? अब अवश्य भेजा करें। इसलिये मैं इन प्रभुकी प्रत्यक्ष और सच्ची घटना जो अभी ज्येष्ठ कृष्णा ३० (अमावस्या) को घटी वह यहां दे रहा हूँ—

पाली (मारवाड़) के पास "मनिहारी" नामका एक गाँव है। जिसमें "मारू" जातिके कुम्हारोंके २५० (अढ़ाई सौ) के करीब घर हैं। उन सब घरोंमें अपठित सरलमति श्रद्धालु ग्रामीणजन होनेसे प्रभु श्रीचारभुजामें अटल विश्वास व श्रद्धा और घर-घरमें चित्र सेवा है। उस ग्राममें एक कुम्हार परिवारमें तीन भाइयोंके घरमें एकमात्र बालक पुत्र था वह छत परसे (बहुत ऊपरसे) गिरकर मूर्छित हो गया। डाक्टरने कह दिया कि इसके प्राणपखेरू उड़ गये हैं, यह सुन घर भरमें हाहाकार मच गया। पारिवारिकजन करुण क्रन्दन करने लगे।

इतनेमें वहां फेटा (साफा) बंधा हुआ हाथमें लकड़ी और कंधे पर कंबल रखे कोई अपरिचित ग्रामीण मनुष्य आया और आते ही कहा कि आप लोगोंने प्रभु श्री चारभुजाजीका चरणामृत इस बालकको दिया या नहीं ? नाम लेते ही उसके पिताने यह प्रतिज्ञा की कि जब तक मैं इस बालकको श्रीचारभुजा गढ़बोर ले जाकर श्रीठाकुरजीके चरणोंमें धोक नहीं दिलाऊंगा तब तक थालीमें भोजन नहीं करूँगा, और 'अंगरखी" (एक तरहका ग्रामीण कुरता) नहीं पहरूँगा। बच्चेकी माताने यह प्रतिज्ञा की कि घी, मीठी वस्तु, दूध नहीं खाऊँगी और जूते भी नहीं पहरूँगी। प्रतिज्ञा कर चरणामृत लाकर बालकको दिया और ५ मिनिट पश्चात् बालक स्वस्थ हो खेलने कूदने लगा। डाक्टरकी दवा

एवं इसी दौरानमें छठे सातवें शुक्रके कारण कुछ हानि, भय, स्त्री-पुत्रको कष्ट एवं कौटुम्बिक कलह संभव है। सप्तम राहु अपने तथा स्त्रीके स्वास्थ्यके लिए नेष्ट फलप्रद है। २४ अगस्तसे २६ अगस्तके बीचका समय मनकी स्थितिको ढांवाडोल बना देगा। अस्थिरता उद्विग्नता एवं व्यग्रताके कारण बड़े अनिश्चय एवं द्विविधाकी स्थिति रहेगी। घरमें और बाहर सभी स्थानों पर कलहकी स्थिति बनेगी। अगस्तके उत्तरार्धमें ही यात्राकी योजना भी संभव है—जिससे कदाचित् कुछ लाभ भी हो। ६ सितम्बरके बाद पांचवे मंगल महा अनिष्ट प्रद है—संतानको रोग अथवा महाभय हो सकता है।

मीन

श्रावण मासका आरम्भ कष्टप्रद स्थितिसे होता है। क्योंकि दसवें शनि गुरु, दूसरे मंगल एवं चौथे सूर्य देव विराजमान हैं। किन्तु २४ जुलाई से मंगल तीसरे आ जाता है, यह पराक्रमकी वृद्धि व्यापारादिमें लाभ एवं यश देने वाला है। १७ अगस्तके बाद छठे सूर्य शत्रु पथ पर विजय एवं राजपक्षसे सम्मान दिलाने वाला है। २४ अगस्तसे छठे स्थानमें सूर्य, बुध एवं राहु एक साथ रहते हैं। यह समय व्यापारियोंके लिए उत्तम है। किन्तु सितम्बरके उत्तरार्द्धमें सूर्य, बुध, शुक्रादि ग्रह सप्तममें आकर चित्त में चिंता उत्पन्न करेंगे। यात्रा आदिसे कष्ट भी संभव है तथा स्त्री पुत्रका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा। ६ दिसम्बर के बाद चौथे मंगलकी स्थिति चिंताजनक है। यह गृह-कलह कराने वाला एवं आन्तरिक स्थितिको खोखला बनाने वाला है।

—

* त्रैमासिक चांस-चांद्रिका *

रुई, चांदी, सोना, तिलहन, शेयर, जूट आदिका बाजार भविष्य

[लेखक श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्यौतिषाचार्य्य, मुरार (म० प्र०)]

वायदा-बाजारमें वस्तु मात्रकी जनरल लाइन तथा लम्बी रुखी चांसोंकी भावी अगाही।

श्रावण मासारम्भ ता० ८ जुलाईको मध्य रात्रि समय १२ बजकर ३४ मिनट स्टैं० टा० से प्रारम्भ हो रहा है। ग्रहयोग शु० ४ अंशकी दूरी पर सूर्यसे अस्त हैं, मेष राशि का मंगल-शनि व गुरुसे नवम पंचम योग कर रहा है, विशेष योग व्यापार चिन्तामणिके पृष्ठ २३७ पर लिखा हुआ प्रबल तेजीका समर्थन करता है। योग इस प्रकार है कि सूर्यसे अस्त होकर शुक्र ४ से ८ अंश तक दीप्तांशमें हो तो सफेद वस्तु रुई जरीला, सर्व प्रकारके वस्त्र, सूत व सूतकी बनी हुई वस्तुओंमें चालू तेजीको विशेष बल मिलता है। जब भी यह योग बना है रुईमें ७०) ८०) टके, चांदीमें १०) टके, सुवर्णमें ७) टकेकी सचोट तेजी बनी है। सन् १९४२ से सन् १९५९ ई० तक अपने अनुभवके निर्णयानुसार इस योगमें रुई, चांदी, सुवर्ण इत्यादि पर अच्छी तेजी बनी हैं। यह तेजीका पीरियड २१ दिन व २४ दिन का होगा। दृश्य गणितानुसार ता० ११ जुलाईसे २९ जुलाई तक रुई जरीला वायदा मार्च १९६१ का २५) ३०) टके नीचा खुलकर १०-१५ दिनके अन्दर ही ग्रहयोग एवं मिल वालोंकी खरीदसे तेजीका रंग आजायगा।

खुला चांस—ता० ११ को २॥ बजे तथा ता० १४ को १ बजे खरीदो। ता० २८ के बन्द बाजारोंमें ३०) ४०) टके तेजी आ जायगी, बिना जोखमके व्यापारी ता० १४ को ४ बजे १५ दिनकी तेजीयां लगाकर मनमाना धन कमावें। कपड़ा सूती व गर्मके भावोंमें जुलाईमें तेजी, अगस्त मंदा, सितम्बर अक्तूबर तेजीमें जायगा। सूतके भावोंमें पर्याप्त तेजी रहेगी। कपड़े वालोंको स्टाक १५ अगस्तको माल खरीदनेके आर्डर देनेवाले अक्टूबरमें अच्छा लाभ उठा जायेंगे। रुई, चांदी, सोनेके व्यापारी नीचे लिखी लाईनोंका अनुकरण करें।

ता० ११ जुलाईको २॥ बजे चांदी व रुई खरीदें।

ता० १५ जुलाईको रुई चांदीमें जोटा लगावें।

ता० २२ जुलाईको २॥ दिनकी मंदी लगावें।

ता० २५ जुलाईको ५ दिनकी तेजी चांदी, रुईमें जोटा लगाकर भाग्य अजमायें नजराने फल जायेंगे।

ता० ३ अगस्तको चांदी, रुईमें मन्दीका बोलबाला। ७ दिनकी मंदियाँ लगाकर अपनी गरीबी दूर करके सुखी बनो। ता० ८ अगस्तको २४ घण्टेकी लाईन चांदीमें ३) रुईमें १५) अरंडी ३॥), मूंगफली ५), आर्डनरीमें ४) टकेकी घटबढ़, ता० १२ अगस्तको ४ बजे २॥ दिनकी तेजीकी पक्की लाइन। ता० २० अगस्तको ४ बजे ३॥ दिनकी मंदीकी इकतरफा लाइन।

स्पेशल गोल्डन चांस

९ दिनमें बाजारोंमें तूफानी तेजी मन्दी शीर्षक क्लेम। ता० ३० को ४ बजे साप्ताहिक तेजी मंदीके नजराने लगाकर अनायास धन प्राप्ति वायदेके व्यापारसे करें। रुईमें २०), चांदीमें ७), सोनेमें ५), अरंडीमें ६), मूंगफलीमें ८), आर्डनरीमें १०), इण्डियन आयरनमें २), जूट बीटुअलमें २०) की इकतरफा लाईन बनेगी। बिना जोखमके व्यापारी साप्ताहिक तेजी मंदी लगाकर लाभ उठावें।

गलेसे भी नीचे नहीं उतरी। और चरणामृत हल्लकसे नीचे उतर गया। इस प्रकार केवल चरणामृत मात्रसे ही बालक ठीक हो गया। ज्येष्ठ कृष्णा ३० (अमावास्या) को यह कुम्हार सपरिवार श्रीचारभुजाजी आया और अपनी 'मानताको' (अभिलाषा) को पूर्ण किया और प्रभुको गद्‌गद् हो दंडवत् की और अपने मुँहसे हृदय विदारक, करुणाजनक शब्दोंमें उपरोक्त घटनाका वर्णन किया। बोलो श्री चारभुजा नाथ व उनके प्रिय भक्तोंकी जय।

ता० १२ सितम्बरसे जनरल लाइन वस्तु मात्र पर तेजी की लम्बी रुखी लाईन बनने लगेगी, जो वस्तु मंदी हो उसे तत्काल खरीदो। अक्तूबरमें अच्छा लाभ हो जायगा।

साप्ताहिक—तेजी मंदी

(१) प्रथम सप्ताह—ता० ६ जुलाईसे १६ तक। यह सप्ताह दुतर्फा घटबढ़का रहेगा। ता० ८ को बाजार खुलते ही बेचो या ४ बजे २४ घण्टेकी मन्दी नजराने लगाकर उसके पेटे लेवाण करके ता० १३ के बन्द बाजारमें लाभ लें।

खुलासा—ता० ११ को २ बजे रुई, चांदी, सोना, अरंडी, मूंगफली, बिनौला, आर्डनरी, बम्बई मार्केटमें, जूट, बीटुअल, इन्डियन आयरन कलकत्ता मार्केटमें, सरसों, गुड़ दिल्ली मार्केटमें तेजीके रियेक्शन ता० १३ के ४ बजे तक नफा लेकर बेचान करें, ता० १६ के बन्द बाजारों में दोतरफा लाभ रहेगा।

(२) दूसरा सप्ताह—ता० १७ से २४ जुलाई तक। यह सप्ताह चांदी, सोना, रुईके बाजारोंमें तेजीकारक है। जूट, बोरा, हैसीयन, अरंडी, सरसों, मूंगफली, अलसी, गुड़में मंदी। सावधान—जिन वस्तुओंमें तेजी लिखी हैं उन्हें खरीदो, जिनमें मंदी हो उन्हें बेचें।

(३) तीसरा सप्ताह—ता० २५ जुलाईसे ३१ तक। इस सप्ताहमें जोरदार हलचल होगी। बाजार कलकत्ता, हापुड़, दिल्लीके चेम्बरोंमें जोरदार तूफानी तेजी मंदी चलेगी। यह चांस विदेशी वातावरणके कारण बाजार नैय्या की तरह डांवां डोल रहेगा। ता० २५ को खुलते बाजार, सोना, चांदी, रुई खरीदो। ता० ३० के बन्द बाजारोंमें लाभ उठावें। दिल्ली मार्केटमें ४८ घण्टेका चांस सरसों व गुड़में जोरदार चलेगा। ता० २५ को २ बजे खरीदो, ता० २७ को ४ बजे डबल बेचो, ता० ३० के बन्द बाजारोंमें दोतरफा लाभ सामने होगा। कलकत्ता मार्केटमें ता० २५ से ३० तक जूटमें २) बोरा वी टुअलमें ८) की मंदी तीन दिनकी ग्रह चाल दिखा रही है। व्यापारियोंके लिये यह सप्ताह सुवर्ण सद्रश होगा।

(४) चौथा सप्ताह—ता० १ से ८ अगस्त तक। इस सप्ताहमें इकतरफा मंदी चलेगी। ता० २ को ४ बजे चांदी, सोना, रुई, अरंडी, मूंगफली बेचो। ता० ८ के बन्द बाजारों में लाभ हो जायगा। दिल्ली मार्केटमें सरसों, गुड़, तेल मूंगफलीमें मंदी, ता० ४ को खुलते बाजार बेचो, ता० ७ तक मंदी। कलकत्ता मार्केटमें जूट, जूट बीटुयल बोरामें तूफानी मंदी ४ दिनमें ५) ६) टके निकल जायेंगे। ता० ७ को ४ बजे बेचकर ता० ६ के बन्द बाजारोंमें नफेका सुधार करें। बिना जोखमके व्यापारी ता० २ को ४ बजे ७ दिनकी मंदियाँ लगावें तथा दोनों तरफकी गलियाँ भी फल जावेंगी।

(५) पांचवां सप्ताह—ता० ६ से १६ तक। इस सप्ताहमें बाजार दोनों तरफ चलेगा। ता० ६ से १२ तक मन्दी। ता० १२ से १६ तक तेजी, घटे भावोंमें यानि जो वस्तु मंदी हो उसे खरीदो और जो वस्तु तेजी में हो उसे बेचो। दोनों लाइनोंसे लाभ होगा। सावधान—तेजी के व्यापार में उलझ जाना ठीक नहीं है, बराबर रियक्शनों पर ध्यान दो।

(६) छठा सप्ताह—ता० १७ से २४ अगस्त। इस सप्ताहमें तूफानी तेजी मन्दी चलेगी। गुड़, सरसों, अलसी, अरंडी में मंदी। चांदी, सोना, रुई जरीला आर्डनरी शेयर, हल्दी, तेल मूंगफली के व्यापार में इकतरफा तेजी रहेगी। घटे भावोंमें खरीदना ही चांस है। ता० १७ को २ बजे खरीदो। ता० १६ को ४ बजे नफा लेकर बेचो, ता० २४ तक मनमाना लाभ होगा। सावधान—ता० २१, २२ के बाजारों पर ध्यान देना बाजार की चाल मिलाते रहें।

(७) सातवां सप्ताह—ता० २५से ३१ अगस्त। यह सप्ताह इकतरफा तूफानी मंदीका है। ता० २५ खुलते बाजार चांदी, सोना, रुई, अरण्डी, मूंगफली, तेल मूंगफली, बेचो। ता० ३० के बन्द बाजारोंमें लाभ उठावें। बिना जोखम के व्यापारी ता० २५ को ४ बजे ७ दिन, ४८ घण्टेकी मंदी लगाकर व्यापार करें।

(८) आठवां सप्ताह—ता० १ से ८ सितम्बर तक। इस सप्ताहमें बाजारोंमें तेजी आवेगी। ता० १ को २ बजे चांदी, सोना, रुई खरीदो, ता० ७ के बन्द बाजारोंमें लाभ लो। सरसों, गुड़, तेल मूंगफलीकी खरीद करो, ता० २ से ५ तक तेजी फिर मंदी। कलकत्ता मार्केटमें जूट बीटुअलमें फिरसे तेजी ता० १ को ३ बजे खरीद करके ता० ८ तक लाभ उठावें।

त्रैमासिक वायदा बाजार भविष्य

७ जुलाईसे ५ अक्तूबर १९६० तक

[लेखक—श्री पं० हंसराज शर्मा ज्यौतिषी, सिविल लाईन, लुधियाना]

ग्रहस्थिति

ग्रहोंकी विशेषता यह है कि बुध जो इस समय कर्क राशिमें चल रहा है और सूर्य मिथुन राशिमें चल रहा है, १६ जुलाईको जब सूर्य कर्कमें आयेगा तो दो दिन पश्चात् ही बुध अपने घर मिथुनमें लौट आयेगा। १७ जुलाईको प्रातः ही सूर्य बुधकी युति है जो इनफीरियर (Inferior) है। ७ जुलाई को सूर्य शनिकी प्रति युति (Opposion), ११ जुलाईको प्रातः मंगल शनि नवपंचम, १३ जुलाईको बुध शुक्रकी युति, २१ जुलाईको मंगल बुध त्रिरेकादश, ३१ जुलाईको पृथ्वी नैपच्यून केन्द्र, १ अगस्तको शुक्र हर्षल की युति, दूसरे दिन बुध शुक्रकी युति, १२ अगस्तको पृथ्वी बुध केन्द्र, १४ अगस्तको सूर्य हर्षलकी युति (Superior), १६ अगस्त सूर्य गुरु नवपंचम (Trine), ३० अगस्तको सूर्य बुधकी भेदयुति, १० सितम्बर मंगल गुरुकी प्रतियुति, १२ सितम्बर शुक्र शनि केन्द्र, १७ सितम्बर सूर्य गुरु केन्द्र, १९ को बुध शनि केन्द्र, ३० सितम्बर को पृथ्वी बृहस्पति केन्द्र, ३ अक्तूबरको शुक्र नेपच्यूनकी युति और ५ अक्तूबरको सूर्य शनि केन्द्रयोग निश्चय ही वायदा बाजारमें विशेष प्रभाव करनेवाले हैं, और दैनिक योग में केन्द्र, ट्राईन, युति, त्रिरेकादश, षडष्टक आदि और इनका चन्द्रमासे परस्पर सम्बन्ध भी ध्यानमें रखना उचित है।

इसके अतिरिक्त इस अवधिमें दो ग्रहण भी हैं, चन्द्रमा का ग्रहण ५ सितम्बरको और सूर्यग्रहण २० सितम्बरको, चन्द्रमाका ग्रहण पूर्ण होगा परन्तु यह भारतके केवल पूर्वी भागमें ही दिखाई देगा और सूर्य ग्रहण तो भारतमें कहीं भी दिखाई नहीं देगा।

मार्केट पर प्रभाव

जुलाईमें शेयर बाजारमें किसी भी समय काफी तेजी होगी, चने, मटरा, सरसों, तेल तथा चांदी आदिमें भाव काफी चलेंगे और ११ जुलाईके पश्चात् तो आशासे अधिक चलेंगे, इस अवधिमें बहुतसी वस्तुओंका संग्रह करनेसे चार माससें साठ प्रतिशतके लगभग लाभ होगा, परन्तु ज्वार, बाजरा, मक्की, सोया, सौंफ, सन, सूत तथा बारदानाके जो भाव जुलाई मासमें ऊंचेमें बनेंगे वह फिर शीघ्र बननेकी आशा नहीं। इस प्रकार इन वस्तुओंके स्टाकवाले व्यापारियों को विशेष सावधान रहना होगा।

वायदा बाजार

यह समय लम्बी लाइनका काम करनेवालोंके लिये सर्वश्रेष्ठ रहेगा, इसमें कुछ वस्तुओंके भाव पृथक्-पृथक् भी चलेंगे, जैसे सरसोंमें तेजी तो गुड़में मन्दा, सोनेमें तेजी तो चांदीमें मन्दा भी चलेगा। गुड़ फालगुनमें ५ जुलाईसे तेजी की लाईन बनेगी, जो १६ जुलाई तक चलेगी, परन्तु इसमें ध्यान रखें कि ४ जुलाईका खुलतेका भाव ही विशेष है, यदि इससे नीचे जावे तो ७ जुलाई तक रुक जाना उचित है, इसमें लगभग २।) रु० या २॥।) रु० की सीधी लाईन

---

(९) नवम सप्ताह—ता० ९ से १६ सितम्बर तक। इस सप्ताहमें घटाबढ़ी साधारण होकर रुख तेजीका रहेगा। घटबढ़के दिनोंमें तेजी खावें, मंदी लगावें। साधारण उलट-फेरसे व्यापारी शंकित रहेंगे।

(१०) दशवाँ ११वाँ सप्ताह—ता० १७ सित.से ४ अक्टू. तक। यह सप्ताह तूफानी तेजीका है। ता० १९ को २॥ बजे चांदी, सोना, रुई, अलसी, अरंडी, मूंगफली, आर्डनरी, गुड़, सरसों, इण्डियन आयरन, जूट, बोरा बीटुअल खरीदो। ता० ४ अक्टूबर तक अच्छी तेजीमें लाभ उठावें। बिना जोखमके व्यापारी ता० १९ को ४ बजे १५ दिनकी तेजियां लगाकर व्यापार करें।

तेजीकी बनेगी, इसमें ऐसा भी प्रतीत होता है कि भाव आशासे अधिक चलते हैं और ६०-७० पैसे तक भी। इसमें १४ जुलाई तक तेजी रहे तो १५ जुलाईको काफी मन्दा आयेगा, १५ से २२ जुलाई मन्दा रहकर फिर तेजी उठेगी। ४ अगस्तको फिर भाव काफी चलेगा, ५ अगस्तसे जो लाईन बनेगी वह २८ अगस्त तक सीधी चलेगी, यहांसे मन्देकी लाईन बनेगी और १५ सितम्बर तक चलेगी, और १६ सितम्बरसे बनी लाईन ५ अक्तूबर तक चलेगी।

इस प्रकार सोना वायदामें २३ जुलाई तक दोतरफामें ही कमीवेशी होगी, यहांसे इसमें विशेष तेजी चलेगी जो ८ सितम्बर तक रहेगी, परन्तु इसमें २८ अगस्तसे ही दोतरफामें पड़ जायेगी, उसके पश्चात् मन्दा शुरू होगा, जो केवल २१ सितम्बर तक ही रहेगा, फिर २२ सितम्बरसे धीरे-धीरे तेजी बनेगी। परन्तु चांदीकी लाईन इसके साथ चलनेकी अपेक्षा कुछ इस प्रकार चलेगी, ६ जुलाईसे ही तेजी चलेगी जो केवल ६ दिन तक रहेगी, उसके पश्चात् ४ अगस्त तक दोतरफा रहकर ४ अगस्तसे २८ अगस्त तक विशेष तेजी चलेगी, २६ अगस्तसे १५ सितम्बर तक जोरदार मन्दी रहेगी, और २१ सितम्बरसे सीधी १०) रु० से १६) रु० तक या इससे भी अधिक तेजी चलेगी।

तेल मूंगफली, अरण्डा, तुवर, सरसों आदिमें जो तेजीकी लाईन चल रही है इसमें केवल इतना ध्यान रखें कि २ जुलाईका बन्द बाजार या ४ जुलाईका खुलते बाजार का भाव ध्यानमें रखें इससे सीधी लाईन आगे भी तेजी की ही चलेगी, २७ जुलाईको ऊंचा भाव बने तो यहां इसी दिनका बन्द बाजारका भाव मुख्य रखकर यहां बिकवाली करना उचित रहेगा, यहां ८ अगस्तको खुलते बाजारके भाव का ध्यान रखें अन्यथा २३ अगस्त तक नीचेका भाव बनेगा, २८ अगस्तसे जोरदार तेजी १५ सितम्बर तक चलेगी, उसके पश्चात् २१ सितम्बरसे भाव फिर धीरे-धीरे चलने लगेंगे।

इण्डियन आयरन तथा शेयर बाजारके लिये विशेष लम्बी लाईनमें न पड़कर ऊपर दी हुई लाईनोंके अनुसार ही ध्यान रखें।

विशेष दिन

इस अवधिमें नीचे लिखी तिथियोंमें तेजी मन्दी लगाने वाले अच्छा लाभ उठा सकेंगे—

जुलाईमें ११, १५, १६, २०, २२, २३, २६, ३०, ३१ के दिन हैं।

अगस्तमें ६, १०, १६, १७, २०, २२, २६, ३१ के दिन हैं।

सितम्बरमें १०, १३, १४, १७, १६, २७, ३० और ४ अक्तूबरके दिन भी अच्छे रहेंगे।

नोट—मार्केट विपरीत चलने पर या तो सौदा तुरन्त काट दें या पत्र या तार द्वारा परामर्श ले लेवें, परन्तु रिस्क न बढ़ावें, और लाभमें आया सौदा शीघ्र न काटकर दी गई तिथियोंके अनुसार ही काम करें। यह ज्ञात करनेके लिये कि कितना मन्दा या कितनी तेजी होगी हमारे स्पेशल चांस मंगावें।

रुई चांदी सोना की—

❀ त्रैमासिक अनुभूत रिपोर्ट *

[ले०—ज्यो० भू० दै० र० श्री पं० गिरिधारीलाल शर्मा, रामगढ़, जयपुर]

(१) प्रथम सप्ताह—

ता० ८ जुलाईसे १६ तक बढ़े भाव बेचके काम करो, रुई ७) से १०) टका चांदीमें २) २॥) टका मंदीकी संभावना है। ता० १०-११ में अवश्य मंदी, ता० १२-१३-१४ में दो दिन अचूक मंदी।

(२) दूसरा सप्ताह—

ता० १६ से १८ जुलाईके २ बजे तक तेजी। ता० १६ से २३ तक चांदी सोनामें मंदी नहीं होगी। रुईमें घटबढ़से मंदी होके तेजी होगी। ता० २२-२३ दोतरफा लगानेका दिन है।

(३) तीसरा सप्ताह—

ता० २४ जुलाईसे सोना, रुई, लाल वस्त्र, पंचरंगा वस्त्र, हरेक रंग खरीदने वाला कभी घाटेमें नहीं रहेगा।

(४) चौथा सप्ताह—

ता० १ से ७ अग. तक कोई खास मंदीकी संभावना नहीं है, हो सकता है रुई घटके बढ़े, परन्तु मंदीमें घबराना नहीं, मंदी ठहरेगी नहीं। मंदी होगी तो ता० ४-५ में होगी। और तेज है। (नोट)—ता० २६ जुलाईको चांदी सोना तेज रहे तो अचूक तेजी होगी।

(५) पांचवां सप्ताह—

ता० ८ से १४ अगस्त तक रुई शेयर वस्त्रमें अचूक तेजी, सोना चांदीमें ता० ११ की सायंकालसे मंदी होगी। वर्षाकी धूम रहेगी। यहाँ पर ता० ११ को चावल तमाखू खरीदना अच्छा लाभकारक है।

(६) छठा सप्ताह—

ता० १५ से २२ अगस्त तक तैलवानेकी वस्तुमें बहुत तेजी, जैसे अरंडा सींगदाना सरसों अलसी अच्छी तेज। ता० १६ की सायंकाल खरीदो, ता० २० तक नफा लेलो, रुई चांदी भी मंदी नहीं होगी, परन्तु घटबढ़ होगी। ता० २०-२२ को नजराना लगाना अच्छा है।

(७) सातवाँ सप्ताह—

ता० २३ से २७ अगस्त तक अचूक तेजी। ता० २८ से रुई मंदी, सोना, चांदीमें घटबढ़ ३१ तक, ता० ३०-३१ नजराना लगावें।

(८) आठवाँ सप्ताह—

ता० १ से ५ तक साधारण तेजी रहेगी। ता० १-३-५ में अवश्य तेजी।

(९) नौवाँ सप्ताह—

ता० ६ से १३ सितम्बर तक चांदी रुईमें घटबढ़से मंदी। सोनामें तेजी, १२ से सोनामें अचूक तेजी। ता० ६ मंदा, ७ तेजी, ८ मंदी ९ तेजी। ता० १० को दोतर्फा लगावें।

(१०) दशवां सप्ताह—

ता० १४ से २० सितम्बर तक रुई चांदी अवश्य मंदी होगी, चांदी मंदी, रुई मंदी होकर तेज हो जायेगी। ता० १४ को १ हफ्तेका रुईका जोटा लगावें, १०-१५ के फेरसे। निश्चय है ता० १५ को न्यूयार्क अंक ३९-१९ या १५ आवेगा।

(११) ग्यारहवाँ सप्ताह—

ता० २१ सितम्बरसे ४ अक्टूबर तक १ दिन मंदी, दूसरे दिन तेजी, तेजी हो तो मंदी ऐसे करते रहो, बाजार घटबढ़का है। यहां उत्पात और घटबढ़ ज्यादा है।

—

चने, रुई, पाट, हैसियन, बारदाना, कालीमिर्च आदि की—

त्रैमासिक व्यापार-रुख

[लेखक—पं० श्रीगणेश शंकर दैवज्ञ, रमलाचार्य, जयपुर]

जुलाई मासके अचूक योग

(१) ता० ६ जुलाईको आये उछाले बेचाण करो, ता० १२ को रात तक मामूली मंदा, चनेमें ॥।) रुईमें ५) ७) पाट हैसियनमें २॥) ३), बारदानामें १॥) २) काली मिर्चमें ८) १०) के करीब टूटेंगे। सूर्य राहु त्रिएकादश योग है।

(२) ता० १३ को भारी गन्दी है, चने ॥) ॥।) रुई १०) १२) काली मिर्च १५) २०), पाट हैसियन ४) ५) बारदाना २) ३) टूट जायेगा। बुध शुक्र युति है।

(३) ता० १४, १५ इन दोनों दिनोंमें बाजार दुतर्फा चलता हुआ भी मंदीकी तरफ झुकेगा। सूर्य शुक्र परेलल है।

(४) ता० १६ को प्रातः से ता० १८ को रात तक रुई ८) १०) पाट हैसियन ३॥) ४) चने ॥) बारदाना १।) १॥) कालीमिर्च १२) १५) तेज हो जायेंगे। शुक्र प्लूटो समानान्तर है।

(५) ता० १६ को प्रातः से ता० २१ को सायं ४ बजे तक बाजार दोनों तरफ चलता समान या कुछ तेजी भी आये तो खास बात नहीं है। सूर्य गुरु षडष्टक समान भाव बनाये रखते हैं।

(६) ता० २१ को सायं ४ बजे से ता० २६ को रात तक रुई कालीमिर्च १५) २०), पाट हैसियन ४) ५) बारदाना २॥) ३) मंदा रहेगा। शुक्र नेपच्यून केन्द्र मंदी बाजारोंमें रखता है। चने ॥।) १) मंदे। मंगल बुध त्रिए-कादश योग है।

(७) ता० २७ को प्रातःसे रात तक रुई ५) ७) काली मिर्च ८) १०) पाट हैसियन २) ३), बारदाना १) १॥) तेज रहेगा। ता० २८, २६ को दुतर्फा। ता० २६ को सायं ४ बजेसे ता० ३० को रात तक अच्छी तेजी रहेगी।

अगस्त १६६०

रुई, पाट, हैसियन, कालीमिर्च चने, हल्दी की तेजी मंदी।

(१) ता० १ को प्रथम तेजी में खुलकर दुतर्फा चलते ता० ३ को रात तक तेजी, रुई ५) ७) पाट हैसियन २) २॥) बारदाना १) १।) कालीमिर्च १०) १२) चने ॥) ॥।) की तेजी पकड़ लें। बुध हर्षल द्विर्द्वादश योग है।

(२) ता० ४ प्रातः खुलते बाजारसे ता० ६ को रात तक भारी मंदी है। रुई १५) २०) कालीमिर्च २५) ३०) पाट हैसियन २॥) ३) बारदाना १॥) २) चने ॥) ॥।) की मंदी पकड़ेंगे। शुक्र गुरु वक्रीसे त्रिकोण योग चालू हैं।

(३) ता० ६ को रात ६॥ बजे बेचो, ता० ६ को दिन ३ बजे तक योग मंदी के हैं धीरे २ बाजार चलते रहेंगे, रुई ५) ७) कालीमिर्च ८) १०) पाट हैसियन बारदाना १।) २॥), चने।) ।=) मंदे ही रहेंगे, सूर्य राहु द्विर्द्वादश योग चालू है।

(४) ता० ६ को दिन ३ बजे से ता० ११ को रात तक मामूली घटा बढ़ीसे मामूली मंदा रहेगा रुई ३) ४) काली मिर्च ५) ७) पाट हैसियन १) १॥) बारदाना ॥) ॥।) चना।) ।=) मंदा आ जायेगा। शुक्र प्लूटो समा-नान्तर योग है।

(५) ता० १२ को प्रातःसे १३ को रात तक समानसे कुछ तेजी पकड़ेगा। मामूली तेजी है। मंगल नैपच्यून षडष्टक योग तेजीका उछाला खाता है।

(६) ता० १५ को प्रातःसे ता० १७ को सायं ४ बजे तक रुई ८) १०) कालीमिर्च १५) २०) पाट हैसियन २॥) ३) बारदाना १।) १॥) चना॥) ॥।) की मंदी

आ जाये तो बड़ी बात नहीं है। बुध शुक्र द्विर्द्वादश चांदी भी मंदी करता है।

(७) ता० १७ को सायं ५ बजे से ता० १६ को रात तक अचानक भारी तेजी। रुई १०) १२) कालीमिर्च १५) २०) पाट हैसियन ३) ४) बारदाना १॥) २) चना ॥।) १) बढ़ेगा, सूर्यका गुरु वक्रसे त्रिकोण योग चालू है।

(८) ता० २० प्रातः खुलते बाजार वेचो, ता० २२ को रात तक मंदी रुई ५) ७) कालीमिर्च ८) १०) पाट हैसियन १॥) २) बारदाना १) १।) चने ।=) ॥) के करीब टूट जायेंगे। गुरु मार्गी हो रहा है।

(६) ता० २३ को प्रातःसे २५ को रात तक बाजार दुतर्फा चलते समान पड़े रहेंगे। बुध हर्षल युति कुछ तेजी की तरफ ले जानेका प्रयत्न करेंगी।

(१०) ता० २५ को रात्रि ६ बजे से ता० २६ को दिन भर एकतर्फा तेजी चलेगी।

(११) ता० २७ प्रातःसे रात तक दोनों तरफ चलते साधारण तेज, हर घटे भाव खरीद उछालेमें नफा ले लें। मंगल राहु केन्द्र योग है।

(१२) ता० २६ को प्रातः से रात तक तेजी ऊपर लिखे सब बाजारोंमें आयेगी। आंकड़ा भी अच्छा है गत योग चालू हैं।

(१३) ता० ३० प्रातःसे रात तक मंदी खेलने वालोंकी जीत है। रुई ४) ६) काली मिर्च ८) १०) पाट हैसियन २) २॥) बारदाना १) १।) चना ।) ।=) मंदा है।

(१४) ता० ३१ प्रातःसे रात तक तेजी खेलने वालों की जीत है।

नोट—ता० २३ से २६ तक तेजी ता० ३० को मंदी व ता० ३१ को तेजी रहेगी। यहाँ रुई १०) १२) काली मिर्च १५) २०) पाट हैसियन २॥) ३) बारदाना १॥) २) चना ॥) ॥।) तक तेज बन जायेंगे।

सितम्बर १६६०

रुई, पाट, हैसियन, बारदाना, कालीमिर्च चनाकी तेजी मंदी।

(१) ता० १ प्रातः से ता० ५ को सायं काल ४ बजे तक रुई १०) १५) कालीमिर्च २५) ३०) पाट हैसियन ३) ४) बारदाना २) २॥) चना ।=) ॥) की तेजी पकड़ेगा। बुध शनि त्रिकोण योग तेजी करता है।

(२) ता० ५ को सायं ४ बजेसे ता० ७ को रात तक उछल उछलकर मंदी आयेगी। आये उछाले बेचो और घटने पर नफा भी लेते रहो। बुध राहु युति मंदी लाती है।

(३) ता० ८ को प्रातः से ता० १० को रात तक समान भाव पड़े रहेंगे या कुछ मंदी की तरफ भी झुक जाये तो बड़ी बात नहीं, कारण सूर्य राहुका युति योग समस्त बाजारों में अनेक बार मंदी लाया है।

(४) ता० १२ से १६ को मध्यान्ह १ बजे तक मामूली घटा-बढ़ीसे मामूली मंदी रहेगी। शुक्र राहु द्विर्द्वादश योग है।

(५) ता० १६ को मध्यान्ह १ बजेसे ता० २१ को रात तक बाजारमें एकतर्फा तेजी चलेगी। रुई १०) १२) कालीमिर्च २०) २५) पाट हैसियन २) ३) बारदाना १) १॥) चना ॥) ॥=) तक तेज हो जायेगा। गुरु मंगल समानान्तर योग तेजी करता है।

(६) ता० २२ प्रातःसे २६ को रात तक बाजार उछल उछल कर नीचे चले जायंगे। गत कलम नं० ५ में जितनी तेजी हो उतनी ही मंदी इस समय आ जायेगी। बुध राहु द्विर्द्वादश मंदी बना देता है।

(७) ता० २७ प्रातः से रात तक एकतर्फा तेजी करता है। बुध हर्शल त्रिएकादश योग तेजी वाला है।

(८) ता० २८ से ३० तक दोनों तरफ चलता हुआ बाजार तेजी पकड़े, यहां शुक्र नैपच्यून समानान्तर योग मामूली आंकड़े बनाता है।

अक्टूबर १६६०

(१) ता० १ प्रातःसे रात तक सर्व वस्तुओंमें तेजी है, आंकड़े अच्छे हैं, यहां शुक्र मंगल त्रिकोण तेजी करता है।

(२) ता० ३, ४ को फिर दुतर्फा चलते बाजार समान भाव पकड़े, शुक्र नेपच्यून युति है, खास तेजी मंदी नहीं लाती है।

(३) ता० ५ को मध्याह्न १॥ बजेसे ता० ७ को रात तक तेजी रुई ५) ८) कालीमिर्च १० १२) पाट हैसियत १॥) २) बारदाना ॥।) १) चना ।=) ॥) बढ़ेंगे। सूर्य शनि केन्द्र तेजी करता है। शेष फिर अगले नववर्षाङ्कमें।

ता० ६ जौलाईसे ६ अक्टूबर १६६० तक

तिलहन मात्र मूंगफली, अलसी, एरंडा, बिनौला, सरसों खोपरा, राई गुड़ सर्व प्रकार के शेयर मिल शेयर बैंक शेयर आदिकी तेजी मंदी।

ता० ६ से २२ जुलाई तक शनि मंगल त्रिकोण योग है, यह तेजी कारक है। ता० २६ तक बाजार मामूली तेजीकी तरफ ठहरे रहेंगे। ता० २६ को सायंसे बाजार लाइन बदल लेंगे, ता० ६ सितम्बर प्रातः तक मंदी अधिक तथा तेजी कम रहेगी। ता० ६ सितम्बर प्रातःसे २२ अप्रैल १६६१ तक मंगल मिथुन राशि पर ६ महीने ११ दिन रहेगा। यह उपरोक्त वस्तुओं पर भारी तेजी मंदी करेगा। जिसका खुलासा अगले अङ्कमें देंगे। वहां शनि गुरुसे प्रति युति ता० २ फरवरी तक बनाये रहेगा। अतः हर घटे भाव खरीदो, यह नीति श्रेष्ठ है।

जुलाईकी लाइन

(१) ता० ६ जुलाई प्रातःसे ता० १३ को ७॥ बजे रात तक तुला नवमांशमें शनि मंगल युति तथा गुरुसे प्रतियुति दोनों तरफ बाजार चलाता है। लेकिन ता० ६ से या १० से बुध वक्रसे शुक्रकी युति कर्क राशि पर है अतः यह मन्दी कर देती हैं। ता० ६ से ता० १५ तक आये उछाले बेचो, सरसों १।) १॥) गुड़ ॥) ॥।) आई-रन ॥) ॥=) मूंगफली एरंडा ५) ७) खोपरा राई सर्व प्रकारके शेयर मंदे रहेंगे। ता० १४ को दिन के २॥ बजेसे अचानक तेजीका उछाला आयेगा। यह तेजी ता० १८ को दिनके २ बजे तक बनी रहेगी। यहां सरसों ॥।) १) मूंगफली एरंडा ३) ४) या १०) ता० १८ को धन नवमांशमें आयेंगे। यह भी समय तेजीका ही रहेगा। बाजार दुतर्फा चलते तेज। हर घटे भाव खरीदो और नफा लेते रहें। ता० १८ को खरीदो, ता० २१ को सायं ४॥ बजे तक भारी तेजी रहेगी, सरसों १) १।) गुड़ ।) ॥।) मूंगफली एरंडा ८) १०) शेयर सर्व प्रकारके तथा राई खोपरा आदि वस्तुएं भी तेज रहेंगी। ता० २१ को सायं ५ बजेसे ता० २३ को रात्रि तक मंदा सरसों ।।) ॥=) गुड़ ।) ।=) मूंगफली ३) ४) शेयर आदि सर्व बस्तु मंदी रहेगी। ता० २५, २६ को समान भाव दुतर्फा मामूली घटा बढ़ीसे रहेंगे। ता० २७ को प्रातः से रात तक अच्छी तेजी तिलहन गुड़ शेयर किराणोंमें आयेगी, ता० २८ २६ दोनों दिन फिर मामूली घटा बढ़ीसे साधारण मंदा रहे। ता० २६ को सायं ५ बजे से ता० ३० को रात तक तेजी है।

अगस्त १६६० में तिलहन बाजार

(१) ता० १ को प्रातःसे रात तक मंदा। ता० २ को प्रातःसे ३ को रात तक तेज। ता० ४ को प्रातःसे ता० १२ को मध्यान्ह १२ बजे तक मूंगफली एरंडा ८) १०) चांदी बारदाना २॥) ३) सरसों अलसी १॥) १।) गुड़ राई खोपरा आइरन ।।) ॥।) आदि वस्तुओंमें मंदी चलेगी। ता० १२ को मध्यान्ह १ बजेसे ता० १६ को रात तक तेजी रहेगी। ता० १७ को दिन भर मंदीका झटका आकर सायंकाल ५ बजेसे ता० १६ को रात तक दुतर्फासे तेजी, मंदी कम, तथा तेजी अधिक रहेगी। लेकर बेचने वालोंको लाभ। ता० २० को प्रातःसे २२ को रात तक मंदी खेलना, ता० २३ को प्रातः से ता० २६ को सायं ४ बजे तक मामूली तेजीकी तरफ रहता हुआ ता० २६ को सायं ४ बजेसे रात तक घोर तेजी, आ जायेगी और ता० २७ को रात तक रहेगी। ता० २६ को दोनों तरफसे तेज, ता० ३० को मंदी। सायं ५ बजे तक रहेगी। ता० ३० को सायं ५ बजे से ता० ३१ को रात तक तेजी रहेगी।

सितम्बर १६६० में तिलहन बाजार

(१) ता० १ को प्रातःसे ५ को रात तक एकतर्फा तेजी रहेगी। ता० ६ से ता० ८ तक अच्छी घटा बढ़ीसे तेज रहेगा। ता० ६ को मामूली मंदी। ता० १० को प्रातः से रात तक मामूली तेजी। ता० १२ को प्रातः से रात तक मामूली मंदी। ता० १३ को प्रातः से रात तक तेजी। ता० १४ को प्रातःसे १७ तक मामूली घटा-बढ़ीमें समान भाव रहेंगे। ता० १६ को प्रातःसे २१ को रात तक अच्छी तेजी है। ता० २२ को प्रातःसे ता० २४ को सायं ४ बजे

ज्योतिषकी दृष्टिसे त्रैमासिक तेजी मंदी

[लेखक—ज्योतिर्भूषण श्री ओंकार दैवज्ञ, हापुड़]

श्रावण कृ० १ ता० ९ जुलाईसे आश्विन शु० १५ ता० ४ अक्टूबर १९६० ई० तक

'ज्योतिष्मती' का यह अङ्क ग्राहकोंको वर्षा ऋतुके मध्य हस्तगत होगा जहां कि आम साधारण जनसमुदाय ये आशा किया करता है, कि वर्षात अच्छी होगी तो वर्षाके प्रभावसे वस्तुओंकी मंदी आयेगी, पर ज्योतिषशास्त्र कदापि भी इस लोकोक्ति पर अवलम्बित नहीं होता, बल्कि यह शास्त्र विचित्र ही पथ प्रदर्शन किया करता है; और इसीलिये ज्योतिष-शास्त्रकी जन्मसे मृत्युपर्यन्त नितांत आवश्यकता होती चली आई है। अतएव वेद भगवान्‌की ये अद्भुत देन है जिसके बिना हम चक्षुविहीनसे रह जाते पर हमारे वेद भगवान्‌ने इसको पूर्ण सर्वाङ्गसे सुशोभित कर प्राणी मात्रकी बड़ी सेवा की है जिसको विद्वान् जनसमुदाय कदापि भूल नहीं सकता।

सं० २०१७ में वर्षा जब होगी तभी तेजी आयेगी। ये विचित्र बात हमें इस सम्वत्‌में ग्रह चालोंसे अनुभव हुई है जिसका फल हम पूर्ण रूपसे प्रकट कर रहे हैं। यह फल हमने कहीं भी नहीं लिखा है बल्कि 'ज्योतिष्मती' के लेख लिखते समय ही 'ज्योतिष्मती' ने यह मती अर्थात् बुद्धी दी है, क्योंकि यह शास्त्र नवीन खोजका विषय है।

श्रावणसे कुवार (आश्विन) तक इन तीन महीनोंकी अवधिमें ज्योतिष सिद्धान्तके नियमसे श्रवण वदी १ शनिवार तदनुसार ता० ९ जुलाई से १७ जुलाई श्रावण वदी ९ तक सुपीरियर लाइन रहने से मोटी मंदियां आयेंगी और व्यापारी चक्करमें पड़ेंगे कि न जाने मंदी और कितनी आयेगी, पर नहीं आप सावधान हो जाना क्योंकि शनिवारी कर्क संक्रान्तिमें श्रावण वदी ९ से ही इन्फीरियर लाइन तेजीकी पुष्टि करने लगेगी, पर जोरदार तेजी तभी आयेगी जबकि 'पश्चिमोदय शुक्र' श्रावण शुदी ५ पर हो जायेगा। स्थूल रूपसे श्रावण बदी ९ से तदनुसार ता० १७ जुलाई से ता० ३१ अगस्त भादों शुदी ९ वीं तक तेजीकी लाइन में अवश्यमेव तेजी आयेगी। जो वस्तु सुपीरियर लाईनमें अधिक मंदी थीं उनके भाव ऊंचे स्तर पर आयेंगे। यह लेख गुड़ अनाजों तिलहनों पर विशेष रूपसे है।

भादों शुदि दशमी तदनुसार ता० १ सितम्बरसे ता० ४ अक्टूबर आश्विन शुदि १५ तक सुपीरियर लाइन में मंदीका प्रभाव होगा पर शुद्ध लाईन चलने पर तेजी रहेगी। ज्यूं ही ५ सितम्बरको चन्द्रग्रहण होगा इसके बाद रुई में ४०) से ६०) तक मंदी एक ही हफ्ते में तथा १५ सितम्बरको मार्गी शनि होने पर मैटीरियल तथा तेल अलसी मूंगफलीमें पूर्व तेजी आकर भाव मंदे होंगे, पर ज्यों ही २६ सितम्बरको तुलाका बुध होगा तभी से १ तेजीका फोर्स सभी वस्तुओंमें आयेगा। इसलिये इस मंदीकी लाइनमें लास्टमें एक हफ्ता विपरीत तेजीका निकलेगा।

सोने का चांस मयधारणा भाव

हम इन उपरोक्त ३ महीनोंकी अवधिमें सोनेका भविष्य प्रकट करते हैं ताकि पाठकगण लाभ उठा सकें और ज्योतिष चमत्कारसे अवगत होवे यह हमारी भविष्यवाणी है कि जनरल रूपसे चांदी व सोनेमें इन उपरोक्त महीनोंमें

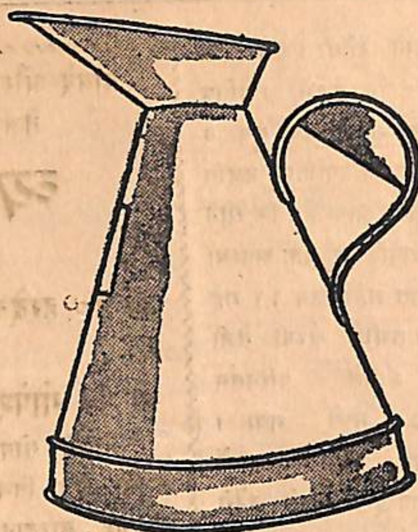
तक मंदी है। ता० २४ को सायं ४ बजे से २६ को रात तक दोनों तरफ चलते थोड़ा मंदा ही रहेगा। ता० २७ को प्रातः से रात तक मंदा उछल उछल कर आयेगा। ता० २८ को प्रातः से ३० तक साधारण तेजी बाजारोंमें आ जायेगी।।

अक्टूबर १९६० में तिलहन

ता० १ को प्रातः से ता० ३ को मध्यान्ह २॥ बजे तक तेजी, ता० ३ को मध्यान्ह २॥ बजे से ता० ४ को रात तक मन्दी है। ता० ५ को प्रातः से ता० १० को रात तक मामूली तेजी चलेगी। आगेका विचार ज्योतिष्मतीके अगले अङ्कमें देखना।

ता० १९ सितम्बर तक लाइन मंदेकी रहेगी। हम यहां अपने लेखमें सोनेका विशेष रूप से वर्णन करेंगे, ज्योतिष सिद्धान्तसे सोने पर राशि मेष, सिंह, मकर तथा सूर्य व गुरुका अधिकार होता है। इसलिये सायन ज्योतिष पद्धति अनुसार यह एक लम्बे अर्से बाद अवसर आया है, कि सोने की सायनसे मकर राशिमें सोनेका अधिपति गुरु वक्र अवस्था में २० अप्रैल से चल चुका है, पर गत मईमें जब ११ मई को सोनेकी राशि मेष पर मंगल आया तभीसे लम्बी तेजी समाप्तिका स्वरूप बनकर मंदीमें परिवर्तन हुई और १४१॥) से मार्केट नीचे गया। हमारा यह दृढ़ निश्चय है कि गुरुके मार्गी अवस्थामें पहुंचनेसे पहले भाव गिरेंगे। और भाव इस क्रम से टूटेंगे १४१॥) से १३६) और १३६ से टूटने पर १२७) तथा १२७) से टूटने पर १२३) तथा १२३) से टूटने पर ११९।) तथा ११९।) से टूटने पर ११३॥।) तथा ११३॥।) से टूटने पर १०७) रु० १०७) से टूटने पर १०२॥।=) ये भाव ही मंदीमें अन्तिम होगा। इस भावमें जो भी खरीद कर बैठ जायगा, मालामाल हो जायगा। इसी प्रकार गुड़ नीचेमें १२) रु० ४४ नये पैसे से टूटने पर १२) रु० १४ नये पैसे १२) रु० १४ नये पैसे से टूटने पर ११) रु० ६५ नये पैसे ११) रु० ६५ पैसासे टूटने पर ११) रु० ३८ पैसा, ११ रु० ३८ पैसा से टूटने पर ११) रु० १८ पैसा हापुड़के मार्केट में फागुन वायदेका भाव बनेगा। ये भाव हम गारण्टीसे लिखते हैं। जो भी खरीद कर बैठेगा गुड़में ४) मनका लाभ निश्चय उठायेगा। यहां हम अन्य वस्तुओंके भाव लेख विस्तार भयसे नहीं दे रहे हैं। हां जो व्यापारी भाई हमारी इस ज्योतिष्मतीके ग्राहक हैं वे हमारे कार्यालय से १०१ रु० फीसकी चौथाई दरसे सेफ चांस मय भावोंकी लिमिट के साथ मंगा सकते हैं। लाहा, हल्दी, मटर, चुन्नी, रुई, शेयर, अलसी, बिनौलाके चांस लम्बी धारणाके लेखकसे प्राप्त कर सकते हैं। हमारा तेजी मंदीका दिग्दर्शन ज्योतिष्मतीमें सायन पद्धतिके पंचाङ्ग पर अवलम्बित है। अतः व्यापारी ग्रहोंकी राशिके हवाले पर चौकन्ने न हों। विद्वान् वर्ग इस बातको जानते तथा मानते हैं।

(शेष पृष्ठ ७२ पर)



और अब
तरल पदार्थ मापने के
मेट्रिक पैमाने

तरल पदार्थ मापने के मेट्रिक पैमाने—लिटर—का प्रयोग अप्रैल, १९६० से शुरू हो गया है।
रंग-रोगन और पेट्रोल उद्योग ने मेट्रिक प्रणाली अपना ली है।
अब रंग-रोगन लिटरों के हिसाब से बिका करेगा और पेट्रोल का वितरण भी लिटरों के हिसाब से होगा।

परिवर्तन तालिका

१ गैलन = लगभग ४½ लिटर

१ लिटर = १,००० मिलिलिटर

तरल औंस	मिलिलिटर (मिलि०) (निकटतम मिलि० तक)
१	२८
२	५७
३	८५
४	११४
५ (=१ गिल)	१४२

गिल	मिलिलिटर (मिलि०) (निकटतम मिलिलिटर तक)
१	१४२
२	२८४
३	४२६
४ (=१ पिण्ट)	५६८

पिण्ट	लिटर (लि)	मिलिलिटर (निकटतम मिलि० तक)
१	...	५६८
२(=१ क्वार्ट)	१	१३६

क्वार्ट	लिटर	मिलिलिटर (निकटतम मिलि० तक)
१	१	१३६
२	२	२७३
३	३	४०९
४ (=१ गैलन)	४	५४६

मिलिलिटर	तरल औंस निकटतम ¼ (तरल औंस तक)
१०	¼
२०	¾
३०	१
४०	१½
५०	१¾
६०	२
७०	२½
८०	२¾
९०	३¼
१००	३½

मिलिलिटर	पिण्ट	गिल	तरल औंस (निकटतम ½ तरल औंस तक)
२००	–	१	२
३००	–	२	½
४००	–	२	४
५००	–	३	२½
६००	–	४	१
७००	१	०	४½
८००	१	१	३
९००	१	२	१½
१०००(=१ लिटर)	१	३	–

गैलन	लिटर	मिलिलिटर (निकटतम १० मिलि० तक)
१	४	५५०
२	९	९०
३	१३	६४०
४	१८	१८०
५	२२	७३०
६	२७	२८०
७	३१	८२०
८	३६	३७०
९	४०	९१०
१०	४५	४६०

गैलन	लिटर	मिलिलिटर (निकटतम १०० मिलि० तक)
२०	९०	९००
३०	१३६	४००
४०	१८१	८००
५०	२२७	३००
६०	२७२	८००
७०	३१८	२००
८०	३६३	७००
९०	४०९	१००
१००	४५४	६००

लिटर	गैलन	क्वार्ट	पिण्ट	गिल (निकटतम गिल तक)
१	–	–	१	३
२	–	१	१	२
३	–	२	१	१
४	–	३	१	–
५	१	–	–	३
६	१	१	–	२
७	१	२	–	१
८	१	३	–	–
९	१	३	१	३

लिटर	गैलन	क्वार्ट	पिण्ट (निकटतम पिण्ट तक)
१०	२	१	–
२०	४	१	१
३०	६	२	१
४०	८	३	–
५०	११	–	–
६०	१३	१	–
७०	१५	१	१
८०	१७	२	१
९०	१९	३	–
१००	२२	–	–

अपनाइये मेट्रिक प्रणाली

सरलता व एकरूपता के लिए

भारत सरकार द्वारा प्रसारित DA-59/577

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

जुलाई १९६० ई०

८ शुक्रवार—श्रीव्यास पूजा, गुरु-पूर्णिमा, सत्यव्रत।
९ शनिवार—हिंडोला प्रारम्भ।
११ सोमवार—श्रीगणेश ४ व्रत, चं. उ० २१।३६।
१६ शनिवार—कर्क संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल—
१९ मंगलवार—कामिका ११ व्रत। [दूसरे दिन
२० बुधवार—प्रदोष व्रत।
२३ शनिवार—हरियाली अमावस्या।
२४ रविवार—नक्त व्रतारम्भ, जैनानां पुरंदरव्रतारंभः।
२५ सोमवार—चन्द्रदर्शन मु० १५।
२६ मंगलवार—संधारा ३ स्वर्णगौरी व्रत।
२८ गुरुवार—नागपंचमी।
२९ शुक्रवार—कल्कि जयंती।
३० शनि—श्रीतुलसी जयन्ती
३१ रविवार—दुर्गा ८ मेला श्रीनयनादेवी चिंत्यपू०

अगस्त १९६० ई०

१ सोमवार—श्री लोकमान्य तिलक जयंती।
३ बुधवार—पुत्रदा एकादशी व्रत
४ बृहस्पतिवार—प्रदोष व्रत।
६ शनिवार—सत्यव्रत, पूर्णिमा।
७ रविवार—ऋषितर्पण, रक्षाबन्धन, श्रावणी।
९ मंगलवार—कज्जली तीज।
१० बुधवार—श्रीगणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय२१।४०।
१३ शनिवार—श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत स्मार्तानां चन्द्रोदय स्टे. टा. २३।४६।
१४ रविवार—आद्या महाकाली जयन्ती, मतान्तरेण श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत।
१५ सोमवार—भारतीय स्वतन्त्रता दिवस।
१६ मंगलवार—सिंह सक्रान्ति मु० ४५।
१८ गुरुवार—अजा ११ व्रत।
१९ शुक्रवार—प्रदोषव्रत।
२१ रविवार—पिठोरी अमा.।
२२ सोमवार—सोमवती अमावस्या कुशोत्पाटनी ३०।
२४ बुधवार—चन्द्रदर्शन मु० ४५।
२५ गुरुवार—हरितालिका ३ व्रत, श्रीवराह जयन्ती।
२६ शुक्रवार—श्रीगणेश ४ पत्थर चौथ चन्द्रदर्शन निषेध चन्द्रास्त स्टे. टा. २१।४२।
२७ शनिवार—ऋषि पंचमी, जैन संवत्सरी।
३० मंगलवार—श्री दधीचि जयन्ती।
३१ बुधवार—श्रीचन्द्रनवमी उदासीन संप्रदाय महोत्सव

सितम्बर १९६० ई०

ता० १ गुरुवार—पद्माएकादशी व्रत स्मा. जलझूलनी ११ मेला श्रीचारभुजा गढ़बोर (मेवाड़) वामनद्वादशी मेला—अम्बाला, पटियाला।
२ शुक्रवार—पद्मा ११ व्रतं वैष्णवानाम्।
३ शनिवार—शनिप्रदोषव्रत।
४ रविवार—सत्यव्रत अनन्त १४ व्रत।
५ सोमवार—प्रौष्ठपदी श्राद्ध।
६ मंगलवार—पितृपक्ष-महालयारंभ।
८ गुरुवार—श्रीगणेश ४ व्रत चं० उ०२१।६।
१६ शुक्रवार—इन्दिरा ११ व्रत कन्या संक्रान्तिः।
१७ शनिवार—सन्यासिनां श्राद्धम्।
१८ रविवार—प्रदोषव्रत, त्रयोदशी श्राद्ध।
१९ सोमवार—शस्त्राग्निविषादि हतानां श्राद्धम्।
२० मंगलवार—महालय श्राद्ध समाप्तिः।
२१ बुधवार—मातमहश्राद्ध शारद नवरात्रारम्भः।
२२ गुरुवार—चन्द्रदर्शन मु० ३० उत्तराष्ट गोत्रतिः
२७ मंगलवार—श्रीसरस्वती-आवाहन।
२८ बुधवार—श्री सरस्वती पूजन दुर्गाष्टमी महाष्टमी।
२९ गुरुवार—श्रीसरस्वती बलिदान।
३० शुक्रवार—श्रीसरस्वती विस० विजय१० दशहरा।

अक्टूबर १९६० ई०

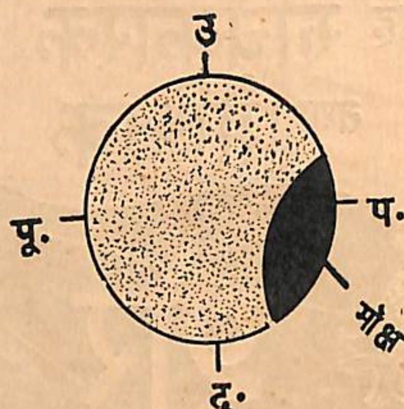
ता० १ शनिवार—पाशांकुशा ११ व्रत।
२ रविवार—प्रदोष व्रत, श्रीमहात्मा गांधी जयन्ती।
४ मंगलवार—शरत् पूर्णिमा, सत्यव्रत कोजगारी।

खग्रास चन्द्रग्रहण

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

भाद्रपद शु० १५ सोमवार ता० ५ सितम्बर १९६० (राष्ट्रिय मिति १४ भाद्रपद) को चन्द्रग्रहण होगा। परन्तु यह चन्द्रग्रहण दिल्ली, पंजाब, हिमाचलप्रदेश, काश्मीर, राजस्थान, बम्बई, सौराष्ट्र, पूना, उज्जैन, इन्दौर, रतलाम, अहमदाबाद, राजकोट, सूरत, बड़ौदा, सोलापुर, कोल्हापुर, बेलगांव, और नासिक आदिमें दिखाई नहीं देगा। यहां चन्द्रमाके उदय होनेसे पहले ही ग्रहण मोक्ष हो जायेगा अतः यहां ग्रहणका सूतक और पर्वकाल माननेकी आवश्यकता नहीं। ७८ रेखांशसे पूर्वकी ओर कुछ ग्रहण लगा हुआ चन्द्रमा उदय होगा और कुछ मिनटके पश्चात् मोक्ष हो जायेगा। सायंकाल ६ बजकर ३७ मिनट पर इस ग्रहण का मोक्ष काल है, अत: जहां ६-३७ से पहले सूर्यास्त होकर चन्द्रोदय हो जायेगा वहां मोक्ष होता हुआ थोड़ा ग्रहण दिखाई देगा। दिल्लीमें इस दिन सायंकाल ६-३८ पर चन्द्रोदय होगा अर्थात् चन्द्रमाके उदय होनेसे एक मिनट पहले ही मोक्ष हो जायेगा, अतः दिल्लीमें बिल्कुल ग्रहण नहीं है, चन्द्रमा शुद्ध उदय होगा। दिल्लीसे पूर्वमें ज्यों-ज्यों आगे बढ़ेंगे त्यों-त्यों ग्वालियर, लखनऊ, पटना गया, अयोध्या, वाराणसी, प्रयाग, जब्बलपुर, कलकत्ता, रांची, नागपुर, आकोला, रायपुर, कटक, जगन्नाथपुरी, हैदराबाद, बीजापुर, मद्रास, बैंगलौर, मैसूर, रामेश्वर, त्रिवेन्द्रम्, लंका, नेपाल, भूतान आदि में अधिकाधिक ग्रहण दिखाई देगा। भारतीय स्टेण्डर्ड टाइमके अनुसार इस ग्रहणका स्पर्शादिकाल निम्न है—

	घं० मि०
स्पर्श	३—५ दिन में
सम्मीलन	४—८ ,,
ग्रहण मध्य	४—५१ ,,
उन्मीलन	५—३५सायंकाल
मोक्ष	६—३७ ,,



सम्पूर्ण ग्रहण (पर्व काल) ३ घण्टे ३२ मिनटका है। सोमवार होनेसे चूड़ामणि चन्द्रग्रहण बन गया है। चन्द्रग्रहणमें गंगा स्नान विशेषकर वाराणसी (काशी) का विशेष महात्म्य है, अतः ऊपर ग्रहण चित्र (ग्रासमान) वाराणसीमें सायंकाल ६-१२ पर चन्द्रोदयके समयका दिया गया है। वाराणसीमें पर्व काल (ग्रहणका समय) चन्द्रोदयसे मोक्ष तक कुल २५ मिनट है।

मसूरी, नैनीताल, हरिद्वार, मथुरा, आगरा, भरतपुर, भोपाल और आकोलामें चन्द्रोदयके २ तीन मिनट बाद ग्रहण मोक्ष हो जायेगा। अत: पूर्वी क्षितिज पर चन्द्रमाके उदय होते ही दूरवीक्षण यंत्रसे ग्रहण दीख सकेगा। नेत्रोंसे कोई तीव्र दृष्टिवाले ही स्वल्पग्रास सूक्ष्म रूपमें देख सकेंगे। अंगुलाल्प ग्रास होनेसे उक्त नगरोंमें भी ग्रहण पर्वकाल माननेकी आवश्यकता नहीं है।

भारतके अति पूर्वी सीमा प्रदेश डिब्रूगढ़, चटगांव, इम्फाल और ब्रह्मदेश, मलय, सिंगापुर, चीन, जापान, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्डमें यह चन्द्रग्रहण खग्रास (पूर्णग्रास) दिखाई देगा। इस ग्रहणका विशेष फल पहले दैवज्ञकी दृष्टिमें पृष्ठ ४२ पर दिया गया है।